ॐ श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



15 फरवरी 2002

वर्ष 22 अंक 4

प्रेम प्रकाश संदेश



संस्थापक : सदगुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

परम श्रद्धेय संत शिरोमणि वीतराग संत स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का

101 वाँ जन्मोत्सव

9 मार्च शनिवार से 13 मार्च बुधवार 2002 तक

बिन कारण हित चहत जे दाता दीन दयाल।
वन्दन ऐसे सन्त को निरखत करे निहाल।।

सन्त हरी गुरुदेव बिन किसका हो न उद्धार।
कहे टेऊँ इस बात को कहते वेद पुकार।।

सर्व धर्म प्रेमी महानुभाव सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्म सम्राट आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सन्त मण्डली के वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध त्यागी तपस्वी पूर्ण वैरागी पूजनीय स्वामी श्री गणेशानन्द जी महाराज का 101वॉ जन्मोत्सव दिनांक 9 मार्च शनिवार से 13 मार्च बुधवार 2002 तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता एवं सर्व सन्त मण्डल की उपस्थिति में श्रद्धा भाव युक्त मनाया जावेगा, इस अवसर पर गुणीजन विद्वान कलाकार भी पधार रहे हैं, आप परिवार व इष्ट मित्रों सहित पधारकर ज्ञान अमृत का पान कर अपने मानव जीवन का कल्याण करें।

कार्यक्रम

...िवार, 9 मार्च	प्रातः 5 बजे संकीर्तन प्रभात फेरी आश्रम से निकाली जावेगी, तत्पश्चात् सत्संग होकर श्री मद्भगवत् गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहब का पाठ आरम्भ होगा, सांय 5 बजे से 7.30 बजे तक सत्संग होगा।
..., 10 मार्च	प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक सत्संग होकर सामूहिक जनेऊ (यज्ञोपवीत) संस्कार कार्यक्रम होगा। सायं 5 बजे से 7.30 बजे तक सत्संग होगा।
...11 मार्च	प्रातः 8 से 10 बजे तक व सायं 5 से 7.30 बजे तक सत्संग होगा।
...वार, 12 मार्च	प्रातः 6 से 10 बजे तक हवन, ध्वजा वन्दन व सत्संग होगा सायंकाल 5 से 7.30 बजे तक सत्संग होगा।
...धवार, 13 मार्च	प्रातः 8 से 10.30 बजे तक सत्संग, पाठों का भोग तत्पश्चात् आम भण्डारा होगा, सायं 5 से 7.30 बजे तक सत्संग होकर सतगुरू महाराज सन्त मण्डली समेत पल्लव पाकर उत्सव का समापन करेंगे।

आयोजन स्थल :

...वामी टेऊँराम महाराज, प्रेमप्रकाश आश्रम

... महारूद्र मण्डल स्कूल के पीछे, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.) फोन : 0751-426111

धारावाहिक–31

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

राग रामकली भजन–17

किसका कर न गुमाना रे, मन किसका कर ना गुमाना रे।

अंतकाल में इस तन को जब, छोड़ चलेगा प्राना रे।
तब ही यह तन चिक्षा ऊपर, जल जावत शमशाना रे।।1।।

धन दौलत भी थिर न रहत है,नहिं थिर महल मकाना रे।
मात पिता सुत दारा को तज, तोहि अकेला जाना रे।।2।।

जगत मुसाफिर खाने में,तुम दो दिन का महिमाना रे।
आखिर इसको छोड़ चलेंगे, तेरा यह न ठिकाना रे।।3।।

रावण कौरव हरनाकस का, रहा न नाम निशाना रे।
कहे टेऊँ तुम ताँते हरि जप, जाते हो कल्याना रे।।4।।

व्याख्या–श्री गुरु महाराज जी कह रहे हैं। हे जीव गुमान किस बात का। अफसोस किसलिये। मैं महल नहीं बना पाया। मैंने धन के भण्डार नहीं भर पाये। मेरा यह सपना था। मैं ऐसा करके दिखा दूंगा।

"किसका कर ना गुमाना रे, मन किसका कर न गुमाना रे" ये मानव मन बड़ी कल्पनायें संजोये रहता है। बड़ी ऊँची उड़ान आशाओं की। इन छोटी–छोटी आँखों में बड़े–बड़े सपने भर लेते हैं। लेकिन उसकी सारी दौड़ धूप क्षुद्र को पाने की होती है। जीवन ने अज्ञान वश आशाओं के धागे असत्य से जोड़े हैं, जिन आँखों से संसार की व्यर्थता का दर्शन सुलभ हो सकता है। उन्हीं आँखों को सपनीले रंगों से भर दिया है। उन्हीं रंगों ने सत्य नहीं दिखने दिया। संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य इस दौड़ में अन्धाधुन्ध भाग रहे हैं सभी, दूसरों को भागते में गिरते भी देखते हैं। हारते भी देखते हैं। टूटते भी देखते हैं। क्योंकि उम्र का एक ऐसा पड़ाव आता हैं जब समझ में आता है। व्यर्थ ही दौड़े कुछ हाथ नहीं लगा। लेकिन तब तक बाजी हाथ से जा चुकी होती हैं जीवन की रेत उम्र की रेल हाथ से सरक चुकी होती है। परन्तु हमें लगता हैं दूसरे भले हारते हों। दूसरे भले टूटते हों, गिरते हों। पर मैं पा लूँगा। हर जीव यही सोचता है मेरा दौड़ना सार्थक होगा। लेकिन रेत में कभी फूल नहीं खिलते, सूरज से कभी वरखा नहीं आती। नीम में कभी आम नहीं लगते, असंभव है। असत्य के तेल से सत्य का दिया कभी नहीं जलता। मृत्यु एक झटके में सब मिट्टी कर देती है सारी आशाओं को सपनों को हमारी सारी दौड़ को मृत्यु व्यर्थ कर देती है। श्री गुरु महाराज जी उसी मृत्यु के सत्य से परिचित करा रहे हैं।

अफसोस का कोई कारण नहीं, गुमान मत करो। अहंकार मत करो। इस दौड़ को व्यर्थ की दौड़ को छोड़ो। इन सपनों से जागो। इन आशाओं के टूटने का क्या गुमान। वैसे ही टूटती। वैसे ही बहुत गंवाया। अब न गंवाओ अचल हो जाओ। मन के दौड़ के साथी नहीं मन के साक्षी हो जाओ। मन के पीछे जाने वालों की दौड़ का अंत शमशान लें जाता है। तन खाक हो जाता है राख हो जाता हैं उस राख के मूल्य से लकड़ी की राख का मूल्य अधिक है। लकड़ी की राख से बर्तन मांजे जा सकते हैं हमारे तन की राख निरर्थक हैं माता पिता पुत्र स्त्री सबको तजकर अकेले ही सफर करना है। हे मन अब भी समझ ले। जान ले मान ले। यहाँ कोई तेरा नहीं है।

रे मन मेरे मान ले, हरि बिन तेरा को नहीं।
पुस्तक पढ़कर जान ले, हरि बिन तेरा को नहीं।।

इस मन को इतना कह देने भर से, गा लेने भर से समझ नहीं आयेगा। जिन इन्द्रियों का संग लेकर यह इतना भटकता हैं उन्हीं इन्द्रियों द्वारा ले जाये इस मन को जीते जी शमशान, जहाँ खुलती है जीवन की हकीकत, लेकिन हमारी सारी कोशिश इस हकीकत को भुलाने की है। सो ले जाते हैं मन को

पोसने के लिये और राजा बनाने के लिये, होटल, सिनेमा, मेला, और मन के संस्कार पक्के हो जाते हैं। थोड़े और गुलाम हो जाते हैं। हमारा मन एक चारों तरफ माया जाल फैलाकर रखता है। हमारी इन्द्रियाँ इस जाल में मच्छरों की तरह फंसी हुई हैं। मन रूपी मकड़ी का विरोध करने का सामर्थ्य खो बैठी हैं। मन की कोई ताकत नहीं हमारी दुर्बलता ही उसकी ताकत है श्री गुरु महाराज उसी ताकत को जगा रहे हैं। रावण कौरव, हरनाकस भी बहुत भागे, बड़े बली थे। बड़े समर्थ थे। लेकिन इतने सारे बल ने, इतनी सामर्थ्य भी नहीं दी कि कभी सरलता से आनंदमयी हंसी भी हंस पाये हों। अहंकार की हुंकार इतनी बढ़ी कि हंसी ही खो गयी। इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा। इन्सान धन का सम्राट तो हो जाये। पर अपना निज स्वभाव विस्मरण कर दे। अपना निजानंद गुमा दे। भुला दे। इन महाअहंकारियों का आज नाम निशान ही नहीं है। इनकी दौड़ भी व्यर्थ हो गयी, तो हमारी तो औकात ही क्या है।

"कहे टेऊँ तुम तांते हरि जप, ज[illegible] हो कल्याणा रे।"

श्री गुरु महाराज जी कहते हैं। दौड़ का रूख बदल दो। बाहर की जगह अंदर की तरफ दौड़ना है। और उसकी सीढ़ी है। जाप, हरि सुमरन, गुरु मंत्र जो सारी ऊर्जा को अंदर की तरफ मोड़ देता है। वही है। आसान, सरल भरोसेमंद तरीका, श्रद्धा से, विश्वास से जाप करने से, स्वांसों को पहचानने से, होश जागरूकता रखने से संभव है। उस दौड़ को सही मंजिल मिले दौड़ सार्थक हो।

मंत्र जाप, सुमरन करना, कोई साधारण बात नहीं है। इस ऊपर से साधारण दिखने वाले साधन में असाधारण कमाल छिपा है। जो सुनने जैसा नहीं करने जैसा है। जाप करने वाले का हृदय संवेदनशील हो जाता है। कारूणिक हो जाताहै। आंखें अमीमय, हृदय प्रेममय, वाणी में प्रफुल्लता आ जाती है। एक रस जग जाता है। वही रास्ता दिखाता है। अंदर ले जाने का डूबने का, जो डुबकी लगाते हैं। वही मोती पाते है प्रज्ञावान हो जाते हैं। जिनकी प्रज्ञा परिपक्व हो जाती है। वे कर पाते हैं। सही निर्णय उन्हीं की दौड़ ले जाती है। बेगमपुर, बेगमपुर जहाँ गम नहीं। वही पहुंचते हैं अशोकनगर, अशोकनगर–जहाँ कोई शोक नहीं। उन्हीं के व्यक्तित्व से फूट पड़ती है, आत्मा की किरणें। उन्हीं की आंखों से छलकती है चन्द्रमा की शीतलता, उन्हीं की खामोशी उन्हीं का मौन गीत बन जाता है उनके शब्द बांसुरी की तान बनकर बस जाते हैं मन के अंदर, वही मृत्यु में से भी अमृत खोज लेते हैं। लेकिन करने से ही यह संभव है।

बहुत किया है ना करने जैसा अब तो कर ले मन करनेजैसा
बहुत भरा है कचरा मन में ना भरने जैसा,
अब तो भर ले सुमरन मन में अमृत जैसा।
यही गुरु महाराज की आशा है। हमारे लिये
संदेश है पैगाम है–इस भजन का।

कथा शिखर ध्वज चूड़ाला धारावाहिक-20

आत्म विश्लेषण अंतर्मन की सीढ़ी

(रचयिता-आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज)

आज के प्रसंग में मुनि वशिष्ठ जी कहते हैं हे राम जी, सत्गुरु महाराज जी कहते हैं हे गुरुमुखों, मुमुक्षुओं

संतों की शरण में जब यह जीव पहुंच जाता है तो समझो उसका कल्याण होने में कोई संशय नहीं। पर जब तक हमारी स्वयं की तीव्र उत्कंठा नहीं होगी, तब तक संतों की शरण से, संतों के संग से पूरा लाभ नहीं उठा सकते। संतों का संग कभी व्यर्थ नहीं जाता, परन्तु उसका पूरा लाभ तो तभी मिल सकता हे जब अपने अंदर कल्याण की इच्छा हो।

राजा-रानी के मन में भी मोक्ष की इच्छा थी और इसी इच्छा से वो संतों की शरण में पहुंचे और एक ऐसे मुनि से भेंट हुई उनकी जो पूर्ण आत्मज्ञानी महापुरुष था। इस महापुरुष के पास पहुंचकर उन्होंने क्या किया ?

तां शरने शीश निवाय लिया, तन मन धन भेंट चढ़ाय लिया।
सुन सत्गुरु यह अर्दासा जी, सब संशय करिए नाशा जी।।

आकर के संत की शरण में उनके चरणों में शीश रखकर, अपना सर्वस्व समर्पित करके प्रार्थना करने लगे कि महाराज हमारी यह अरदास सुनिये हमारे संशय दूर कीजिए। अपने प्रत्येक संशय को खोलकर गुरु के सम्मुख प्रकट कर देता है। गुरु राजा से प्रश्न करते हुए कहते हैं कि अपने संशय क्रमवार सुनाओ। राजा शिखरध्वज कहता है-

करूणा कर बतलाइए, शरण पड़ा मैं तोहि।
आया हूँ किस निमित्त जग, क्या करना है मोहि।
मैं हूँ कौन, कहाँ से आया, किसने मुझे बनाया है।
कौन देश में जाना है फिर, किसने खेल रचाया है।।
कौन जन्मता कौन सुमरता, कौन चुरासी पावत है।
काल किसी कोकहते जोई, तीन लोक को खावत है।।
जीव ईश मन ब्रह्म क्या है, जग का कौन अकारा है।
मैं मूर्ख ये जानत नाहीं, ना कुछ मोहि विचारा है।।

असली संशय, असली अज्ञान, असली अंदर की बात राजा कहते हैं। **'करूणा कर बतलाईये, शरण पड़ा हूं तोहे।'**

महापुरुषों की शरण में जब कोई व्यक्ति आ जाता है तो उस व्यक्ति को संत-महापुरुष अपने संग से लाभान्वित कर उसका कल्याण कर देते हैं।

शरण पड़यो छाड़यो नहीं, बड़ी बड़न की ओट।
ज्यूं पहिलाज गिरि ते गिरयो, गिरत न लागी चोट।।

संतों की शरण में जो भी आ जाता है, संत उसे संभाल लेते हैं। बड़ा माहात्मय है संतों की शरण का।

निर्बल के बल राम

संत की शरण की महिमा सारे लोग, सारे शास्त्र, सारे वेद, सारे पुराण करते हैं परन्तु सच्चे मन से कोई संत शरण में आए तो ?

हरि मेली है संत जन, हरि से देत मिलाय।
कहे टेऊँ छोड़त नहीं, जो जन शरणी आय।।

जो शरण में आता है उसको छोड़ते नहीं संत परन्तु संत शरण में आना है बहुत कठिन। मुख से कहना तो बड़ा आसान है कि हे प्रभु मैं आपकी शरण में हूँ, परन्तु मन से शरण हो जाना यह बड़ी मुश्किल बात है। तो राजा शिखरध्वज भी संतों की शरण में आकर कहने लगे हे प्रभु मैं आपकी शरण हूँ। याद रखना जब तक शरण नहीं गये, अपने आपको निर्बल नहीं माना तब तक भगवान भी सहायता नहीं करते। सहायता उसी की होती है जो अपने अज्ञान को जान जाता है कि मैं अज्ञानी हूँ। मैं निर्बल हूँ।

निर्बल के बल राम
सुनयो री भेन, निर्बल के बल राम।।

निर्बल के भगवान होते हैं जो स्वयं भगवान बन जाए उसका भगवान भी नहीं। भगवान भी

कहता है कि जब आपको अपना ही बल है तो अपने आप करो। जब तक अपना बल है तब तक भगवान भी नहीं आते। जैसे छोटा बच्चा है जब उसको बल नहीं होता, जब तक वो माता की शरण में है तब तक माता उसकी पूरी देखभाल करती है। जैसे ही बड़ा होता है और कहता है कि मैं सब जानता हूँ मुझे तो सब पता है, आप छोड़ दो तो माता उसको छोड़ देती है। कहती है करो सब काम अपने आप। अर्थात् जब व्यक्ति निर्बल बनता है तभी परमात्मा उसकी सहायता करते हैं। कहते हैं

जब लग गज बल अपना धरियो, नेक सरियो नाकाम।
निर्बल हो बलराम पुकारियो, आये आधे नाम।।

अपने आपको बलवान जब तक गज ने बलवान माना तब तक भगवान नहीं आए। शास्त्र बताते हैं कि दस हजार बरस तक गज और ग्राह का युद्ध चला है, इतना लंबा युद्ध। शास्त्रों का कथन है ऐसा। पहले गज परिवार वालों के बल पर इतरा रहा था। बाद में गज ने देखा कि सब भाग गये।

प्रीतम जान लेहो मन मांही।
अपने सुख सों सब जग बांध्यो को काहू को नाहीं।।

जब परिवार के लोगों ने देखा कि हम सब भी इसके साथ डूब रहे हैं तो सब निकल कर भागे। उनको भागते देखकर गजराज ने कहा कि मेरे अंदर भी बहुत बल है। परन्तु जैसा स्थान होता है वैसा–वैसा उस जीव का बल चलता है। पानी के अंदर पानी के जीव का बल चलता है और जो थल पर रहता है उसका थल पर ही ज्यादा बल चलता है। अब हाथी था थल पर रहने वाला जीव और ग्राह पानी में रहने वाला। तो हाथी का बल तो चल नहीं पा रहा था, पर ग्राह का बल तेजी से चल रहा था। और युद्ध करते–करते जब देखा हाथी ने, कि बस अब डूबने वाला हूं अब बचूंगा नहीं तो निर्बल होकर परमात्मा को पुकारा और परमात्मा आए।

निज उत्कंठा ही श्रेय है

जब तक कोई शरण में नहीं आता संत की तब तक संत भी उसे शिक्षा नहीं देते। महापुरुष कहते हैं–उसको शिक्षा नहीं देनी चाहिए जो स्वयं की इच्छा से न आए।

"जो स्वइच्छा से जन आवे। तांको आदि शब्द सुनावे।।"

ब्रह्मदर्शनी में गुरु महाराज जी बताते हैं जो अपनी इच्छा धारण करके गुरु के पास चलकर आता है गुरु महाराज मुझे ये बात बताओ मैं कौन हूँ ? मैं कहां से आया हूँ ? स्वइच्छा से जिसके अंदर में उसी को उपदेश करते हैं संत–महात्मा। जिसके अंदर श्रद्धा विश्वास नहीं उसको उपदेश नहीं करते।

सत्गुरु महाराज जी का भी वचन है कि श्रद्धा और विश्वास वाले को उपदेश करना और किसी को नहीं।

भगवान ने भी गीता में अर्जुन से कहा श्रद्धा और विश्वास वाले को ही उपदेश करना और भगवान श्री कृष्णचन्द्र आनंद मुकुन्द ने तब तक उपदेश नहीं किया जब तक अर्जुन ने शिष्यत्व स्वीकार नहीं किया।

पहले अध्याय में भी भगवान का कोई उपदेश नहीं दूसरे अध्याय के सातवें श्लोक में भगवान कृष्ण से अर्जुन कहते हैं :

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढ़चेता।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधिमां त्वां प्रपन्नम्।।

अर्जुन कहते हैं हे भगवान कायरता दोष से मेरा स्वभाव छुप गया है। मेरे आगे आवरण का पर्दा आ गया है, अज्ञान का पर्दा आ गया है मैं जानता ही नहीं।

पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढ़चेता।

मैं भ्रमित हुआ आपसे धर्म का मार्ग पूछता हूँ। धर्म के बारे में मूढ़ हो गया हूँ, सम्मोहित हो गया हूँ। पता ही नहीं चल रहा है मेरे को कि क्या बात सही है ? क्या बात गलत है ? भगवान तब भी कुछ नहीं बोलते। तब अर्जुन कहने लगे।

"यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे"

जो मेरा श्रेय का रास्ता है उस रास्ते को बताओ। कौन सा रास्ता है वो ? आप निश्चय करके मेरे लिए जो कल्याणकारी मार्ग है उसको बताओ।

तो भी भगवान नहीं बोले आखिर में अर्जुन कहते हैं, **'शिष्यस्तेऽहं'** हे प्रभु मैं आपका शिष्य हूँ। **'शांधि मां'** मुझे शिक्षा दो कि कौन सा रास्ता मेरे लिये सही है। **'त्वां प्रपन्नम्'** मैं आपकी शरण में हूँ।

तब जाकर के भगवान ने गीता का उपदेश दिया है। अर्जुन को।

खोज जगत में आया क्यों रे

राजा शिखरध्वज भी संतों की शरण में आया है संत महात्मा तो कृपालु हैं जो शरण में आ जाते हैं कृपा करके उनके संशय दूर कर देते हैं। तो राजा ने भी संत शरण में आकर अपना प्रश्न रख दिया कि

'आया हूं किस निमित्त मैं, क्या करना है मोहिं।'

मैं इस जगत में क्यों आया हूँ ? किस कारण से इस जगत में हमारा जन्म हुआ है ?

संत महात्मा बहुत कहते हैं–ये मानुष देह क्यों प्राप्त हुई है। गोविन्द से मिलने के लिये। संत महात्मा बार–बार हमको सचेत करते हैं कि जिस काज के लिए आया है वो काज अभी तक नहीं किया। किस कारण इस जगत में आना हुआ है ?

ईश्वर विमुख लोग कहते हैं कि खाना, पीना, पहनना यही इस जगत का सार है।

यावद् जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं ऋत्वा घृतम् पीवेत्।

जब तक जीओ सुख से जीओ और उधार लेकर खाओ पीओ। जो खा गया सो चा गया। जो छोड़ गया सो बोड़ गया। ऐसा भी कहने वाले हैं। अब विचार होता है कि किस हेतु इस जगत में आए हैं ?

संत महात्मा कहते हैं कि ये बात सही नहीं है। परमात्मा ने आपको विशेष कार्य के लिए भेजा है। आपका मनुष्य जन्म

चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज।
कहे टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज।।

चौरासी लाख योनियों का सिरताज है। परन्तु किसके लिये परमात्मा के भजन के लिये ?

'राम भजन की है यह वारी, रे मन मेरा करो होशियारी'

वे संत–महात्मा हमें बताते हैं हमारे को। पर हमको अभी पता नहीं चलता क्योंकि हमने जाना ही नहीं कि मैं कौन हूँ और क्यों आया हूँ ?

अपने कर्म का पता ही नहीं, कि किस कारण से जगत में और क्या करना चाहिए। ये बात ही भूल गये।

तुलसी वो दिन याद करे, जब तले था शीश।
अब तो माया मोहिया, भूल गया जगदीश।।

जगत में आने का कारण ही भूल गये, विचार होता ही नहीं। और जब व्यक्ति के अंदर में ये विचार हो जाता है तो उसका कल्याण में देर नहीं।

मैं कौन हूँ ?

राजा के मन में भी ये विचार उत्पन्न हो गया और संतों से पूछने लगा कि मैं कौन हूँ कहाँ से आया, कौन देश मुझे जाना है।

हे प्रभु मेरे को पता नहीं चलता कि मेरा कार्य क्या है ? जैसे अर्जुन कहते हैं कि मेरे को पता ही नहीं चलता कि मेरा श्रेय रास्ता क्या है ? ऐसे ही राजा कहते हैं कि मेरे को पता ही नहीं चलता कि किस कारण से मैं इस जगत में आया हूँ ? और यह पता तब चलता है जब ये पता चले कि मैं कौन हूँ ? जब स्वयं को जानेंगे तभी तो ये जान पायेंगे कि हमें करना क्या है ?

जैसे किसी आदमी को कोई पद दिया जाऐ और उसे अपने नाम अपने पद की अगर जानकारी ही न हो तो वो करेगा क्या अपनी जवाबदारी कैसे निभायेगा ? समझें जैसे कोई इंस्पेक्टर है। कोई दुकानदार है या कोई नौकरी पर है तो जब उसको अपने पद की जानकारी नहीं तो वो अपने कर्तव्य को कैसे जान पायेगा ? इसी प्रकार जब मनुष्य को ये पता चलेगा कि मैं कौन हूँ तो उसको लक्ष्य निर्धारण करना सरल हो जायेगा। जब तक ये जीव अपने को पांञ्भौतिक शरीर मानता है, जब तक सांसारिक मानता है तो संसार को ही लक्ष्य बना देते हैं कि मुझे धनवान बनना है, मुझे उच्च पद पर पहुंचना है।

और सारा जीवन उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दौड़–धूप करते रहते हैं। परन्तु अगर ये पता चल

जाए कि मैं पांञ्भौतिक शरीर नहीं मैं तो अजर–अमर अविनाशी हूँ मैं इस संसार से न्यारा हूँ मेरे को इस बात को छोड़ना है, मुझे इसमें आसक्ति नहीं रखनी हैं।

राजा शिखरध्वज भी पूछता है–गुरु महाराज मुझे बताइये कि मैं कौन हूँ ? सबसे बड़ी में बड़ी बात है धर्म की–कि मैं कौन हूँ ? जब व्यक्ति बस इसी बात के पीछे पड़ जाता है तो बस आनंद हो जायेगा।

कोऽहम् ?

मैं कौन हूँ ? इस बात को खोज लें जब तक इस बात को नहीं खोजा तो सारी जो खोज है, सारी जो दौड़–धूप लगा रखी है वो व्यर्थ चली जाऐगी।

दौड़ सके तो दौड़ ले, जब लग तेरी दौड़।
दौड़ थक्या धोखा मिटा, वस्तु ठौर की ठौर।।

दौड़ धूप जो हमने लगा रखी है वो तभी शांत हो सकती है जब इसी बात के पीछे पड़ जायेंगे कि मैं कौन हूँ ? इस बात को अपने आप में ढूंढो। बंधे बंधाए उत्तरों से, सुनी सुनाई बातों से कह तो देंगे कि मैं परमात्मा हूँ। अहं ब्रह्मास्मि। तो वो बात केवल मुख से निकलेगी। अंदर से नहीं निकलती वो बात। और ये बात अगर हार्दिक नहीं है तो फिर वो बात किसी मूल्य की नहीं है। अर्थात् कहने मात्र की नहीं, अनुभव की है वो बात। ढूंढे कि संत महात्मा अगर कहते हैं कि तू आत्मा है तो आत्मा को ढूंढो तो सही। कौन हूँ मैं ? मैं आत्मा कैसे हूँ ? विचार करना कि मैं कौन हूँ ? इस बात को ढूंढना ही सब कुछ है. परन्तु हम संत महात्माओं के मुख से सुन चुके हैं कि मैं आत्मा हूँ। तो फिर मैं आत्मा कैसे हूँ ? इस बात को ढूंढें। आत्मा कैसे हूँ ? आत्मा हूँ तो आत्मा में स्थिति है या नहीं। जब इन बातों का विचार करेंगे तब जाकर कहीं अपने लक्ष्य का निर्धारण होगा। फिर सारी बातें उसी के साथ जुड़ी हुई हैं। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं व भगवान वशिष्ठ भगवान राम को कहते हैं–हे रामजी

जब कोई वस्तु देखते हैं तो प्रश्न उठते हैं कि वस्तु आई कैसे ? इसको किसने बनाया ? अनेक प्रश्न उस वस्तु के साथ संबंधित हैं अगर वस्तु ही नहीं तो प्रश्न उठेंगे ही नहीं।

तो मैं कौन हूँ पहले इस बात को खोजें फिर इससे संबंधित सारे प्रश्न कि मैं कहाँ से आया हूँ ? कैसे आया हूँ ? क्या करता हूँ ? स्वतः ही उठेंगे और इन सब का चिंतन होगा और उत्तर मिलते ही परम शांति की प्राप्ति होगी। अंतः अपने आप में स्वयं को ढूंढें। पीछे पड़ जाऐं इस प्रश्न के कि मैं कौन हूँ ? गुरु महाराज की कृपा से उत्तर अवश्य मिलेगा।

............क्रमशः

श्री अमरापुर धाम जयपुर

16 फरवरी रविवार से समय परिवर्तन

श्री अमरापुर स्थान (मन्दिर) की दैनिक समय सारणी

मन्दिर खुलने का समय

सुबह : 6.00 बजे से 12.00 बजे तक

सांय : 3.00 बजे से 8.30 बजे तक

प्रतिदिन सत्संग का समय

सुबह : 7.00 बजे से 8.15 बजे तक

सांय : 4.30 बजे से 6.00 बजे तक

प्रत्येक रविवार

सुबह : 7.00 बजे से 9.30 बजे तक (सत्संग–प्रवचन कैसेट)

सांय : 4.30 बजे से 6.00 बजे तक (भजन संध्या)

आरती का समय

सांय 6.00 बजे से 6.20 बजे तक

प्रत्येक गुरुवार व शनिवार

प्रातः 7 से 8.30 बजे प्रार्थना–सत्संग गुरु प्रार्थनाष्टक

सांय : 4.30 से 6.30 बजे तक भक्ति संध्या, सत्संग, आरती,

सत्नाम साक्षी संकीर्तन एवं समाधि स्थल पर पुष्पों की झांकी

झांकी दर्शन समय

सांय 5 से रात्रि 8.30 बजे तक

नोटः दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक मुख्य द्वार व श्री मन्दिर बन्द रहेगा।

स्वामी सर्वानन्द अमृतवाणी

बसन्त पंचमी
१७ फरवरी विशेष

प्रवचन –शुभ स्थलः
श्री अमरापुर स्थान,
जयपुर

बसन्त ऋतु रंगवारी रे

सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

हंसा कहां से आया रे, बोलता कहां समाया रे
उसका भेद बताओ रे................।।
शेष, महेश, गणेश न होता,
नहीं ब्रह्मा नहीं पानी।
हंसा कहां से आया रे, ...।।

बसन्त ऋतु में जिज्ञासुओं को प्रातःकाल शीघ्र उठकर गुरुमंत्र का अभ्यास करना चाहिये जिससे परमात्मा में मन शीघ्रता से लगता है एवं सुख शान्ति की अनुभूति होती है।

प्रेम से बोलो हरे राम! ये भजन बड़ा है यही रख देते हैं। ये हंसा बोलता है, ये कहाँ से आया है। माता के गर्भ में कैसे आया फिर शरीर की समाप्ति होती है तो ये कहां से आया? कोई कहता है देवता भगवान है, कोई कहता है, बुद्धि भगवान है। ये खिड़कवादियों का बड़ा मत है वो कहता है बुद्धि भगवान है क्यों ? व्यवहार का ज्ञान, पुरुषार्थ का ज्ञान, बुद्धि के अधीन है। प्रेम से बोलो हरे राम। इसलिए बुद्धि भगवान है। कोई कैसा कहता है और कोई कैसा कहता है। हे नचिकेता

ताको सुनकर जीव अज्ञानी, संसे मन में धरते हैं।

इसलिये ये सुनकर अज्ञानी जीवों को यह संशय हो जाता है कि भगवान कौन है।

इस कारण से पूरे गुर बिन, भेद भ्रम नहीं जाता है।

पूरण सत्‌गुरु नाम किसका है। ब्रह्मनेष्ठी–ब्रह्मश्रोत्री दोनों से युक्त, उसी के बिगर संशय नहीं जायेंगे, भली भांति से चित में निश्चय आत्मज्ञान न जाता है। भली भांति से आत्मा का ज्ञान नहीं होगा। प्रेम से बोलो हरे राम। आत्मज्ञान के बिगर ये जीव सदैव दुःखी रहता है। जब आत्मा का साक्षात्कार होगा। तब ऐसे फलीभूत होगा जैसे इसी बसन्त ऋतु में वनस्पती फलीभूत रहती है। सुगन्धी हो जाती है। ऐसे ही आत्मज्ञान भी एक बसन्त है। रात को बसन्त का सत्संग सुनाया था। बसन्त का सत्संग बहुत अच्छा है। जो आप धीरे–धीरे सुनते रहना।

बसन्त एक सत्संग भी है। और बसन्त एक आत्माराम भी है। आत्माराम का जब पूरन ज्ञान होगा, तभी जैसे वनस्पति फुलवारी फूल जाती है, वैसे ही सारी इन्द्रियां फूल जायेंगी। प्रेम से बोलो हरे राम! इसमें देवी सम्पदा की सुगन्धि पैदा होगी। इसी ऋतु में बाहर से क्या होता है :–

भजनः **सूखे तरू भये पत्र अपारे, वन वन फूला बाग–बहारे।**
फूल रही फुलवारी रे...........
ऋतु–ऋतु में है रंग साहब का बसन्त ऋतु रंगवारी रे,
रंगवारी रे।

दोहाः **1. बसन्त ऋतु को देखके, जो भवरा भये मस्तान।**
कह टेऊँ सब त्याग के, सो खोजत गुल अस्तान।।
2. आई ऋतु बसन्त की रे प्यारे मेरे मन आनन्द।
नानक साहब मन बसे, की सगली ऋतु बसन्त।।
3. आई ऋतु बसन्त की रे, भंवरा भये मस्तान।
तन–मन की सुध भूलके, देत ताहि प्राण।।

प्रेम से बोलो हरे राम। इसी बसन्त ऋतु में क्या होता है। 'सूखे तरू भये पत्र अपारे'। जिस वृक्ष में थोड़ा जीव होगा, वह भी पत्ते फूल फल खिल जायेंगे। सारी वनस्पति फुलवारी हो जायेगी। बोलो हरे राम। फुलवारी चमन, बगीचा गुलजार हो जायेगा।

दोहाः **आई ऋतु बसन्त की रे, चमन खिड़ी गुलजार।**
स्वामी चिमन में है, सब मंवरे करत गुंजार।।

प्रेम से बोलो हरे राम। 'ऋतु में रंग साहब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे' गुरु महाराज कहते हैं पांच

ऋतुओं में भी रंग अच्छा है किन्तु बसन्त ऋतु बहुत अच्छी है। बसन्त ऋतु के समान कोई ऋतु नहीं है। एक दिन पांच ऋतुऐं इकट्ठी होकर बसन्त ऋतु के पास आकर पूछने लगीं। क्या कहने लगीं ?

प्र. **ऋतुऐं यों मिलक पूछयां रे, कौन बसन्त तेरो नाम।**
कहां लोक सु आयों, कहां तेरो विश्राम।।

ऋतुऐं कहने लगीं हे बसन्त! आप कहाँ से आये। ऋतुराज बसन्त कहां है। आप कहां से आये हो मेरे को लज्जा आती है। आप कहां से आयी हो। आपका नाम किसने रखा। कहां रहते हो। ये सुनाओ खोल के

उ. **ताते बसन्त बोलिया, सुन ऋतु हमरो नाम।**
स्वर्ग लोक से आयो, संत मिले विश्राम।।
ज्यों–ज्यों गावन संत जन, त्यों–त्यों हमरो नाम।।

बसन्त ऋतु कहने लगी। हे ऋतुओं सुनो। मैं स्वर्ग लोक से आया हूं। संतों में रहता हूं, महात्माओं में रहता हूं, विवेकी पुरुष में रहता हूं। बसन्त नाम मेरा संतों ने रखा। प्रेम से बोलो हरे राम। संत बसन्त गाते हैं तो मेरा नाम कीर्ति यश मशहूर हो गया। ये एक दृष्टान्त है। प्रेम से बोलो हरे राम। **इसका सिद्धान्त क्या है ? बसन्त ऋतु एक सत्संग और दूसरा आत्माराम तीसरा बसन्त वैराग है। वैराग बसन्त है। वैराग में सुगन्धि है। क्यों सुगन्धि है। क्यों वैराग जैसे बसन्त दुर्गन्ध को दबा देता है, नास कर देता है, तैसे वैराग, संसार के भोग, विषयों के पदार्थ, पाप कर्मों को नास कर देता है।** प्रेम से बोलो हरे राम। वैराग बसन्त है। जभी बसन्त होगा, तभी पांच ऋतु कौनसी शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ये पांच विषय लज्जा रूपी होती है। ये पांच ऋतुयें कहती हैं हे वैराग कि आप कहां से आये हैं। जो हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता है प्रेम से बोलो हरे राम। उसको भोगविषय पदार्थ मीठा नहीं लगेगा, क्योंकि वह त्याग करेगा। कहने लगे वैराग, आप कहां से आये हो। वैराग कहने लगे कि मैं स्वर्ग लोक से आये हैं सुख से वैराग होवे ये भी प्रेमियों को सुनाया है। कि नौ प्रकार का वैराग 1. पर वैराग 2. अपर वैराग 3. एक इन्द्रिय वैराग 4. वशीकरण वैराग 5. यतमान वैराग, 6. विप्रेत वैराग 7. तीव्र वैराग 8. मद वैराग 9. निबर वैराग। ये नौ प्रकार का वैराग। फिर समेट कर संतों ने रखा, तीन प्रकार का वैराग। उत्तम मध्यम–कनिष्ठ वैराग।

बसन्त ऋतु में प्रातःकाल 2–3 मील पैदल घूमना चाहिये, हो सके तो घर से पैदल चलकर कहीं सत्संग स्थल पर जाकर सत्संगामृत का पान करें।

1. कनिष्ठ वैराग्य : नाम किसका है ? संसार के दुःख से वैराग होवे–अनन्त दुख हैं पुत्र का दुःख। धन का, संसार के दुःख से, जो वैराग होवे वह कनिष्ठ है। क्योंकि फिर सुख मिला तो वैराग चला जायेगा। इसलिये कनिष्ठ वैराग है।

2. मध्यम वैराग्य : मरने के डर से होता है जैसे–राजा परीक्षित को हुआ।

3. उत्तम वैराग्य : सर्वसुखी हो, दुनियां का कोई भी दुख न हो। और वैराग लगे प्रभू का, जैसे गोपीचन्द को लगा आदि जगत गुरु शंकराचार्य, गुरुनानक साहब, कबीरदास, सत्गुरु टेऊंराम् महाराज को हुआ तथा वलीराम को लगा। वलीराम की कथा कल छोड़ी है, कहां छोड़ी है। संत के पास जंगल में आया राज्य छोड़कर वलीराम को वैराग हुआ छोड़ के वजीरी एक राजा वलीराम था जब वैराग हुआ तब सभी घर बार छोड़कर जंगल में एक महात्मा के पास आये हैं। याद रखना ये कथा यहां रखी है। वैराग एक बसन्त है। वैराग में सुगन्ध है। सत्गुरु महाराज का इस दास ने वैराग देखा ये नजारा उस वैराग का है जो आप देख रहे हैं गुरु महाराज कहते हैं।

भजन :

बसन्त ऋतु का देख निजारा, रिल मिल भंवरे करत गुन्जारां सुगन्ध ले सुखकारी रे................

ऋतु ऋतु में है रंग साहब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे रंगवारी रे।

प्रेम से बोलो हरे राम! 'ऋतु–2 में रंग साहेब का'। सिद्धान्त में पांच ऋतु कौन ? शब्द, स्पर्श रूप, रस, गंध। इसी में भी प्रभु का रंग है। प्रेम से बोलो हरे राम! कितने ही शब्द पर मस्त है। ये भी प्रभु का रंग है अनन्त जीव देखो घर–घर में रेडियो रखे हैं। ये शब्द पर मस्त हैं। कितने ही स्पर्श में मस्त हैं, विषय–भोगों पर मस्त हैं। कितने रूप पर मस्त हैं जिसको दुःख चाहिये, वो अभी सिनेमा में जावे। सिनेमा में नहीं जाना इसका परिणाम दुःख निकलेगा, फिर आप रोयेंगे। ये रजोगुण दुःख की जड़ है। सतोगुण सत् की जड़ है। रजोगुण को हटाओ फैशन को हटाओ। आप जानते हो इसे आप करो। इसी रूप पर मस्त हैं, कितने रस पर मस्त हैं, मछली, मांस, शराब, रात–दिन खाने–पीने पर मस्त हैं। चाय भी तीन चार वक्त पीते हैं। बोलो हरे राम! अभी चाय को छोड़ दो। अभी ठण्डी का मौसम चला गया। बसन्त ऋतु आयी है। जितने भाई माई बैठे हो, अगर आप शरीर की अच्छी तरह से परहेज करोगे तो आप बारह महीने बीमार नहीं पड़ोगे। अभी प्रेमियों को कहा–हृदय रूपी कागज पर लिखना, याद करना या लिखना। ऐसे सेवन करोगे तो कभी बीमार नहीं पड़ोगे। कर्मो की गति बहुत विलक्षण है। हर एक मनुष्य के तीन ताकत चाहिए, तीन तंदुरूस्ती चाहिए। मनुष्य को शरीर, बुद्धि, दिमाग की ये तीनों तंदुरूस्ती पर बीमार नहीं पड़ेंगें जिसमें है तो वह दुनिया में जी सकताहै। ये तीनों तंदुरूस्ती मांस, मछली के अन्दर नहीं है। पहले शरीर की तंदुरूस्ती चाहिए क्योंकि शरीर बीमार होगा तो क्या होगा, व्यवहार भी नहीं होगा, परमार्थ भी नहीं होगा। शरीर की बुद्धि दिमाग की तंदुरूस्ती चाहिए, तो **पहले शरीर की तंदुरुस्ती के लिए इस बसन्त ऋतु में क्या करो। याद करना। सुबह को दो मील बाहर घूमो। बगीचे में घूमो, कसरत करो। कैसे घूमो। पहले दो फर्लांग दूसरे दिन चार फर्लांग, धीरे धीरे बढ़ाते जाओ। सुबह को घूमो। उसी में तंदुरूस्ती होगी। ज्यादा नहीं तो 1 मील अवश्य घूमना। बसन्त में बहार होती है। ये शरीर हवा, पानी पर निर्भर है।** अगर प्रभु का हुकुम होगा तो हम भी यहां आयेंगे।

बसन्त ऋतु में रात्रि सोते समय खसखस–बादाम–कदू का तेल मिलाकर मस्तिष्क की मालिश कर हल्का कपड़ा बांधकर सोवें। जिससे बुद्धि तेज व विवेक शक्ति बढ़ेगी।

तो आप सुबह को घूमो। कैसे घूमो। एक दिन वृन्दावन की कुछ सखी आपस में मिल गयीं। तो एक सखी कहने लगी। आप मक्खन बेचने कहाँ जाती हो। तब सखी ने हकीकत सुनाई एक सखी वृन्दावन मक्खन बेचने जाती थी, तो वह कहने लगी.....

दोहाः चलो सखी वहां जाईये, जहां बसे ब्रजराज।
मक्खन बेचने हरि मिले, एक पंथ दो काज।।

हे सखी। चलो वृन्दावन में, वहां मक्खन जल्दी बिक जाता है और भगवान का दर्शन भी होता है दोनों काम हो जाता है।

तो हमारा विचार है कि आप सभी यहां घूमने आओ। घूमो भी सत्संग का लाभ भी प्राप्त करो। प्रेम से बोलो हरे राम! तो हमारा भी विचार है कि सुबह को चार बजे उठो। यह नियम बनाओ, पहले दो चार दिन तकलीफ होगी फिर अच्छा हो जायेगा। चार बजे उठके फिर यहां 6 से 7 बजे तक सत्संग मे आओ। सत्संग में वेदान्त योग वशिष्ठ निर्वाण प्रकरण की कथा होगी जिसमें वशिष्ठ महाराज अमृत बांटते हैं। इसलिये **सुबह को यहीं आओ, घूमने से यह बसन्त की हवा आपके शरीर को स्पर्श करेगी और शरीर की बीमारियों को खत्म करेगी। दूसरा इस बसन्त के ढाई महीना अप्रैल की 20 तारीख तक परहेज करना कि खटाई नहीं खाना। रात को रोटी कम खाना अभी भी चाहो कि शरीर की बहुत तन्दुरूस्ती होवे तो उसके लिए एक बादाम की गिरी रात को मिट्टी के बर्तन में भिगो देवो, सुबह को उठके दातुन पानी करके उस बादाम की गिरी का लाल छिलका उतार दो। और वो सफेद गिरी**

बसन्त ऋतु में चाय व खटाई का प्रयोग कम करें।

खालो ऐसे दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन, चौथे दिन चार **ऐसे एक–एक गिरी बढ़ाते जाओ, जब दस गिरी हो जावें तो उसमें मिश्री और मक्खन मिला के खाओ ऐसे चालीस दिन तक चालीस बादाम की गिरी हो जावें खाते रहो, फिर** देखना **शरीर का रूप की कैसी तंदुरूस्ती हो जाती है,** ये याद रखना, प्रेम से बोलो हरे राम! दूसरा जिसको ये सेवन करना है वो अगर चाय पीता है तो उसको हटा देवे। तीन वक्त चाय पीता है तो एक वक्त पीवे और एक वक्त पीता है तो एक दिन छोड़ के दूसरे दिन पीवे। हर रोज न पीते हैं तो छोड़ देवे यह चाय बीमारी का कारण है। **ये शरीर की है तन्दुरूस्ती और दूसरी दिमाग की तंदुरूस्ती जिसको चाहिए तो एक छटांग बादाम का तेल, एक छटांग खसखस का तेल, और आधा छटांग कद्दू का तेल, ये तीनों तेल मिलाके रखें, रात्रि को जब दूध पीके सोने लगे, तब उस तेल की दो–चार बून्द सिर में डाल के मालिश कराके, पतला कपड़ा बांध लेवें घट में घट दो महीने ऐसे करोगे तो बारह महीना दो साल मगज की ताकत नहीं जाऐगी बहुत ताकत होवेगी।** प्रेम से बोलो राम।

बसन्त ऋतु में प्रातः मक्खन में बादाम व मिश्री मिलाकर खावें। जिससे दिमाग व शरीर की तन्दुरूस्ती बढ़ेगी।

यह संसार के अन्दर बहुत पागल हो गये हैं। जाके देखो पागल खाना में भरे पड़े हुए है। क्यांकि उनका दिमाग खराब हो गया है। प्रेम से बोलो हरे राम। और बुद्धि की तंदुरूस्ती होगी विवेक से, आत्म शक्ति होगी सत्संग से वेदांत शास्त्र के पढ़ने से महात्माओं में से वेदान्त की कथा श्रवण करने से बुद्धि की शक्ति विवेक शक्ति बढ़ेगी इसलिये हे मेरे मन यह सेवन करें इसी बसन्त ऋतु का बड़ा आनन्द है। तो सारे जीवों के लिए बहुत करके यह भंवरों को प्यारा लगता है।

बसन्त ऋतु का देख निजारा–भंवरा करत रिलमिल गुंजारा, सुगन्ध ले सुखकारी रे।" यह दृष्टांत है इसका सिद्धान्त क्या है ? प्रेम से बोलो हरे राम। ये जो पांच ऋतु हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, से पांचो ही विषय शर्मन्दी लगती है इन पांचों में भी भगवान का बड़ा रंग है। इन पांचों विषयों पर अनन्त जीव मस्त है। पर जब वैराग रूपी बसन्त आता है तो पांचों विषय फीकी लगती हैं। उनका त्याग हो जाऐगा।

प्रेम से बोलो हरे राम। ये भंवरा कौन है ? आप सब भाई–माई भंवरे हो और यह सत्संग बसन्त है। इसके अन्दर आप आकर नाम की, शिवोऽम की, गुंझार करते हो प्रेम से बोलो हरे राम। इसी महात्माओं के सत्संग रूपी बसन्त में ऐसा तो सुगन्ध है कि क्या कहें। जिसके स्पर्श करने से हाथ लगाने से स्नान करना पड़े,ऐसी दुर्गन्धी वाला जीव, महात्माओं के संग में आया तो ऐसा सुगन्धित हो गया, ऐसी खुशबू वाला हो गया कि चारों वर्ण उसके ऊपर चंवर झुला रहे हैं।

कहो रविदास कौनथा। वाल्मीक कौन था। रजब कौन था। सदना कौन था। बोलो हरे राम! अजामेल कौन था? ये महात्माओं के संग में सुगन्धित और पूजन योग्य हो गये।

भजनः बसन्त ऋतु को सब जन गावत,
सुर नर मुनि जन के मन भावत।
मुझको लागत प्यारी रे
ऋतु–ऋतु में है रंग साहब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे।

प्रेम से बोलो हरे राम। बसन्त ऋतु को सारे ऋषि, मुनि गाते हैं। बसन्त ऋतु सभी को प्यारी लगती है लेकिन वैराग संतों, महात्माओं को अच्छा लगता है लेकिन मिलेगा तो भाग से मिलेगा।

दोहाः किस्मत–किस्मत मत करो, किस्मत में कुछ नाहीं।
हिकमत में किस्मत बसे, कर देखो जग माहीं।।

जैसें व्यवहार करते हो, धंधा करते हो, पुरुषार्थ करते हो तो इसके लिए भी पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थ प्रारब्ध–बोध है। आप पुरुषार्थ करो जितने भाई–माई बैठे हों जैसे व्यवहार में पुरुषार्थ करते हो उसी प्रकार परमार्थ में भी करो पुरुषार्थ करो। ये भाग से मिलेंगे,

लेकिन भाग को खोलो। प्रेम से बोलो हरे राम। गुरु महाराज कहते हें मेरे को तो बसन्त बहुत प्यारी लगती है।

भजनः ऋतु बसन्त है बहुत रसाली कह टेऊँ भये संत सुखाली।
जाऊँ बलि बलिहारी...........
ऋतु–ऋतु में है रंग साहब का, बसन्त ऋतु रंगवारी रे....

प्रेम से बोलो हरे राम। ये बसन्त की ऋतु है। रसाली है। रस का अमृत का आला है। ये वैराग को पाकर सत्संग का वैराग, आत्माराम का वैराग ये तीनों वैराग आगे बसन्त बहुत है। आगे आपको सुनायेंगे। मैं इस सत्संग वैराग पर बलिहारी जाऊं। इसी समय कलियुग के अन्दर बहुत कठिन समय आया है। इसी के अन्दर दो ही साधन हैं। याद करना या लिखना। उदार चाहो, हे मेरे मन। ये दो साधन कर। सत्युग के अन्दर पुराणों में लिखा है, सत्युग के अन्दर तप का प्रभाव होता था। तप से परम पद की प्राप्ति होती थी। भगवान का दर्शन होता था, जैसे ध्रुव प्रहलाद को हुआ भगवान का दर्शन। बोलो हरे राम। त्रेतायुग में यज्ञ, यज्ञ से भगवान प्रसन्न होता है। सत् पदार्थो की प्राप्ति होती थी। द्वापर में अर्चन पूजा–ठाकुर व मन्दिरों की पूजा उसी से भगवान का दर्शन होता था। भगवान प्रकट होते थे। कलियुग में तीनों हैं पूजा–पाठ होते हैं, पर फल भावना से मिलता है पहले जितना था उतना नहीं। क्योंकि ये कठिन समय है। तीनों युग में सदाशिव घूमता था। अभी घूमता है लेकिन अर्न्तध्यान हो गया। तीनों युगों में नारद मुनि घूमता था। तीनों युगों में विष्णु घूमता था। अभी है नहीं, अर्न्तध्यान हो गये। प्रेम से बोलो हरे राम। इसी कलियुग में दो साधन हैं–

दोहाः कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग।
कह टेऊँ जिसके किये, होवे भव दुख भंग।।

याद करना। कलियुग में प्रधान है सेवा, तो गरीबो या सारी दुनिया की सेवा करना। अगर सारे दुनिया की न कर सको तो अपने देश की सेवा करो। अगर देश की सेवा न कर सको तो प्रान्त की सेवा करना। हे मेरे मन। और प्रांत की सेवा न कर सको, तो किसी जिले की सेवा करना, अगर इतनी भी शरीर में शक्ति नहीं हो तो अपने शहर की सेवा करना। तन, मन, धन, वाणी चार प्रकार से सेवा करना। अगर शहर की सेवा भी नहीं कर सको तथा शरीर में ताकत नहीं हो तो अपने पड़ौसियों की सेवा करना। हमारे पड़ौस में कोई दुःखी है वह भूखा है उसका बच्चा नंगा घूमता है और भूखा है पहले उसके बच्चे को खिलायेंगे। फिर अपने बच्चे को खिलाओगे तो सबसे बड़ी भक्ति कलयुग में ये ही है। उससे सत्फल की प्राप्ति होगी भगवान का दर्शन होगा।

जिस प्रकार भंवरा फूलों की सुगन्ध लेता है उसी प्रकार जिज्ञासु रूपी भंवरा सत्संग रूपी फुलवाड़ी का अमृतपान करे।

आत्मा का ज्ञान होगा। याद करना। सेवा करो। दूसरा सत्संग सेवा से अन्तःकरण की शुद्धि होगी। सत्संग से भगवान का दर्शन होगा सत्संग से आत्मा का ज्ञान होगा। मोक्ष की प्राप्ति होगी।

चौपाईः बिन सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिन सुलभ न सोई।।

ये विवेक सत्संग के बिना प्राप्त नहीं होगा। सत्संग भगवान के बिना प्राप्त नहीं होगा।सारे भाई–माई ये भगवान की कृपा हुई है तभी सत्संग मिला है सत्संग के बिना विवेक नहीं होगा। ये संसा, भ्रम निकल जायेगा। ये ज्ञान से ही होगा। इसलिये यमराज कहता है। हे नचिकेता। प्रेम से बोलो हरे राम। इसलिये पूरन सत्गुरु महाराज की जरूरत है। सत्गुरु के बिना ये संसा नहीं जायेगा। ये कथा यहां रख देते हैं। ये भजन यहां रख देते हैं। जो ये चार वचन सुने हैं। ये अपने मन को सुनाना। अब पल्लव पाओ।

ॐ शान्ति! शान्ति! शान्ति!

–ज्योति खत्री, जयपुर

स्वामी शांतिप्रकाश वाणी–19

प्रवचन स्थल : प्रेमप्रकाश आश्रम सिंधु नगर–5

सेवा और ज्ञान का समन्वय

(परम श्रद्धेय सद्‌गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज)

दोहा : या तो आत्मज्ञान हो–या तो पर उपकार।
टेऊँ जिसमें यह नहीं–मानुष सो बेकार।।

जिस पर गुरु महाराज की कृपा होती है उनके सारे के सारे कार्य अपने आप ही सफलता पूर्वक संपन्न होते हैं। हमारी गुरु महाराज में पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिये। विश्वास बहुत बड़ी चीज है। दुनिया का सारा कार्य भी विश्वास पर टिका है।

हम सभी का यह फ़र्ज है कि गरीबों और निर्बलों की सेवा करना। क्योंकि यह एक सच्ची सेवा है। जिससे जीव का लोक परलोक दोनों एक साथ सुधर जाते हैं।

एक बार किसी गांव में अकाल आ पड़ा, वहां एक आदमी के पास एक ही रोटी बची थी। उसी गांव में एक औरत भी रहती थी जिसे एक बच्चा भी था, अब उस औरत के पास खाने के लिये कुछ भी नहीं बचा था, चूंकि अकाल के कारण वहां कुछ भी नहीं बचा था।

अब वह आदमी जिसके पास सौभाग्य से एक रोटी बची थी सोचने लगा कि अगर मैं यह रोटी एक अकेला ही खाऊंगा तो यह माता और उसका मासूम बच्चा दोनों ही खत्म हो जायेंगे। और अगर यह रोटी स्वयं न खाकर इन्हें खाने के लिये दूं तो मैं अकेला ही मरूंगा और यह दोनों बच सकते हैं–ऐसा सोचकर उसने वह रोटी उस औरत को खाने के लिये दे दी। और उन दोनों की उदर तृप्ति से जान की रक्षा हुई।

ऐसे हमें भी ऐसी परिस्थिति में त्याग की भावना रख कर ऐसा उत्तम कार्य करना चाहिये। यदि इतना न कर सकें तो स्वयं के खाने के बाद गरीबों व निराश्रितों की कुछ यथाशक्ति सेवा करना चाहिये।

सेवा भी दो प्रकार की होती है। एक सेवा वह होती है जो आदमी केवल अपने नाम के लिए करते हैं, इस सेवा में स्वार्थ छुपा रहता है। इस सेवा से सेवा करने वाले का ही भला होता है, उस गरीब का कम भला होता है। दूसरे प्रकार की सेवा वो होती है जिसमें अपना कोई स्वार्थ नहीं होता है इस प्रकार की निःस्वार्थ सेवा करने से जीव का लोक–परलोक दोनों सुधर जाते हैं।

अतः सेवा बिना किसी स्वार्थ के करनी चाहिये। देखो द्रोपदी ने विपत्ति में तन ढंकने को थोड़ा सा साड़ी का टुकड़ा दिया तो इसके परिणाम में द्रोपदी को भी विपत्ति में बहुत सी साड़ियां मिलीं, ठीक हमें भी बिना किसी स्वार्थ और सच्चे हृदय से गरीबों की सेवा करके अपने जीवन को कृतार्थ करना चाहिये। सेवा के साथ–साथ जिज्ञासू को अपने आप को पहचानना भी चाहिये। क्योंकि आप जो स्वयं को समझ रहे हो वो आप हो ही नहीं। आप अपने आत्मराम को पहचानो। अपने को शरीर मत मानो। आत्मा और शरीर एक नहीं अपितु पृथक–पृथक हैं। देखो अगर कोई आपसे पूछे कि कमरे में कौन है ? तो आप क्या जवाब देंगे ? बताओ? आप अपना नाम लेकर कहेंगे कि भाई मैं फला आदमी हूँ। ऐसे तो नहीं कहेंगे कि मैं कमरा हूँ।

ठीक इसी प्रकार इस शरीर रूपी कमरे में भी आत्मा निवास कर रही है। लेकिन आपने आज तक उसे पहचानने की कोशिश ही नहीं की है, कि आत्मा और शरीर अलग है। यदि आप से कोई पूछता है कि आप कौन हैं, अथवा क्या नाम है ? तो सीधे–सीधे इस कमरे रूपी शरीर का नाम लेकर उसे उत्तर देते हैं। यह सब इसलिये चूंकि हमें उस आत्मशक्ति का ज्ञान नहीं है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपनी असली चेतना को पहचानें।

वैसे इस शरीर का कोई मूल्य नहीं है मूल्य है तो उस आत्मा का मूल्य है, जिसके आधार पर यह शरीर है। उसे हम जानें।

अगर यह शरीर किसी दुख से पीड़ित है तो यह सभ प्रारब्ध का फल है। आप तो केवल साक्षी बनकर उसे देखते रहिये। जो होना है वह होकर रहेगा। प्रारब्ध तो हरेक जीव को भोगना पड़ेगा। उसे मिटा नहीं सकते।

आप अपने आप को इस शरीर को चलाने वाला समझिये। और शरीर को चलाने का काम किसका है ? आत्मा का। इस प्रकार आप स्वयं को आत्मराम समझें, शरीर नहीं। आत्मिक ज्ञान से जीव को परम शांति का अनुभव होता है अन्य उपाय से नहीं। इसलिये उस ज्ञान को प्राप्त करो।

संकलन–कु. पिंकी लालवाणी, बड़ौदा

मौन

थोड़ा बोलना चाहिए। व्यर्थ कभी नहीं। कार्य मात्र बोलना ही वाणी का संयम है। चुप जैसी मीठी नहीं वस्तु इस जग मांहिं। -सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज।

पूछा कि परमात्मा की बोली कौन सी है। जवाब आया मौन। अगर हम मौन की बोली सीख लें तो परमात्मा से गुफ्तगू कर सकते हैं। कली जब तक बन्द है तब तक कोई भी उसको नहीं तोड़ता जब खिलने लगती है। तब सब कोई उसको तोड़ के तहस नहस कर देते है। जुबान भी जब तक बन्द है तब तक कोई भी कष्ट, दर्द, नजदीक नहीं आता है। पर अगर खुलती है तो सैकड़ों दर्द सहेगी। जो बच्चा मौन में है वह सम्बन्धियों से कुछ भी नहीं माँगता पर उसके माँ बाप खुद ही उसका ख्याल रखते हैं उसी तरह से जो मनुष्य मौन में रहता है। उसको ईश्वर सब कुछ दे देता है। अगर मौन में मिठास न हो तो मौन के समय क्यों दोनों होंठ एक दूसरे से चिपके हुए हैं। बोल वहीं अच्छे लगते हैं जो मौन की मिठास से भरपूर होकर निकलते हैं। जमीन मौन में है। आसमान मौन में है। सूरज चाँद, तारें, पहाड़ खेत खलिहान सब मौन में है। सारी सृष्टि मौन का मजा ले रही है। केवल इन्सान को ही शान्ति नहीं है। जहाँ कोसो के कोस समुद्र का ही पानी है मीलों के मील बर्फ ही छाई पड़ी है। दूर–दूर तक रेत ही रेत बिखरी पड़ी है वहां कितना अजीब मौन होगा मनुष्य का शोरगुल तो सिर्फ शहरों में थोड़े–थोड़े फासले पर होता है पर मौन की हुकूमत की तो कोई हद ही नहीं है।

दो बातें सुनो तब जाकर एक बात कहने का हक समझो क्योंकि परमात्मा ने हमें कान दो दिए है पर जुबान एक ही दी है। जब तक कोई बात कही नहीं है तब तक वह हर तरह से हमारे काबू में है। पर जब बोल चुके तो हमारे हाथ से निकल गयी।

एक हरा तोता पेड़ के हरे पत्तों के बीच में बैठा था। एक शिकारी वहां से निकला पर हरियाली के अलावा उसको कुछ भी नजर न आया। अचानक तोते ने बोलना शुरू किया। शिकारी ने भी सजग होकर तीर चला दिया। जाल में फँसे हुए तोते ने सर्द आह भरी और बोला हाय। बोलने ने ही मुझे फँसा दिया। मनुष्य में हजार ऐब हो तो भी मौन में रहने से छिप जाते है। पर चाहे कोई बिना ऐब के हो तो भी ज्यादा बोलने की वजह से उसमें कई ऐब पैदा हो जाते है। अक्लमन्द व्यक्ति तब तक नहीं बोलता है जब तक देखता है कि नहीं बोलने से नुक्सान हो जाएगा। सीप जुबान को बन्द कर देती है। तब पानी की एक बूंद को मोती बनाकर दिखाती है अगर हम भी जुबान बन्द कर दे तो हमारा एक–एक वचन मोती से भी ज्यादा कीमती हो जाता है।

जब हम पर कोई गलत और फालतू इल्जाम लगाए तो बहतर है उससे बहस न करके मुस्करा के मौन हो जाए। जब हमारे बोलने के बीच में कोई बोले तो अपनी बात बन्द कर दे। याद रखे कि मुंह खोलने में जो मजा मिलता है उससे कई गुना अधिक मुंह बन्द रखने से मिलता है।

गुफ्तगू चाहे कितनी भी मीठी क्यो न हो तो भी मौन की मिठास की समानता नहीं कर सकती। जुबान का मौन है पुखराज, मन का मौन है अमूल्य मणिका। बोलने को मना नहीं है पर बोल वह बोलें जिसको सुनकर सबका मन मौन की मौज में मस्त हो जाए। जब न बोलने को कहते है मौन तो फिर मौन की मिठास को किस बोली में बैठ के बयान करें?

–गुरूकृपा

पत्नी दान

–श्रद्धेय सन्त रमेश भाई ओझा के प्रवचनो से

जलाराम दम्पति जिनके बारे में प्रचलित था। कि इनके दर से कभी कोई खाली नहीं लौटता जिनके यहाँ सदैव अखण्ड भण्डारा जारी रहता था। गुजरात के देवपुर ग्राम में अपनी एकमात्र पुत्री के साथ सदैव सबकी सेवा करते एवं ईश्वर ध्यान में लीन रहते।

ऐसे निष्काम धर्म मूर्ति की स्थिति गुजरात के कण–कण में सुगन्धित होती हुई, उस परमपिता परमेश्वर के दरबार में भी पहुंची। और भक्त को कसोटी पर कसने के लिये चल पड़े भगवान, एक अन्यतं वृद्ध का रूप धारण किया एक फटा हुआ झोला लटकाया, और आ पहुंचे सन्त जी के द्वार अतिथि को आया देखकर जलाराम जी दौड़े आये। अपनी मीठी वाणी द्वारा यथोचित सत्कार कर प्रभु को भोजन करने का निमंत्रण दिया। वृद्धा बाबा बने प्रभु ने कहा नहीं बच्चा हमें भोजन नहीं चाहिए। दे सकोगे जो मांगे। क्षण भर को शान्ति। दूसरे ही क्षण आज्ञा करें अतिथि देव, वृद्ध बाबा ने कहा हम अत्यधिक बूढ़े हो चले है जलाराम, हमारी सेवा के लिये हम तुम्हारी पत्नी मांगते हैं। जलाराम कुछ क्षण शांत हो गये। और फिर अपनी पत्नी को वृद्ध बाबा के साथ जाने का आदेश दिया। कर्तव्य परायण पतिव्रता अपने पति में ही परमेश्वर का दर्शन करने वाली सती ने तुरन्त आज्ञा शिरोधार्य की। पति की चरण रज को मस्तक पर धारण किया। अपने वियोग की व्यथा को मुस्कराहट में छुपाया। उस वृद्ध बाबा के साथ चल दी।

अब आगे–आगे बाबा जी और पीछे–पीछे जलाराम जी की पत्नी चलते चले जा रहे थे। बाबा कई मीलों की यात्रा के पश्चात एक सुनसान जंगल में जाकर रूकते है। और जलाराम की पत्नी से कहते हैं, देवी यह झोला यह लाठी सम्भालो। मैं अभी आता हूं।

जो आज्ञा कहकर जलाराम की पत्नी ने झोला और लाठी ले ली। और उनके आने का इन्तजार करने लगी। शाम हो गई। बाबा न लौटे चिन्ता होने लगी। अभी तक नहीं आये। शौचादि स्नान आदि में इतना समय, कहा चले गये ढूढंने लगी।

तभी आकाशवाणी हुई देवी मैं तुम दोनों की परीक्षा ले रहा था। तुम सफल हुये। ये झोला और लाठी ले जाओ। इन्हें यथोचित जगह रखना। वहां किसी भी वस्तु का अभाव नहीं होगा। जलाराम की पत्नी की आँखो से आँसू बहने लगे। हे प्रभु वृद्ध के रूप में आप मेरे साथ थे। हर्षा वेग में गिरती पड़ती वापस घर पहुंची। और अपने पति को सारा वृतान्त कह सुनाया। अब तो जलाराम भी अपने आँसुओं को रोक नहीं पाये। आनन्दातिरेक में प्रभु प्रेम में सदैव भीगे रहने वाले कुछ क्षणों तक तो मूर्तिवत हो गये। सचेत होने पर उन्होंने अपनी भाग्यवती पत्नी को कहा कि मै तुम्हें दान में दे चुका हूं। अब तो वापिस मैं तुम्हें पत्नी रूप में स्वीकार नहीं कर पाऊंगा। उसी क्षण जलाराम व उसकी पत्नी ने ग्रहस्थाश्रम त्याग कर वैराग्य धारण कर लिया। अपने ही घर में आश्रम बनवाकर उसमें प्रभु द्वारा प्रदत्त झोला लाठी ससम्मान रख दी। कहते है। आज भी वहां पर ये वस्तुयें रखीहुई है। अपितु ऐसा भी सुनने में आया है। कि जब भक्त जन वस्तु अथवा धनराशि संत जलाराम जी के श्री चरणों में भेंट करते हैं तो वापस कर दिया जाता है। और कहा जाता है। इनका उपयोग अपनी जरूरत के लिये करें। संत जलाराम जी की पुत्री को दो पुत्र हुये। जिन्हें संत जलाराम जी के शरीरान्त के पश्चात उनकी गद्दी पर बिठाया गया। परम्परानुसार उनकी संतान को आज तक संत जलाराम जी की पीठ पर प्रतिष्ठित किया जाता है।

सद् गुरू की विराट करूणा

सद्‌गुरू की विराट करूणा विषय के अन्तर्गत मैं आपको एक ऐसी कथा बताने जा रही हूं। जिसे पढ़कर आपका गला भर आयेगा आपकी आंखों में से आंसू छलकने लगेंगे आप प्रभु को सद्‌गुरू को धन्यवाद देने के लिए आतुर हो जायेंगे। करूणा जिस पर मुझे लिखने की इच्छा हुई सद्‌गुरू की करूणा तो इतनी विराट है जिसके बारे में शेष नाग भी हजार मुख से मिलकर उनका बखान करे तो भी कम पड़ जायेगा। फिर भला मेरी इस कलम में क्या ताकत है जो उनका बखान करें फिर भी अपनी इसी इच्छा एवं भावना को देखते हुए उनकी करूणा के बारे में एक कथा दे रही हूं। जो मेरे हृदय को छू गयी भा गई। आशा है कहीं न कहीं आपको भी छुअेगी भायेगी।

महापुरूषों का संसार में आना जाना दूसरों के हित के लिए ही होता है, जैसे सरोवर–सरोवर में जो पानी आप देखते हैं क्या वह सरोवर स्वयं के लिए संचय करता है नहीं भाई वो तो दूसरो के लिए संचय करता है यह जो सूर्य आप प्रतिदिन देखते हो क्या सूर्य स्वयं के उद्‌देश्य से उदय होता है? अरे नहीं वो तो सारे संसार से अंधेरे को दूर करके एक नई रोशनी देने के लिये ही उदय होता है। इस प्रकार महापुरूषों ने जन्म लिया जरूर है। परन्तु अपने सुख एवं स्वार्थ के लिये नहीं वे तो जन्म से ही निस्वार्थ होते है। उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं होता उनका जन्म तो संसार से दुखों की समाप्ति करने व आनंद की समृद्धि के लिये होता है।

यह कथा उस समय की हैं जब ज्ञान वैराग्य, भक्ति प्रेम, त्याग और विराट के मूर्तिमान विग्रह, श्री कृष्ण प्रेमावतार–श्री चैतन्य महाप्रभु ने अवतार धारण किया था वे जब तक रहे अपनी करूणा बरसाते रहे, भावुक भक्तों को निरामय श्रीकृष्ण–प्रेम–पीयूष का पान कराते रहे। महाप्रभु गोरांगदेव के समय में ही नवद्वीप में जगाई–मधाई (जगन्नाथ–माधव) नाम के दो क्रूरकर्मा ब्राह्मण कुमार निवास करते थे। ये दोनों भाई नवद्वीप में बिना छत्र के बादशाह थे इनसे ऐसा कोई भी दुष्कर्म नहीं बचा था जिसे ये न करते हो। मनुष्य विनाश के जितने लक्षण बताये हैं वे सब इनके नित्य–नैमेत्तिक कर्म थे भगवान ने विनाश के लक्षणों का स्वयं वर्णन किया है। "भगवान कहते हैं" जिस समय मनुष्य देवताओं से, वैदिक कर्मों से गोओ से ब्राह्मणों से, साधू महत्माओं से धार्मिक कृत्यों से और मुझसे विद्वेष करने लगता है। तो उसका शीघ्र ही नाश हो जाता है। इनसे कोई भी बात बची नहीं थी। देवताओं के मंदिरों में जाना तो उन्होंने जन्म से ही नहीं सीखा था। ब्राह्मण होने पर भी ये वेद का नाम नहीं जानते थे। मांस तो इनका नित्यप्रति का भोजन ही था साधु ब्राह्मणों की अवज्ञा कर देना तो इनके लिये साधारण सी बात थी। जिसे भी चाहते बाजार में खड़ा करके जूतों से पिटवा देते किसी का सम्मान करना तो ये जानते ही नहीं थे। किसी को इनके सामने तक जाने की हिम्मत नहीं होती थी। धर्म किस चिड़िया का नाम है और वह कहाँ रहती है। इन्हें तो इस बात का पता नहीं था। धनिकों के यहाँ डाका डलवा देना, लोगों को कत्ल करा देना पतिव्रताओं के सतीत्व को नष्ट करा देना इनके लिए साधारण से कार्य थे। इस प्रकार इनके पाप पराकाष्ठा पर पहुंच गये थे उस समय ये नवद्वीप में अत्याचारों के लिए रावण कंस की तरह वक्रदन्त–शिशुपाल की तरह नादिरशाह–गजनी की तरह प्रसिद्ध हो चुके थे।

महाप्रभु के भक्तों में दो सन्यासी थे एक तो अवधूत नित्यानन्द जैसे श्रीकृष्ण के अवतार के समय उनके साथ बलराम जी थे भगवान श्रीराम के समय उनके साथ लक्ष्मण जी थे इसी प्रकार चैतन्य महाप्रभु के समय लीला में साथ देने के लिये नित्यानन्द जी

थे। महाप्रभु ने नित्यानन्द और महात्मा हरिदास जी को (जो महाप्रभु के परम भक्त थे) नवद्वीप के मुहल्ले–मुहल्ले और घर–घर में जाकर हरिनाम का प्रचार करने के लिये कहा था ये दोनों लोगों से विनय करके हाथ जोड़कर तथा पैर छूकर हरिनाम की भिक्षा मांगते थे।

एक दिन ये दोनों भाई मदिरा का पान करके पागलों की भांति प्रलाप करते हुए जा रहे थे। रास्ते में नित्यानन्द जी और हरिदासजी ने इन्हें देखा। इनकी ऐसी विचित्र दशा देखकर ये लोगों से पूछने लगे क्यों जी, ये लोग कौन है लोगों ने कुछ सूखी हंसी हँसते हुए उत्तर दिया कि ये तो साक्षात यमराज है इनका काम तो चाण्डालों से भी बढ़कर है आप कभी इनके सामने होकर नहीं निकलना, इन्हें साधुओं से बड़ी चिढ़ है। यदि इन्होंने आप लोगों को देख भी लिया तो खैर नहीं है।

लोगों के मुख से ऐसी बात सुनकर नित्यानन्दजी को इनके ऊपर दया आयी वे सोचने लगे जो लोग नाम में श्रद्धा रखते हैं यदि ऐसे लोग हमारे कहने से भगवान का कीर्तन करते हैं। इसमें तो हमारे प्रभु की विशेष बड़ाई नहीं है। प्रशंसा की बात तो यह है। कि ऐसे पापी भी पाप छोड़कर भगवान का आश्रय ग्रहण करके प्रभु की शरण में आ जायें। भगवान का असली महत्व तो तभी प्रकट होगा। ऐसे लोग ही सबसे अधिक कृपा के पात्र हैं। ऐसे ही लोगों के लिये तो भगवत्नाम उपदेश की परम आवश्यकता है। किसी प्रकार इन लोगों का उद्धार होना ही चाहिये जिस प्राणी के लिये महात्माओं के हृदय में शुभकामना उत्पन्न हो जाये उसका तो कल्याण हो चुका। फिर उसके उद्धार में देरी नहीं हो सकती, महात्माओं की इच्छा अथवा कृपा से पापी से पापी भी पुण्यवान और पतित पावन बन सकता है। जब नित्यानन्दजी के हृदय में इन दोनों भाइयों के उद्धार के निमित चिन्ता होने लगी। तभी समझना चाहिये। इनके पापों के क्षय होने का समय अत्यन्त ही समीप आ पहुंचा ये सोचकर वे दोनों

हरे राम हरे राम राम–राम हरे हरे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण–कृष्ण हरे हरे।।

इस महामन्त्र का अपने सुमधुर कण्ठ से गान करते हुए जगाई मधाई के डेरे की ओर चले और उनके समीप पहुंचे इन दोनों को अपने सामने गायन करते देखकर वे क्रोध भरी नजरों को देखते हुए बोले तुमलोग कौन हो और क्या चाहते हो ?

नित्यानन्दजी ने बड़े मधुर स्वर में कहा–कहा हम भिक्षुक हैं आपसे भिक्षा मांगने आये हैं। आप अपने मुख से **श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारे। हे नाथ नारायण वासुदेव।।** भगवान के इन मधुर नामों का उच्चारण करें यही हम लोगों की भिक्षा है इतना सुनते ही ये दोनों भाई मारे क्रोध के लाल हो गये और जल्दी से उठकर इनकी ओर झपटे यह देखकर नित्यानन्दजी और हरिदासराम जी ने वहां से दौड़ लगायी और दौड़ते–दौड़ते महाप्रभु के पास पहुंचे उस समय प्रभु भक्तों के साथ बैठे श्रीकृष्ण कथा कह रहे थे। इन दोनों प्रचारक तपस्वियों को देखकर वे प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहने लगे लो भाई युगल–जोड़ी आ गयी। प्रचारक मण्डल के मुखिया आ गये अब आप लोग इनके मुख से नगर प्रचार का वृतान्त सुनिये।

प्रभु के पूछने पर हरिदासजी ने सब वृतान्त सुनाते हुए कहा लोगों ने बार–बार उन दोनों भाइयों के पास जाने से मना किया था किन्तु ये माने ही नहीं। जब उन्होंने डाँट लगायी तब वहां से बालकों की भांति भाग छूटे। हरिदासजी की बात सुनकर हसंते हुए प्रभु ने नित्यानन्दजी से कहा श्री पाद! इन लोगों के समीप जाने की आपको क्या आवश्यकता थी।

तब नित्यानन्दजी ने कहा! एक बात तो आप ही कहते हैं सभी को नाम का प्रचार करो ब्राह्मण से चाण्डाल पापी से भी पापी जीव सभी भगवत्नाम के अधिकारी है और अब कहते हैं उनके पास क्यों गये? सबसे बड़े अधिकारी तो वहीं है हमारा उद्धार करने में आपकी कौन सी बडाई है? आपका पतित पावन नाम तो तभी सार्थक हो सकता है जब ऐसे–ऐसे

भयंकर क्रूर कर्म करने वाले पापियों का उद्धार करें! जब तक ऐसे घोर पापियों को हरिनाम की शरण में लाकर भक्त न बनाओगे तब तक हरिनाम का महत्व ही कैसे समझ सकेंगे।

प्रभु भक्तों से कहने लगे–श्रीपाद को जिनके उद्धार की इतनी भारी चिन्ता है वे महाभागवत पुरूष कौन हैं।

तब भक्तों ने कहा– प्रभो! वे महाभागवत नहीं है वे तो ब्राह्मण कुल–कण्टक क्रूर प्रवृत्ति के राक्षस है!

प्रभु ने हंसते हुए कहा अब वे कितने दिनों तक क्रूरता कर सकते हैं? इस प्रकार निताई ने संकेत से ही प्रभु के समीप जगाई–मधाई के उद्धार की प्रार्थना कर दी और प्रभु ने भी संकेत द्वारा ही उन्हें उन दोनों भाईयों के उद्धार का आश्वासन दिला दिया। सचमुच महात्माओं के हृदयों में दूसरों के प्रति स्वाभाविक ही दया उत्पन्न हो जाती है उनके समीप आकर कोई दया की प्रार्थना करे तभी वे दया करे यह बात नहीं है किन्तु उनका स्वभाव ही ऐसा होता है कि बिना कहे ही वे दुखियों पर दया करते रहते हैं। बिना दया किये वे रह नहीं सकते, संत महात्मा जो भी चेष्टा करते हैं वे भी लोक कल्याणकारी ही होती है। यदि वे प्रसन्नतापूर्वक किसी की ओर देखभर लें बस उसी समय उसका बेड़ा पार है! साधुओं के साथ खोटी बुद्धि से किया हुआ संग भी व्यर्थ नहीं होता साधुओं से द्वेष रखने वालों का भी कल्याण ही होते देखा गया है। वे अपने अहित करने वाले का भी सदा हित ही करते हैं प्रहार करने पर भी वे वृक्षों की भांति सुस्वादु फल ही प्रदान करते हैं क्योंकि उनका हृदय दया से परिपूर्ण होता है।

संयोगवश अब जगाई मधाई ने उसी मुहल्ले में डेरा डाला जहां महाप्रभु का घर था। प्रभु का घर गंगाजी के समीप था जिस घाट पर प्रभु स्नान करने जाते उसी के रास्ते में इन दोनों क्रूरकर्मा भाइयों का डेरा पड़ा हुआ था। शाम को नियमित रूप से भक्त संकीर्तन करते थे। और इस संकीर्तन को सुनकर वे दोनों भाई हुंकार मारने लगते कभी पड़े–पड़े ही अहा–अहा इस प्रकार कहने लगते कभी भावावेश में आकर कीर्तन के लय के साथ उठकर नृत्य करने लगते इस प्रकार ये संकीर्तन के माहात्म्य को बिना जाने ही इनके हृदय की कठोरता बहुत कुछ जाती रही और वे पागल से हो गये। एक दिन रात्रि के समय नित्यानन्दजी महाप्रभु के घर की ओर आ रहे थे निताई ने जान बूझकर केवल उन दोनों भाईयों के उद्धार के निमित भगवन्नाम का उच्चारण करते हुए इनके डेरे के सामने होकर ही निकले उस समय ये दोनों शराब के नशे में चूर थे। नित्यानन्द को रात्रि में उधर से जाते देखकर बेहोशी में मधाई ने पूछा कौन जा रहा है? प्रभु के यहां संकीर्तन करने जा रहे हैं हमारा नाम है अवधूत! अवधूत नाम को सुनकर ही मधाई चिढ़ गया और उसने पास में पड़े हुए एक घड़े के टुकड़े को उठाकर नित्यानन्दजी के सिर में जोर से मारा वह खपड़ा इतने जोर से निताई के सिर में लगा कि सिर में लगते ही खपड़े के टुकड़े–टुकड़े हो गये। एक टुकड़ा निताई के माथे में भी गड़ गया। खपड़े के गड़जाने से मस्तक से रक्त की धारा सी बहने लगी, उनका संपूर्ण शरीर और वस्त्र रक्त से लथपथ हो गये। नित्यानंदजी को उन पर क्रोध न आकर वे आनंद के साथ नृत्य करते हुए कीर्तन करने लगे वे रो–रोकर प्रभु से प्रार्थना करने लगे–प्रभो इस शरीर में जो आघात हुआ उसकी मुझे कुछ भी चिंता नहीं किन्तु अब मुझको इनकी दुर्दशा नही देखी जाती। अब तो इनका उद्धार करो यह सब देखकर लोगों ने आकर महाप्रभु को बताया। नित्यानंदजी के प्रहार की बात सुनकर अब इनसे नहीं रहा गया ये नित्यानन्दजी को प्राणों से भी अधिक प्यार करते थे। और दौड़ते हुए घटनास्थल पर आये। प्रभु ने देखा नित्यानन्द जी आनंद से नृत्य कर रहे हैं उनके सपूर्ण शरीर से रक्त टप–टप नीचे टपक रहा है नित्यानन्दजी के रक्त के कारण पृथ्वी पूरी लाल हो गयी है। यह देखकर प्रभु का खून उबलने लगा और आकाश की ओर देखकर जोरों से हुंकार मारते हुए चक्र–चक्र इस प्रकार कहने लगे। प्रभु को इस प्रकार क्रोध में

देखकर नित्यानन्दजी ने प्रार्थना की, प्रभो जब आप ही पापियों के ऊपर दया न करके क्रोध करेंगे तो इनका उद्धार कैसे होगा? प्रभु आपका नाम तो पतितपावन है आप तो दीनानाथ हैं प्रभो! ये आपकी कृपा के पात्र हैं इनके उपर अनुग्रह होना चाहिये। निताई के ऐसी प्रार्थना करने पर भी प्रभु का क्रोध शांत नहीं हुआ। इधर प्रभु को क्रोध में देखकर सभी भक्तों को प्रतीत होने लगा, कि आज संसार में महाप्रलय हो जाएगा। संपूर्ण संसार प्रभु के प्रकोप से भस्मीभूत हो जाएगा इतने में ही उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा मानों आकाश में से सुदर्शन चक्र उनके संहार के निमित्त उत्तर दे रहा है। सुदर्शनचक्र के दर्शन से वे बहुत ही अधिक भयभीत हुए और डर के कारण थर–थर कांपने लगे। नित्यानन्दजी ने इनकी मनोगत अवस्था को समझकर चक्र से आकाश में ही रूके रहने की प्रार्थना की और दीनभाव से पुनः प्रभु से प्रार्थना करने लगे प्रभो यदि आप ही इस युग में पापियों को दण्ड देंगे तो फिर पापियों का उद्धार कहाँ हुआ यह तो संहार ही हुआ। पतितपावन नाम को सार्थक क्यों नहीं करते? फिर दण्ड ही देना है तो एक मधाई को ही दीजिये। जगाई ने तो कोई अपराध नहीं किया। इसने तो उल्टे मधाई को प्रहार करने से निवारण किया है!

जगाई ने श्रीपाद की रक्षा की है उन्हें मधाई के द्वितीय प्रहार से बचाया है इस बात को सुनते ही प्रभु की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा! उनका संपूर्ण शरीर पुलकित हो उठा। प्रेम के कारण जगाई को प्रभु ने गले से लगा लिया और वे गद्‌गद्‌कण्ठ से कहने लगे। तुमसे बढ़कर मेरा प्यारा और कौन हो सकता है। आओ मेरे गले लगकर मेरे अनुतप्त हृदय को शीतलता प्रदान करो। प्रभु का प्रेमालिंगन पाते ही जगाई मूर्च्छित हो गया वह अचेत प्रभु के चरणों में लोटने लगा आज उस भाग्यवान ब्राह्मणबन्धु का जन्म सफल हो गया उसके सभी पाप क्षय हो गये प्रभु के चरणों में पड़ा हुआ जगाई जोरों के साथ फूट–फूटकर रोने लगा।

अपने भाई को इस प्रकार प्रेम में अधीर होक रूंदन करते देखकर मधाई के हृदय में भी पश्चाता की ज्वाला जलने लगी आंखों में आंसू भरकर गद्‌ग कण्ठ से उसने कहा प्रभु हम दोनों ही भाइयों मिलकर समानरूप से पाप किये हैं। आपने एक भा को ही अपने चरणों की शरण प्रदान की है नाथ। ह दोनों को ही अपने चरणों की शरण प्रदान की है नाथ हम दोनों को ही अपनाइये हम दोनों की रक्ष कीजिये यह कहते–कहते मधाई भी प्रभु के चरणों लौटने लगा मधाई के ऊपर से प्रभु का रोष अभी नहीं गया था उन्होंने गंभीर स्वर में कहा मधाई तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता मैं अपने अपराध कर वाले के प्रति तो कभी क्रोध नहीं करता किन्तु तुम श्रीपाद नित्यानंदजी का अपराध किया है यदि वे तुम् क्षमा कर दें तब तो तुम मेरे प्रिय हो सकते हो। जाअ नित्यानन्दजी की शरण लो।

प्रभु की ऐसी आज्ञा सुनकर मधाई प्रभु के चरण को छोड़कर नित्यानंदजी के चरणों में जाकर गि गया और फूट–फूटकर रोने लगा उसी की ग्लानि व कारण वह अधीर होकर दहाड़ मारकर रो रहा था उसके रूदन की ध्वनि को सुनकर पत्थर भी पसीज उठता था मानों मधाई के रूंदन से द्रवीभूत होक दिशाएं भी रो रही थी। सभी लोग उन पापियों क ऐसी दशा देखकर अपने आप को भूल गये उन्हें उस क्षण का कुछ पता ही नहीं चला, कि हम स्वर्ग में हैं या मृत्युलोक में। सभी गोरागं के प्रेम विवाह व वशीभूत होकर उस अभूतपूर्व दृश्य को देख रहे थे यह देखकर अत्यन्त ही दीनभाव से नित्यानंदजी ने कहा प्रभो। यह आप अपने सेवकों के सिर सदा से सुयश का सेहरा बांधने आये है, कि पतित पावन गौ में ही ऐसे पापियों को उबारने की सामर्थ्य है। प्रभो मैं हृदय से कहता हूं। मेरे हृदय में मधाई के प्रति अणुमात्र भी विद्वेष के भाव नहीं है। यदि मैंने किसी भी जन्म से कोई सुकृत किया हो तो उन सब क पुण्य मैं इन दोनों भाइयों को प्रदान करता हूं।

इतना सुनते ही प्रभु ने दौड़कर मधाई को अंक मे

उठा लिया और जोरों से उसका आलिंगन करते हुए कहने लगे मधाई अब तुम मेरे अत्यन्त ही प्रिय हो गये। श्रीपाद ने तुम्हें क्षमा कर दिया उन्होंने अपने सभी पुण्य प्रदान करके तुम्हें परम भागवत वैष्णव बना दिया। तुम आज से मेरे अन्तरंग भक्त हुए। श्रीपाद की कृपा से तुम पाप रहित बन गये। प्रभु का प्रेमालिंगन और आश्वासन पाने से मधाई के आनंद की सीमा न रही वह उसी वक्त मूर्च्छित होकर प्रभु के चरणों में पड़ गया। प्रभु के दोनों पैरों को पकड़े हुए नवद्वीप के शासनकर्ता वे दोनों भाई धूलि में लोटे हुए रूदन कर रहें थे। उसी समय प्रभु ने अपने पैरों में पड़े हुए धूलि धूसरित दोनों भाइयों को उठाया और भक्तों को संकीर्तन करने की आज्ञा की।

इन दोनों पापी भाइयों की ऐसी दीनता देखकर भक्तों के हर्ष का ठिकाना नहीं रहा वे अलग–अलग सम्प्रदाय बना–बनाकर प्रेम में उन्मत हुए हरि ध्वनि करने लगे।

अब चैतन्य महाप्रभु ने उन दोनों पापियों का उद्धार तो कर दिया अब आप जगाई और मधाई की प्रसन्नता के विषय में जानिये।

सकृदेव प्रपत्राय तवास्मीति च याचते।
अभय सर्वभूतेश्यो ददाभ्येतद् व्रत मम।।

अर्थ–भगवान विभीषण के आने पर वानरों से कह रहें है एक बार भी जो प्रपत्र होकर मैं तेरा हूं ऐसा कहकर मुझ से जो कृपा की याचना करता है उसे मैं सर्वभूतों से अभय प्रदान करता हुं। ऐसी मेरी प्रतिज्ञा है।

अमृत–कण

1. सुगंध दे जग को वही जीवन है।
   विष पी के सुधा बोये यही जीवन है।
   फूलों सा महकना ही सही जीवन है।
2. सद्धर्मी का जो ऋण लिया करते है।
   औरों के लिए प्राण दिया करते है।
   सत्गुरू उन्हें क्यों न कहेगी दुनिया
   जो विश्व का कल्याण किया करते हैं।
3. कुछ तन को सजाने में लग्रे रहते है।
   कुछ धन को सजाने में लगे रहते है।
   जीवन को समझते है वही लोग
   जो कुछ करके दिखाने में लगे रहते है।
4. कूदो सरिता में तट पर क्या जीना है।
   बनकर सरिता का कंकड़ क्या जीना है।
   तुम वनवासी राम बनो।
   जिंदा शव बनकर भी क्या जीना है।
5. अज्ञान मिटाना ही मानवता है।
   सदज्ञान बढ़ाना ही मानवता है।
   तू सौ की एक बात समझले प्यारे
   मानव बन जाना ही मानवता है।
6. सत्संग में जिसे झांकना आ जाता है
   ब्राह्मण के हर भेद को वह पाता है।
   सदज्ञान से जो सार की पहचान करे।
   जीवन का अमरगीत वही गाता है।
7. क्यो होने लगा आज मनुष्यता का पतन।
   क्यो होने लगा आत्मपतन आत्महनन
   धरती को बचा पाप से तू हे गुरूदेव।
   इस काल से कहे दे कि बदल दें अपना चलन

ध्यान रखने योग्य बातें

- ♣ आतिथ्य ही घर का वैभव है।
- ♣ प्रेम ही घर की प्रतिष्ठा है।
- ♣ व्यवस्था ही घर की शोभा है।
- ♣ समाधान ही घर का सुख है।
- ♣ सदाचार ही घर का सुवास है, ऐसे घर में सदा प्रभु का वास है।
- ♣ ऋण हो ऐसा खर्च मत करो।
- ♣ पाप हो ऐसी कमाई मत करो।
- ♣ क्लेश हो ऐसा मत बोलो।
- ♣ चिंता हो ऐसा जीवन मत जीओ।
- ♣ रोग हो ऐसा मत खाओ।

–सुनील कुमार तलरेजा, भाटापारा

श्री सुनील कुमार तलरेजा पुत्र श्री भगवानदास तलरेजा प्रेम प्रकाशी जिसे काल के क्रूर हाथों ने 25 वर्ष की अल्पायु में 16 दिसम्बर 2001 को, एक दुर्घटना में हम सबसे छीन लिया। भाटापारा आश्रम का कर्मठ कार्यकर्ता सद्गुरु भगवान के प्रति अटूट निष्ठा रखने वाला सुनील कुमार मृदभाषी होने के साथ ही सेवा कार्यों में अग्रणी रहता था।

श्री सुनील कुमार जी ने प्रस्तुत संकलन अन्तिम यात्रा पर जाने से पूर्व लिखा था।

प्रेम प्रकाश संदेश परिवार मृतात्मा को अपनी शोक श्रृद्धांजलि अर्पित करते हुए, गुरुदेव भगवान से उसे अपने पावन चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

महाशिवरात्रि पर्व मांगल्य–12 मार्च

शान्ति का प्रतीक है शिव परिवार

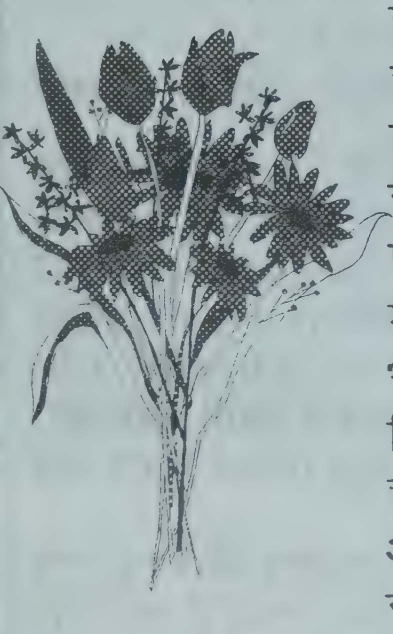
आज अगर देखा जाये तो प्रत्येक के घर–परिवार में आपसी लड़ाई–झगड़े, राग–द्वेष, एक दूसरे के प्रति घृणा, क्लेश छाया हुआ है यह आजकल प्रत्येक घर–परिवार के लिए आम बात हो गयी है। किन्तु क्या कभी विचार किया है भगवान शिव परिवार की ओर अगर आप उस ओर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे तो आपको कुछ अजीब, अलग ही महसूस पड़ेगा। किस प्रकार एक ही परिवार में एक–दूसरे के खतरनाक जानी–दुश्मन होते हुए भी आपस में स्नेह भाव से संयुक्त होकर रहते हैं। आओ भगवान शिव परिवार की ओर ध्यान केन्द्रित करें।

एक और तो मसानी भूतनाथ शंकर, दूसरी ओर हिमालय पर्वत की राज पुत्री पार्वती। कहां भस्मधारी भोले बाबा और कहां राजरानी। भगवान शिव जी शरीर पर भस्म लगाये व मृगछाल धारण किये हुए और पार्वती जी पावडर नवीन वस्त्र एवं स्वर्ण आभूषणों से सुसज्जित। देखो दोनों में कितनी न भिन्नता पाई गयी है। फिर भी अटूट आपसी स्नेह बन्धन। कभी भी आपसी नोंक–झोंक का सवाल ही नहीं उठता। एक ही परिवार में कितने न हिंसक जानी–दुश्मन मूक प्राणी। भगवान शंकर की सवारी बैल (वृषभ) एवं पार्वती जी की सवारी सिंह। वृषभ और सिंह। भगवान के गले में सर्पों का हार एवं कार्तिकेय की सवारी मोर। सर्प और मोर। गणेश जी की सवारी मूषक। सर्प और मूषक। फिर भी सदैव शान्ति बनी रहना।

भगवान भोलानाथ का जैसा अद्‌भुत परिवार है वैसा शायद ही और किसी का होगा। पिता यदि चतुर्मुख थे तो आप स्वयं पंचमुख हो गये और पुत्र को छःमुख बना दिया। बनाते–बनाते दूसरा पुत्र बनाया तो उसका सिर हाथी का रख दिया।

एक ही परिवार में कितने न हिंसक मूक प्राणी, रहन–सहन, शरीर भिन्नता फिर भी आपसी प्रेम स्नेह व शान्ति स्थापना। भला और किसी का ऐसा अद्‌भुत अजीब, अनोखा परिवार हो सकता है ? अतः हमें भी भगवान शिव परिवार से शान्ति स्थापना की शिक्षा अर्जित करनी चाहिये। जिससे हमारे घर–परिवार में सदैव शान्ति बनी रहे। हम भी स्वयं शिव रूप में समा जायें। –'गुरु कृपा'–अमरापुर स्थान, जयपुर

ऋतुराज बसन्त की अनोखी छटा



आया ऋतु बसंतराज खोला कलियों ने घूंघट आज।।
सोंधी सोंधी खुशबू महके। बाग बगीचे उपवन फूले।।
चहुं दिशि लालिमां छाई। खुशियों के गीत गाई।।
पुराने तरू तजने लागे। नव कोंपल खिलने लागे।।
सरसों पहने पीली साड़ी। नवीन पुष्पों की आई फुलवाड़ी।।
पक्षियों के कलरव की बहार। कोयल गाये राग मल्हार।।
शीतल मन्द चले समीर। योगी–बैरागी भये गम्भीर।।
भौरों ने किया मधुर गुन्जार। बसंत पर जाये बलिहार।।
तितलियों का झुण्ड लहराया। सर्वत्र बागनि में मंडराया।।
चन्दन केसर तिलक लगाये। मानव ह्वदय बहु अकुलाये।।
अपूर्व वरदान लिये प्रकृति। फूल रही है सारी सृष्टि।।
रमणीय दृश्य देख मुनिजन। गाये रहे मधुर गीत कविजन।।

–गुरुकृपा श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

ज्ञान–सत्संग–चर्चा यात्रा दर्शन

पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज–सन्त मण्डली का देशाटन प्रेम प्रकाश मंदिर खार (मुंबई) वार्षिकोत्सव संपन्न छत्तीसगढ़ राज्य में उमड़ पड़ा हरिभक्तों का सैलाब

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज देश के विविध भागों में यात्रा कर राह से भटके हुए लोगों को भगवद्राधन की ओर प्रेरित करते हुए, आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अनभव वाणी का प्रचार प्रसार करके उन क्षेत्रों में पावन वातावरण निर्मित कर रहे हैं। जिससे वहां रह रहे अनन्त प्रेमी लाभान्वित हो रहे हैं।

अहमदाबाद में प्रेम प्रकाश आश्रम के लिये भूमिचयन (11 से 12 दिसम्बर)

11 दिसम्बर 2001 अहमदाबाद। पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की आज्ञा अनुसार पूज्य स्वामी जी के सानिध्य में प्रेम प्रकाश सन्त मण्डली व अहमदाबाद के प्रमुख प्रेमियों ने अहमदाबाद जैसे महानगर में प्रेम प्रकाशियों व सिंधी हिन्दू समाज की विशालता को देखते हुए विशाल आश्रम की आवश्यकता के अनुरूप, नगर में अनेक स्थानों पर आश्रम के लिये स्थानों का अवलोकन किया। सरदारनगर व कुबेरनगर से लगभग 4 किलो मीटर मध्य रोबन नगर में नवीन विशाल आश्रम के निर्माण के लिये भूमि का चयन किया गया। इस भूमि अधिग्रहण की औपचारिकताएं पूरी हो जाने के पश्चात शीघ्र ही नवीन प्रेम प्रकाश आश्रम का निर्माण कार्य शुरू किया जावेगा। पूज्य सन्त मनोहर प्रकाश जी, सन्त श्रीमुक्त जी, सन्त हरीओम प्रकाश जी, भक्त वीरभानजी, भक्त मूलचंद जी व सन्त संजय प्रेम प्रकाशी जी स्वामी जी की मण्डली में सम्मिलित थे।

अहमदाबाद में प्रवास व सत्संग का कार्यक्रम जवाहरलाल जी के निवास पर रहा।

उल्हासनगर यात्रा (16–17–18 दिसम्बर)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर–5 के वार्षिक महोत्सव में सम्मिलित होने के लिये पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज मुम्बई से सड़क मार्ग द्वारा मेले में एक दिवस पूर्व ही 16 दिसम्बर को उल्हासनगर पहुंचे।

स्वामी जयमुक्त जी महाराज का वर्सी उत्सव

16 दिसम्बर–उल्हासनगर में श्री राजेश कुमार के निवास पर स्वामी जयमुक्त जी महाराज का वर्सी उत्सव पूज्य महाराज श्री की अध्यक्षता में मनाया गया। इस उत्सव में पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज सहित सन्त मण्डली भी सम्मिलित हुई।

स्वामी जयमुक्त जी महाराज की स्मृति में आयोजित सत्संग सभा को सम्बोधित करते हुए पूज्य गुरुदेव स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने बताया कि सन्तों की स्मृति मन को पावन करके हृदय को शान्त करती है।

जिन जोगिनि जागायो हरि रंग सचु लायो
तनि जोगिनि खे सारे था, नेणे नीर वहनि
पवनि यादि पलि पलि प्रीतम प्यारा
विसारिया न विसरनि सज़ण से सूहारा

उपरोक्त भजन गाकर, सन्तों की महिमा के साथ सत्संग समापन कर पल्लव पाकर महोत्सव की समाप्ति की गयी।

उल्हासनगर आश्रम पर भव्य स्वागत

झूलेलाल मंदिर के पास उल्हासनगर–2 में स्थापित प्रेम प्रकाश आश्रम में 16 दिसम्बर को दोपहर पहुंचने पर पूज्य महाराज श्री व सन्त मण्डली का डॉ. दादी मीरादेवी व प्रेमियों ने भावभीना स्वागत पुष्पहार पहिनाकर किया। यहाँ पर आयोजित सत्संग सभा में प्रेमियों को गुरु महिमा विषय पर अपने ओजस्वी प्रवचनों में स्वामी जी ने बतलाया कि गुरु का धाम व नाम स्मरण से जीव के अन्दर शान्ति प्राप्त होती है।

मुंहिजा सत्गुरु सांई दिलि मां शल नामु न तुंहिजो विसिरे
गुरुदेव मिठा मनठार मुंहिजा सत्गुरु टेऊँराम
इहा दया कयो मूंते, नितु जपिया तव्हांजो नामु

गुरु महिमा का गान कर, हृदय को छूने वाली सरल वाणी में प्रेगियों पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हुए, सत्गुरु महाराज ने सत्संग को विराम देते हुए, पल्लव पाकर सत्संग सभा का समापन किया। उल्हासनगर में कई प्रेमियों के हार्दिक निमंत्रण पर उनके प्रतिष्ठानों, निवास स्थलों को सन्त रज से पावन किया गया, गुरुकृपा का प्रसाद पाकर प्रेमियों के चित्त आनन्द से सराबोर हो गये।

प्रेम प्रकाश आश्रम वार्षिकोत्सव में आगमन

16 दिसम्बर–सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी प्रेम प्रकाश आश्रम, उल्हासनगर पहुंचने पर पूज्य गुरु महाराज जी व सन्त

मण्डली का हार्दिक स्वागत किया गया, सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी देव प्रकाश जी महाराज के नेतृत्व में, वहाँ के ट्रस्टियों, नवयुवक मण्डल व प्रेमियों द्वारा महाराज श्री का दर्शन व सानिध्य पाकर उल्हासनगर आश्रम पर उपस्थित प्रेमियों के हृदय प्रसन्न हो उठे। मुख कमल की भांति खिल उठे ऐसे में कई वरिष्ट प्रेमियों को स्मरण हो आया, कि परम महर्षि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जब इस आश्रम के उद्घाटन के लिये सन्त मण्डली सहित आगमन हुआ था और आज भी ऐसा ही दृश्य प्रतीत हो रहा था। ऐसा प्रेमियों के आपसी वार्तालाप से आभास हो रहा था।

17 दिसम्बर–चार दिवसीय वार्षिक महोत्सव के प्रथम दिवस प्रातःकालीन सत्संग के उपरान्त हवन व ध्वजावन्दन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दोपहर लगभग 3:30 बजे आश्रम से एक विशाल शोभा यात्रा आरम्भ हुई सद्गुरु महाराज व लीलाधारी भगवान के विविध रूपों की झांकियों के साथ ही पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज, व पूज्य स्वामी देव प्रकाश जी महाराज को एक सजे हुए रथ में शोभायमान किया गया था। हरिनाम संकीर्तन के साथ बैण्ड बाजों की मधुर धुनों के साथ शोभायात्रा में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सूर्य के समान तेजोमय प्रतीत हो रहे थे। शोभायात्रा का मार्ग में अनेक स्थानों पर पुष्पवर्षा करके स्वागत किया गया। साथ ही ठण्डाई, शरबत प्रसाद वितरण भी स्थान–स्थान पर किया जा रहा था। स्वामी शान्तिप्रकाश प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र जहां पर अनेक रोगों की चिकित्सा कराकर प्रेमी लाभान्वित हो रहे हैं इस स्थान पर पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली का भव्य स्वागत किया गया।

18 दिसम्बर 2001–कई सन्त महापुरुषों ने आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की जीवन गाथा पर भजनों–प्रवचनों द्वारा प्रकाश डाला। तत्पश्चात् पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने ज्ञानोपदेश देते हुए अपार संख्या में उपस्थित प्रेमियों को बताया कि सन्त चरण पड़ने से यह स्थान अब एक पावन तीर्थ हो गया है, अनन्त संसारी लोग यहां आकर अपने मानव जीवन की सही दिशा पाते हैं। सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, की तपःस्थली यह पावन स्थान आज स्वर्ग से भी अधिक मनमोहक स्थान है, यहाँ उनकी स्मृति से आज भी मन को शान्ति मिलती है।

इस उत्सव में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के अतिरिक्त, सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी स्वयं प्रकाश जी महाराज, स्वामी वेदप्रकाश जी महाराज सन्त मनोहरप्रकाश जी, सन्त जयदेव जी, सन्त अनन्त प्रकाश जी, सन्त हरिओमप्रकाश जी, सन्त रमेशलाल जी, सन्त श्रीमुक्त जी, भक्त वीरभानदास जी आदि सम्मिलित थे। दो दिवसीय प्रवास के पश्चात् पूज्य महाराज श्री 18 दिसम्बर को रात्रि मुम्बई के लिये प्रस्थान किया।

इंदौर में दिव्य सत्संग समारोह सम्पन्न (19 से 22 दिसम्बर)

दिनांक 19.12.01 को सुबह 4 बजे संत शंभूलाल जी एवं नवयुवक मण्डल के सदस्य सद्गुरू महाराज को खंडवा लेने गए। वहां से दोपहर 3.40 पर सदगुरू महाराज अपनी मण्डली सहित काट्यु कालोनी स्थित इन्दौर दरबार में पहुंचे। जहां पर संत शंभूलाल जी ने हार फूलों से एवं समस्त प्रेमियों ने करतल ध्वनि से हर्षित होकर स्वागत किया।

नवयुवक मण्डल, महिला एवं बालिकाओं ने हार फूलों से एवं भजन गाकर स्वागत किया। सदगुरू महाराज के आने पर एक प्रकार से नन्हा सा "कुंभ मेला" स्थापित हो गया सभी की खुशी का पारावार नहीं था। पतझड़ के बाद बहार, सूखे के बाद वर्षा, या फिर भूखे को भोजन खाने के बाद जो तृप्ति होती है ऐसी तृप्ति स्वामी जी के दर्शन के बाद मिली।

संतन चरण पधारिया दया करे मभ धाम
कहे टेऊ पूरन भए आज हमारे काम

दोहाःचरितार्थ सा प्रतीत होने लगा।
प्रसन्नता का वातावरण निर्मित हो गया।

आगमन की खुशी में सहसा भजन की एक कड़ी सभी के मुख पर फूट पड़ी **"आने से तेरे आए बहार दिल तो हो गया है गुलजार।" प्रभु तेरा स्वागत है। इस दरबार में, सांई तेरा स्वागत है इस दरबार में** सभी लोगों ने दर्शन किया तत्पश्चात सदगुरू महाराज ने मण्डली सहित भोजन ग्रहण करके विश्राम किया।

सत्संग सुबह शाम दोनों समय था। सद्गुरू महाराज ने अपने अमृत रूपी वचनों में बताया कि आचार्य सदगुरू टेऊराम जी महाराज का कोई भी छन्द, दोहा, भजन देखें तो उन्होंने अपने मन को ही समझाया है **सत्शब्द सुन श्रवण जागे, हौ मै संसा दुर्मति भागे, हौ में संसा राम–राम भागे, भरम की भीत हरिजप, जाग जिग्यासी, जाग जिग्यासी।** सत्पुरूषों ने सदैव ही हमें सत् असत् का विवेक अपने असल–स्वरूप की पहचान करा कर सभी भेद भ्रांतियां तोड़ने का सदैव ही प्रयास किया है। ये जीव कई जन्मों की कई योनियों की यात्राएं करता हुआ फिर मनुष्य जन्म को प्राप्त होता है इस मनुष्य जन्म को सफल करने पर आपने जोर दिया, कहा कि सत्संग श्रवण, भजन याने जप में अपना मन लगा दो जैसे सदगुरू टेऊंराम जी महाराज ने लगाया। उन्होंने सभी रिश्ते नातों, सांसारिक संबंधों धन वैभव आदि को नश्वर एवं

सारहीन जानते हुये परमात्मा से इस भाँति प्रेम किया कि वे स्वयं परमात्मामय हो गये।

22 दिसम्बर 01 को सांय 7 बजे सत्संग समाप्त कर सद्गुरू महाराज जी ने अपनी मण्डली सहित उज्जैन के लिए प्रस्थान किया। संत शंभूलाल जी एवं नवयुवक मण्डल के कई सदस्य स्वामी जी को उज्जैन–छोड़ने गए। वहाँ से स्वामी जी चैन्नई की ट्रेन से जयपुर रवाना हुए ।

इन चारों दिनों में संत शंभूलाल जी के साथ वरिष्ट प्रेमियों के अतिरिक्त नवयुवक मण्डल, महिला मण्डल की सेवा का सहयोग रहा। हजारों लोगों ने सद्गुरू महाराज के अमृतरूपी वचनों का लाभ उठाया एवं मधुर दर्शन किया।

–निर्मल प्रेम प्रकाशी, इंदौर से

भावनगर में सत्संग का आयोजन

27 दिसम्बर 2001 पूज्य स्वामी जी अपनी मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा मध्यान्ह 12 बजे अहमदाबाद से भावनगर के लिये प्रस्थान किया व सांय 5 बजे भावनगर पहुंचने पर सिंधी कालोनी स्थित स्वामी राम प्रकाश द्वारा बनाया गया प्रेम प्रकाश आश्रम पर स्वामी जी पहुंचे। वहां के श्रद्धालूगणों ने स्वामी जी व अन्य संतों का भावनगर आगमन पर हार्दिक स्वागत किया। निर्धारित कार्यक्रम अनुसार सांय सत्संग का कार्यक्रम 6 से 8.30 बजे तक रखा गया था। सबसे पहले अमरापुर से आये विद्यार्थियों ने भजन सुनाये तत्पश्चात श्री मुक्त मूलचन्द और वीरभान ने सत्संग किया एवं उसके बाद स्वामी जी ने अपने प्रवचनों द्वारा प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि–

पूर्व पुण्य ते पाइया मानुष का अवतार
कहे टेऊँ तिहं सफल कर सुमरो सिरजणहार

स्वामी जी ने बताया कि पूर्व जन्म में कोई ऐसे शुभकर्म किये थे जिससे हमें यह अत्यंत सुन्दर मानुष चोला प्राप्त हुआ है। इस मानुष देही के लिये देवता भी तरसते हैं।

चौरासी लख योनि का मानुष है सिरताज।
कहे टेऊँ हरि भजन कर इस तन में काज।।

इस मानुष रूपी चोले की महिमा सब वेदान्त भी गाते हैं यह मानुष देही चौरासी लाख योनिया भोग कर हम आते हैं तब जाके यह मानुष चोला हमें प्राप्त होता है। और हम इस मानुष चोले को केवल भोग विषय और खाने पीने में ही गंवा देते हैं भोग भोगना खाना पीना सोना उठना ये काम तो पशु भी करते हैं।

निद्रा भोजन भोगमय ये पशु पुरुष
सामान नरन ज्ञान निज अधिकता
ज्ञान बिना पशु जाना

बस एक मनुष में ज्ञान अधिक होता है नहीं तो मनुष भी उस पशु के समान माना जाये। बस एक बुद्धि होने के कारण ही इसे मनुष कहा जाता है। इस मानुष रूपी चोले को सफल बनाना है तो संत महात्माओं या अपने गुरु के द्वारा ही सफल बन सकते हैं।

गुरुदेव मिले अब भाग खुले
जीवन को सफल बनाएं
मन मेरे आनन्द छाये।

इतना कह कर गुरु महाराज जी ने अपनी वाणी को विराम दिया और धुनि आरती करके सत्संग की समाप्ति की गई।

बड़ौदा में मीराकृष्ण मंदिर में गीता जयन्ती महोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। (28 से 30 दिसम्बर 2001)

दिनांक 28 दिसम्बर दोपहर 12:00 बजे भावनगर के प्रेमियों से मिलकर स्वामी जी ने बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया। शाम 5 बजे पूज्य स्वामी जी मीरा कृष्ण मंदिर पहुंचे। जहां सन्त संजय प्रेम प्रकाशी के नेतृत्व में कई प्रेम प्रकाशियों व अन्य भक्तगणों द्वारा गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का एवं संत मनोहरलाल, सन्त बुधरमल, भक्त मूलचंद, सन्त दयाप्रकाश व श्रीमुक्त, वीरभान का माल्यार्पण कर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सुस्वागत किया गया।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार सांय सत्संग का आयोजन 6 बजे से 8 बजे तक रखा गया, सबसे पहले अमरापुर स्थान से आये विद्यार्थियों ने बड़े ही मधुर सुरीले आवाज में भजन सुनाये। तत्पश्चात श्रीमुक्त एवं वीरभान जी के ने सत्संग को अपनी आवाज और करतल ध्वनि के बीच बहुत ही मधुर भजन गाकर प्रेमियों का मन मोहकर सत्संग की मौज बढ़ाई। उसके बाद पूज्य सतगुरु महाराज जी ने अपने अमूल्य वचनों के द्वारा बताया

दोहाः **निश्चल मन से मिलत है, निश्चल आतमराम।**
टेऊँ मन निश्चल करे, पाओ सुख का धाम।।

पूज्य स्वामी जी ने बताया कि अगर उस प्रभु परमात्मा को प्राप्त करना है, तो पहले अपने आपको निश्चल करो और अपने मन को भी उस हंस की तरह बनाओ जो दूध एवं पानी को अलग–अलग कर देता है। उसी प्रकार अपने मन को सांसारिक वस्तुओं से भिन्न करके उस प्रभु परमात्मा की भक्ति में लग जाओ। प्रभु परमात्मा की भक्ति करना, सहज काम नहीं अगर हमारा मन डिगमिगा गया तो हम उस प्रभु परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते हैं।

दोहाः **हरि की भक्ति कठिन है, ज्यों खांडे की धार।**
डिगमिग हो तो गिर पड़े, निश्चल उतरे पार।।

आगे बताया कि हरि की भक्ति करना इतना सरल काम

नहीं है। हम समझते हैं कि अभी तो मेरा बचपन है अभी जवानी पड़ी है और जवानी हमारी भोग भोगने में ही चली जाती है, फिर भी सन्त महात्मा समझाते हैं कि उस हरि की भक्ति करो। फिर सोचते हैं कि अब हम बुढ़ापे में प्रभु परमात्मा की भक्ति करेंगे। लेकिन बुढ़ापे में हमारे सारे शरीर के अंग काम करना छोड़ देते हैं। न तो हम सही तरह से बैठ सकते हैं न हमसे ठीक तरह से बोला जाता है। हमारे पूरे शरीर के अंग ढीले पड़ जाते हैं।

भजनः **सुनले प्रभु प्यारे यह विनय हमारी।**
धर नाथ हाथ मुझ पर मैं हूं शरण तुम्हारी।।

अन्तराः **बचपन गया खेलन में यौवन विषय रसन में।**
कीना न शुभकर्मा को वृथा उम्र गुजारी........

इस तरह से हमारा सारा जीवन यूं ही बीत जाता है।

दोहाः **अगंम्गलीतं पलितं मुण्डम्। दशन विहीनं जातं तुण्डम्।।**
वृद्धोऽयाति गृहीत्वा दण्डम्। तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम्।।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्द भज मूढ़ मते।।

अर्थात हमारे अंग भी सारे गल गये और हमारे सिर के सारे बाल भी उड़ गये। हमारे दांत भी झड़ गये वृद्धावस्था भी आ गयी और हमारे पैसे की शक्ति भी समाप्त हो गयी एवं हमारे हाथों में लकड़ी आ गई। अब भी हमारी आशा तृष्णा ना मरी और हम दिन–प्रतिदिन हम भोगों की और बढ़ते ही जा रहे हैं इतना कहकर स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की।

दिनांक 29–12–2001 को सत्संग का कार्यक्रम प्रातः 8:00 बजे प्रारम्भ हुआ। इसमें पहले बाहर से आये संतों ने सत्संग किया और बाद में स्वामी जी के साथ जो सन्त आये थे उन्होंने अपनी मधुर आवाज में भजन सुनाये। अन्त में स्वामी जी ने ॐ मन्त्र का उच्चारण कर सत्संग आरम्भ किया।

धुनिः **श्री राम जयराम जय जय राम**

गुरु महाराज जी ने प्रेम की व्याख्या बताई।

दोहाः **प्रेम बिना पहुंचे नहीं, को जन हरि के धाम।**
कहे टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरि नाम।।

प्रेम के बिना कोई भी मनुष्य उस भगवान की प्राप्ति नहीं कर सकता है। जो भी उस भगवान से प्रेम करता हैं। भगवान उसकी मनोकामना पूर्ण करते हैं प्रेम के कारण प्रभु ने उस शबरी के झूठे बेर खाये प्रेम की महिमा बहुत भारी बताई गयी है।

प्रेम के आगे ज्ञान–ध्यान भी नहीं चलता है। जब उद्धव गोपियों को अपना ज्ञान सुनाने लगा तो गोपियों ने कहा ये ज्ञान अपने पास रखो हमको तो सिर्फ उस भगवान की एक झलक देखनी है। उधव उनका प्रेम देखकर वापस चला गया।

दोहाः **कहे टेऊँ हरी प्रेम की–महिमा है अधिकाय।**
प्रेम भरे प्रवाह में–ज्ञान ध्यान बह जाये।।

भजनः **इक ही प्रेम प्रभु को भाया।**

उस प्रभु परमात्मा से हमारा सच्चा प्रेम होना चाहिये। दिखावटी प्रेम नहीं होना चाहिये। प्रेम तो उस लैला मजनूं की तरह होना चाहिये या फिर सुहिणी मेहार की तरह हो।

इन्हीं वचनों के साथ गुरुमहाराज जी ने अपनी वाणी को विराम दिया।

29 तारीख शाम को भी इसी तरह सत्गुरु महाराज ने अपने वचनों के द्वारा प्रेमियों को ज्ञान अमृत का पान कराया।

दिनांक 30–12–01 को प्रातः 8:30 बजे से 9:30 बजे तक हवन का आयोजन किया गया। इस हवन में स्वामी जी व सभी सन्त महात्माओं ने व बाहर से आये प्रेमियों ने भी भाग लिया। हवन पश्चात सत्संग का समय रखा गया सब सन्त महात्माओं ने अपने अपने प्रवचनों द्वारा सभी को आनन्दमय किया।

तत्पश्चात पूज्य स्वामी जी ने थोड़ी देर सत्संग करके व पल्लव पहनकर सत्संग की समाप्ति की। बाद में 108 गीतों का भोग पारायण हुआ और श्री गुरु ग्रंथ साहब के पाठों का भोग पड़ा पाठों के भोगों के बाद ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण पश्चात आम भण्डारा शुरू हुआ सांय का सत्संग समय 5 से 8 बजे तक रखा गया। इसमें सर्वप्रथम श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठ का पारायण हुआ, बाद में सब सन्तों ने सत्संग प्रारम्भ किया। तदोपरान्त पूज्य स्वामी जी ने बताया–

दोहाः **सत्गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।**
कहे टेऊं नित सुमति दे, सन्तनि मांहि निवास।।

भजनः **प्रभू दीन दयाल सुमति दे मूंखे**

1. **जहिं सुमति लइ देव उपासी**
   ज्ञानी ध्यानी पित्र पियासी सां गोविन्द गोपाल
2. **जहिं मति सां थिया साधू सूरा**
   मनुष सचा थ्या पण्डित पूरा अहिड़ी पुरुष अकाल
3. **संत गुरु हरि वेदनि अन्दरि**
   पूरण श्रद्धा रहे निरन्तरि हुकुम मञां हरिहाल
4. **कदहीं कहिंजी दिल न दुखायां**
   सभखे शान्ती सुख पहुंचायां खाम उथनि नां ख्याल
5. **कहे टेऊं थे सच में वासो**
   कूड़ कपट खां करियां पासो पूरो करि ही सुवाल

हमें हमेशा गुरुदेव भगवान से सुमति का दान मांगना चाहिये हमारे मन में कभी भी किसी के प्रति बुरी भावना नहीं आनी चाहिये। हमारे हृदय में सुमति का निवास रहना चाहिये। और कभी भी कुमति नहीं आये।

अन्तरा3–**कुमति वञे अन्दरि मां सुमति रहे सदाई**
सुख दुख सभी सहारे बणजूं सदा अचारी
सद्गुरु तुहिंजे द्वारे आयूं अंसी भिखारी

तोखे जाणी दुनियां जो मालिक झोली असां पसारी

गुरु महाराज ने बताया कि संतों का जन्म हमेशा दूसरों के लियें होता हैं। सन्त कभी भी अपना स्वार्थ नही चाहते हैं। जिस प्रकार माता मीरादेवी उच्च विचारों वाली नम्र सहनशील आदि गुण से युक्त थीं।

दोहा : तरूवर सरोवर सन्तजन चौथा बरसे मेह।

परमार्थ के कारणे–चारों धारी देह।।

इतना बताकर गुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर सत्संग समारोह का समापन किया।

–संजय प्रेम प्रकाशी बडौदा से

प्रेम प्रकाश मन्दिर खार (मुम्बई) का वार्षिकोत्सव (1 से 5 जनवरी 2002)

मुम्बई 1 से 5 जनवरी–नववर्षारम्भ पर 1 जनवरी से 5 जनवरी 2002 तक माया नगरी मुम्बई के खार क्षेत्र में तीन वर्ष पूर्व स्थापित श्री प्रेम प्रकाश मंदिर, जिसकी प्रेरणा परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा प्रेम प्रकाशी सन्त मण्डल को वर्षों पूर्व की गयी थी, जिसको साकार रूप दिया गया पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के नेतृत्व में प्रेम प्रकाशी सन्त मण्डल द्वारा तीन वर्ष पूर्व, की स्थापना का तीसरा वार्षिक महोत्सव श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर विशाल सन्त–समागम मे पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के अतिरिक्त पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज, स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज, स्वामी जयदेव जी महाराज, स्वामी हरिओमप्रकाश जी महाराज, सन्त रमेशलाल, सन्त बुद्धप्रकाश जी के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध साहित्यकार–समाज सेवी डॉ. दयाल 'आशा' व अन्य गुणीजनो ने अपने सारगर्भित प्रवचनों के द्वारा जन–जन के हृदय में हरिनाम का शंखनाद करते हुए, सत्मार्ग पर चलने का आव्हान किया। देश–विदेश से आए श्रद्धालुओं व सत्संग मे सम्मिलित स्थानीय भक्तों के लिए भण्डारे की सुन्दर व्यवस्था प्रतिदिन दोनों समय थी, इस महोत्सव के दौरान ही लंदन से आये प्रेमी खुशी–बिन्दु की सुपुत्री की सगाई रस्म भी जयपुर निवासी प्रेमी से सद्गुरु महाराज जी के सानिध्य में संपन्न हुई। जयपुर से श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल व उल्हासनगर आश्रम से प्रेम प्रकाश नवयुवक मण्डल ने भी सोत्साह मेले में भाग लिया। पूज्य सदगुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने प्रेमियों को भगवतामृत का पान कराते हुए, अपने ओजस्वी व्याख्यान मे कहा कि, शिष्य को मन बुद्धि गुरु महाराज के चरणों में समर्पित कर देना चाहिये, इससे शिष्य को इस माया रूपी अथाह समुद्र से पार कराने का दायित्व गुरु का हो जाता है, प्रातःकालीन सत्संग खार आश्रम पर व सायंकालीन सत्संग लोकहित कुटीर पर होता था।

मुम्बई खार में मनाये गये वार्षिकोत्सव में सत्संग हवन, ध्वजावन्दन का आंखों देखा प्रसारण लाईव टेलीकास्ट स्थानीय केबल पर करके खार व समीपस्थ क्षेत्रों में भी केबल कर्ताओं ने हजारों हजारों प्रेमियों को समारोह में सम्मिलित किया।

कुम्भ मेला आयोजन के लिये नासिक आगमन (7 से 8 जनवरी)

7 जनवरी 2002 प्रेमप्रकाश मंदिर खार (मुम्बई) का वार्षिकोत्सव मनाकर पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली सहित मुम्बई से सड़क मार्ग द्वारा प्रेम प्रकाश आश्रम, डांडोरी नाका (पंचवटी) नासिक पधारे। यहां पर स्वामी अनन्त प्रकाश जी महाराज के नेतृत्व में नासिक जिले में रह रहे प्रेमियो ने महाराज श्री का भव्य स्वागत किया। ज्ञातव्य हो कि वर्ष 2003 में कुम्भ महापर्व नासिक में आयोजित है। कुम्भ पर्व मे प्रेम प्रकाश मण्डल की छावनी (अन्नक्षेत्र) के प्रबंन्धन के लिये पूज्य महाराज श्री का नासिक आगमन हुआ। इस अवसर पर आयोजित विशेष सत्संग सभाओं में पूज्य स्वामी जी ने अपनी मृदुल व ओज से परिपूर्ण वाणी में प्रेमियों को बताया कि हमें ईश्वर मिलन हेतु मानव जीवन मिला है चौरासी लाख योनियों मे मानव योनि को व्यर्थ ही न गंवायें, सन्तों व सद्गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करके अपने इस अमोलक जीवन को सेवा सत्संग सुमरण की त्रिवेणी में सार्थक करें।

रायपुर में अपूर्व स्वागत, शोभायात्रा (9 से 11 जनवरी)

9 जनवरी 2002 नासिक यात्रा को विराम देकर पूज्य सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज 9 जनवरी को नवगठित प्रदेश छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर, रेल मार्ग द्वारा सन्त मण्डली सहित पधारे। यहाँ पर अपार संख्या में रायपुर व समीपस्थ क्षेत्रों के प्रेमी पूज्य स्वामी जी की अगवानी के लिये व्याकुलता से प्रतीक्षारत थे। गगनभेदी जयघोष से सारा स्टेशन परिसर गुंजायमान हो उठा। आने जाने वाले यात्री भी कौतुहलवश जानकारी पाकर, महाराज श्री व सन्त मण्डली के दर्शन कर अपने को कृतकृत्य मानने लगे, विभिन्न चित्ताकर्षक सुगंधित फूलों से बनी असंख्य पुष्पमालाओं ने पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डल का सानिध्य पाकर अपने आपको और अधिक सुन्दर सुगन्धमय कर लिया। वाहनों के काफिले में एक शोभायात्रा के रूप मे पूज्य महाराज श्री व सन्त मण्डली को शैलेन्द्र नगर स्थित आश्रम पर लाया गया, जहाँ पर विशाल संख्या मे उपस्थित महिलाएें बच्चे सन्त मण्डली के दर्शन पाकर फूले न

समा रहे थे। सत्गुरु के उपकार अनन्त है, विषय पर प्रवचनों में पूज्य स्वामी जी प्रेमियों को संबोधित करते हुए बताते हैं कि

मूंखे सत्गुरु दिनो ज्ञान, मन शीतल थी प्यो।

भजन का सारांश समझाते हुए पूज्य गुरु महाराज जी ने बतलाया कि–

कबीर सूता क्या करे, उठके जपहिं मुरार।
इक दिन सोवन होयगा, लम्बे पाँव पसार।।

कुछ संतो ने आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु सर्वानंद जी महाराज, सद्गुरु शांतिप्रकाश जी महाराज, सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। पूज्य स्वामी ने कहा सद्गुरु शान्तिप्रकाश जी महाराज की यह स्थली स्वर्ग से भी ज्यादा मन मोहक है। सत्संग के दौरान पूज्य स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में कहा–प्रभु परमात्मा से क्या माँगे?

सुमति का दान माँगे।

जागना है तो अज्ञान की निद्रा से जागे।

यमराज नचिकेता का प्रसंग बड़ी सरलता से समझाते हुए स्वामी जी ने कहा। राजाई सुख नहीं, दीर्घ आयु भी नहीं, इन्द्र पद भी नहीं, नचिकेता ने कहा मुझे सिर्फ आत्मज्ञान चाहिये।

मोती नकी लाल घुरां, मदियूं नकी माल घुरां
राग नकी ताल घुरां, रस न रसाल घुरां
स्वर्ग न पाताल घुरां, नकी घणां स्वाल घुरां
दर्शन जी आश गुरु, दर्शन जी आश
राम सां मिलाई मूखे, श्याम सां मिलाई

भजनों दृष्टांतों द्वारा आत्मज्ञान के विषय में समझाया। सत्संग समापन के पश्चात सामूहिक गायन से वातावरण गूंज उठा इस अवसर पर पूज्य स्वामी के द्वारा किये डान्डिया नृत्य ने सबके मन को मोह लिया।

सांयकालीन सभा में मंगलाचरण के पश्चात इस श्लोक भजन से पूज्य महाराज श्री ने प्रवचन प्रारंभ किया

शरनि पड़ियो छाडियों नहीं, बड़ी बड़न की ओट।
जिउ पहिलाज गिरते गिरयो, गिरत न लागी चोट।।

भजन : आहिन तुहिंजे आसरे जे।

जो प्रभु की शरण में है। जिनका प्रेम अटल है। जिनकी नित्य शुभ कर्मो में रूचि है तो यह जीव परमात्मा तक पहुंच सकता है। प्रार्थना और पुरुषार्थ से ही इस जीव को सच्चा लाभ होगा।

प्रेम बिना पहुंचे नहीं को, जन हरि के धाम।
कहे टेऊँ तातें जपो, प्रेम सहित हरि नाम।।

यह मन अति चंचल है। नित्य अभ्यास वैराग नाम स्मरण से ही वश में होगा। ज्ञान में स्थिर होगा इस भजन को गाकर सत्संग समापन किया।

रायपुर की यात्रा पूर्ण कर, लिकिंग एक्सप्रेस से सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने संत मण्डली सहित भाटापारा की ओर प्रस्थान किया।

भाटापारा में माता समुझबाई का वार्षिकोत्सव (12 से 14 जनवरी)

12 जनवरी 2002 लिंकिंग एक्सप्रेस से भाटापारा पहुंचने पर पूज्य सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्तमण्डली का पुष्पवर्षा करके, सद्गुरु भगवान का जयघोष गुंजाते हुए, भावपूर्ण स्वागत किया गया। रेल्वे स्टेशन से पैदल ही चलकर नगरवासियों को सन्तदर्शन का लाभ देते हुए पूज्य गुरुदेव जी मण्डली सहित माता देवालयपारा स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पहुंचे, आश्रम पहुंचने के उपरान्त प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली द्वारा भाटापारा नगरवासियों की ओर से भव्य स्वागत किया गया। डॉ. वाशदेव ठाकुर, नामदेव पारप्यानी, करतारलाल, निर्मल तलरेजा अमरलाल ठाकुर, मुरलीधर हबलानी, स्वदेश गुरुजी, रावलदास, ठारूमल माखीजा, परसराम मन्धानी, घुमणमल ज्ञानी, लक्ष्मणदास थारानी व महिला मण्डली की ओर से मोहिनी दीदी स्वागत करने वालों में प्रमुख थे।

आज दोपहर 11 बजे प्रेम प्रकाश मण्डल, भाटापारा द्वारा आयोजित विशाल नेत्र शिविर का समापन समारोह पूज्य स्वामी जी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर पूज्य सन्त मण्डल के अतिरिक्त श्री शिवरतन शर्मा (विधायक), श्री पी.एस. नेताम (अनुविभागीय अधिकारी) भी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे, श्री परमानन्द जी बालानी (अध्यक्ष सिन्धी सेन्ट्रल पंचायत, भाटापारा), समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र (सरकारी अस्पताल) के परिसर में आयोजित नेत्र शिविर व पूरे वर्षभर में प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा जनोपयोगी कार्यो की जानकारी डॉ. वाशदेव ठाकुर द्वारा दी गयी। सद्गुरु महाराज के कर कमलों से डाक्टर्स, स्टाफ व सेवाधारियों को स्मृति चिन्ह व पाखर प्रदान की गयी। सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि निर्मल मन व निस्वार्थ भाव से की गयी जीव सेवा, मानव के सदोगुणी होने का संकेत है एवं ईश्वर–प्राप्ति में सहायक है। सभी सेवाधारियों–डॉक्टरों को साधुवाद देते हुए भविष्य में भी इस प्रकार के लोकहितकारी कार्य करने की प्रेरणा दी। आरती–पल्लव उपरान्त प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन संपन्न हुआ। इस नेत्र शिविर में 121 नेत्र रोगियों के सफल ऑपरेशन किये गये थे।

सांयकालीन सत्संग सभा रात्रि 8 बजे प्रारम्भ हुई सन्त झामनदास, सन्त मनोहरलाल जी ने सुमधुर स्वर में कीर्तन

गायन भजनों से प्रेमियों का मन नाम सुमरण की ओर मोड़ने का प्रयास किया। तत्पश्चात पूज्य स्वामी जी ने सत्संग प्रारंभ करते हुए अपने प्रवचनों में कहा–

दोहा–रखियो जहिं नातो, सामी सत्पुरूषनि सां,
तहिं लघें माया मोह खां, पूर्ण पद पातो।
चीटींअ ऐं कुन्चर में, साहिब सुञातो,
सो वाए ना वातो, रंहे शुभ ज्ञान में।।
संत गुरु परमात्मा, साचे संगी जान।
कहे टेऊँ इन तीन से, करले प्रेम प्रधान।।

गुरु की सबसे बड़ी कृपा है। अपने आप को पहचानना, बचपन, जवानी, बुढ़ापा शरीर की अवस्था है। स्वरूप की नहीं, उस स्वरूप को जानने के लिये संतों का संग, नाम स्मरण, शुभ कर्मो का साथ लेकर इस देह से यात्रा शुरू करनी है। विदेह तक पहुंचना है। तभी जीवन सफल होगा। जीते जी मुक्ति,

साधो जीवत ही तज आशा, मुऐ मुक्त गुरु कहें स्वार्थी
झूठा दे विश्वासा, देखा जग में संत उदारी।
सारग्राही सत् विचारी।। सच ही देवे, सच ही लेवे।
सच से देखे, सच ही सेवे।। सम दभ आदिक षट गुणधारी

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इसे अपनाकर सत्य की खोज की। लेकिन मन की चालाकी–

मन जानत सब बात, जान बूझ अवगुण करे।
काहे की कुशलात, हाथ दीप कुऐं गिरे।।

संसार् से भागना नहीं, जागना है। गुरु की ओट लेकर मन को बदलना, स्वभाव को बदलना, नाम का आधार लेकर दृढ़ता से रहना, यही सबसे बड़ी गुरु कृपा है।

देई लत् न बोरि मानुष देहि खे,
जहिखें चाहिन देवता, ट्रेटीह करोड़
मिली साध संगत सां, मन जूं वागियूं मोड़
जागी बंधन छोड़ि, पहिजें हथें पहिजां

खुद ही काटने हैं बंधन खुद को ही समर्थ होना है। खुद की कमजोरियों को ढकना नहीं है। निकाल बाहर करना है। श्री गुरु महाराज ने एकान्त में चिन्तन किया। सार को लिया। व्यर्थ को छोड़ दिया। उत्सव के आखिरी दिन तारीख 14 को सभी पाठों के भोग आरतियों के पश्चात माता समुझबाई के गुणों का व्याख्यान हुआ। गुरु महाराज की पावन लीलाओ पर प्रकाश डाला गया। तदुपरान्त पल्लव पाकर उत्सव समापन की घोषणा की फिर सबसे विदाई ले लिंकिंग एक्सप्रेस से कोरबा के लिये प्रस्थान किया। अश्रुपूरित नेत्रों से प्रेमियों ने संत मण्डली एवं पूज्य स्वामी जी को विदा किया। फिर रास्ते में कई स्टेशनों पर प्रेमियों को दर्शन देते हुये पल्लव प्रार्थना करते हुए कोरबा पहुचे।

कोरबा में दिव्य सत्संग–ज्ञान यज्ञ (15 से 17 जनवरी)

15 जनवरी 2002 नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य का एक प्रमुख जिला कोरबा जहां पर सिन्धी समुदाय काफी संख्या में व्यवसाय करते हुए निवास करता है, पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व प्रेम प्रकाश सन्त मण्डली के कोरबा आगमन से केवल सिन्धी समुदाय ही नहीं अपितु वहां रह रहे अन्य समुदायों के लोग भी बड़ी संख्या में सन्त–दर्शन पाकर मोतियों समान उनके अमोलक वचन सुनकर अपने को कृतकृत्य मान कर खुशी से फूले न समा रहे थे। चारों ओर जैसे प्रसन्नता–आनंद का वातावरण निर्मित्त हो गया था। वयोवृद्ध माता पम्मीबाई के नेतृत्व में प्रेम प्रकाश आश्रम रानीरोड कोरबा में नगर वासियों ने महाराज श्री व सन्त मण्डल का भावभीना हार्दिक अभिनन्दन किया।

सांयकालीन सत्संग सभा में सन्त श्री मुक्त, भक्त वीरभानदास, सन्त लक्ष्मण व सन्त परसराम ने आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की कीर्ति का गुणगान किया, तदुपरांत सन्त हरिओमप्रकाश जी ने जीवन के लक्ष्य राम के नाम की महिमा पर प्रकाश डाला, इसके पश्चात पूज्य स्वामी जी ने अपनी सारगर्भित वाणी में प्रेमियों को बताया कि, जिन्होंने मन को सद्गुरु को सौंप दिया, परमात्मा को सौंप दिया वे पार उतर जायेंगे, इसलिये अपने मन को सद्गुरु को समर्पित करें। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि अर्जुन मन को वश में कर, अभ्यास तो कर, परन्तु साथ ही अपने आपको मुझे समर्पित कर दे। मेरे परायण हो जा, इसके बाद भार मेरा है। तुम्हें चिन्ता की आवश्यकता नही।

अन्त में (पल्लव) सर्वजनहितार्थ प्रार्थना करके कोरबा के सत्संग महायज्ञ का समापन किया गया। कोरबा आश्रम की संचालिका दादी पम्मी देवी ने रूधें कण्ठ से अपने लिये मारू भजन गाते हुए सद्गुरु महाराज जी व सन्त मण्डली को प्रेमियों सहित सजल नेत्रों से विदाई दी।

बिलासपुर में हार्दिक अभिनन्दन (18 से 21 जनवरी 2002)

18 जनवरी–02 को 12:30 बजे दोपहर को पूज्य स्वामी जी बिलासपुर पहुंचे। जहाँ पर प्रेमी मनोहर पमनानी व उनके परिवार द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। निर्धारित कार्यक्रमानुसार सांय 4 से 6 बजे तक निवास स्थान पर ही सत्संग का आयोजन रखा गया।

सर्वप्रथम श्री वरियलदास (चाम्पा) और श्री गुरुमुखदास (जयपुर) ने अत्यन्त मधुर वाणी में भजन सुनाये इसके पश्चात पूज्य स्वामी जी के साथ आये सन्तो ने सत्संग किया। सन्त

मनोहरलाल जी ने नाम स्मरण की महिमा बताई तथा बताया कि सतगुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने भी एक नाम का आधार लिया था इसलिये, आज उनका इतना यशोगान हो रहा है अगर हम भी उस प्रभु परमात्मा केनाम का स्मरण व गुणगान करेंगे तो हमारा भी बेडा इस ससार रूपी भवसागर से अवश्य पार हो जाएंगा।

उसके उपरान्त पूज्य महाराज श्री ने अपने प्रवचनों में कहा कि मनुष्य को अभिमान नहीं करना चाहिये।

भजन :

थलुः मनुमारे हलु, हठु हारे प्रभूअ जेतूं पार दे।

1. **नीवों दरू दातार जो,कन्धु ठारे हलु..हठु हारे हल**
2. **मालिक बेपरिवाहु थई, भउ धारे हलु...हठु हारे हलु**
3. **मुड़िदनि जे त मकान में, सतु सारे हलु......हठु हारे हलु**
4. **कहे टेऊं कति कम्बु भी, जीउ दारे हलु....हठु हारे हलु**

दोहा–मैं मेरा गुरु चरण मे दीजे भेंट चढ़ाये।
कहे टेऊं तिहं लोक में--जीवन मुक्त हो जाये।।

क्योंकि परमात्मा को अभिमान स्वीकार नहीं है।

हरि से गीरभ कियो तिनि हारियो।

समुद्र ने अभिमान किया कि मेरे पास अथाह जल राशि है। तो परमात्मा ने उसके जल को खारा कर दिया, इस कारण कोई भी समुद्र का जल नही पीता। परमात्मा के निवास स्थान का द्वार बहुत छोटा है, यदि वहाँ झुककर अर्थात अहंकार का त्याग करके जायेगे, तो प्रवेश में कठिनाई नहीं होगी। यदि अहंकार सहित प्रवेश करने का प्रयास करेंगे, तो सिर फूटेगा, परन्तु प्रवेश भी नहीं मिलेगा।

श्लोकः अभिमानं सुरापानम् गौरवं नर्क रौरवम्।
प्रतिष्ठा सूकरीविष्ठा त्रीणिं त्यक्त्वा सुखीभवेत्।।

वैसे भी अहंकार करे तो किस पर? शरीर पर? तो सतगुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज अपनी माता कृष्णा देवी को सुनाते हुये पूछते हैं कि

भजनः बाबा दादा कादे वियड़ा, धरतीअ अंदर दाखिल थियड़ा
माता पवन्दी वजें चलि–चलि–जे झली तवि कीन की
रहन्दुसि–माता दे खुश्या मोकल।।

अर्थात्--हमारे बाप दादा जो कल तक हमारे साथ थे वे आज कहा है। उन सब को मौत खा गई। फिर भी हम सोचते हैं कि हम जीयेंगे नहीं। इस तरह हमारे सामने मौत होते हुए भी दिखाई नहीं देती, परन्तु जिस पर गुरु की कृपा होती है, उसे ही मौत प्रत्यक्ष दिखाई देती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि–

दोहा– तुलसी गुरु प्रसाद ते, ऐसी सूझ पडी।
नहीं भरोसा काल का, आगे मौत खडी।।

गुरु महाराज जी ने इतना कहकर पल्लव पाकर सत्सग की समाप्ति की।

झारखंड की राजधानी रांची और उड़ीसा राज्य के बरगढ़ नगर में प्रथम आगमन पर पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का भव्य स्वागत

दिनांक 18–1–02 को बिलासपुर के प्रेमियों से विदाई लेकर पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज अपनी संत मण्डली सहित रात्रि 12:30 बजे ट्रेन द्वारा बिलासपुर से रांची के लिये प्रस्थान किया। लगभग 12 बजे मध्यान्ह 19 तारीख को रांची रेल्वे स्टेशन पर पहुंचे। जहां पर प्रेमी बसंत कुमार मेघानी व अजीत कुमार तथा उनके परिवार द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। स्टेशन से स्वामी जी बसंत कुमार के निवास स्थान पर पहुंचे वहां पर सभी सन्तों व मेहमानों को ठहरने के लिये आसन दिया गया। दिनांक 19–1–02 को पूज्य गुरु महाराज जी रांची के प्रेमियों के साथ रांची शहर के भ्रमण के लिये निकले। सुप्रसिद्ध मन्दिर जानकी तपोवन में दर्शन किये तथा उसके बाद अनाथ बालक निवेदिता करूणा आश्रम में गये वहां के व्यवस्थापक श्री महेश कुमार ने स्वामी जी का आदर सत्कारकिया व आश्रम का पूरा परिचय दिया। बाद में गुरु महाराज जी ने सभी बच्चों को आशीर्वाद व कुछ अच्छी शिक्षाएं बताई और प्रसाद बांटा और वापिस निवास स्थान पहुंचे।

दिनांक 20–1–02 को सत्संग का कार्यक्रम ओसवाल भवन में प्रातः 9 बजे से 10:30 बजे तक रखा गया। सर्वप्रथम अमरापुर स्थान जयपुर के विद्यार्थियों द्वारा प्रार्थना की गयी। उसके बाद भक्त मूलचन्द जी ने सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज की महिमा का गुणानुवाद किया। तत्पश्चात प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज ने अपनी अमृतमय वाणी में श्रद्धालुगणों को समझाया कि–

दोहा– कहे टेऊं हरि नाम जप, भूलो न क्षण एक।
भोगत–भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक।।

हमें इस मानुष रूपी चोले में कभी भी उस प्रभु का परमात्मा का नाम नहीं भूलना चाहिये।

भजन-- नाम हरि का भुला न देना। जीवन अपना रूला न देना।
अन्तरा–मानुष चोला दुर्लभ पाया, राम भजन बिन वृथा जाया।
ऐसा वेला हाथ न आवे, क्यो तुम मूर्ख पाप कमावे
पाप करे तन गंवा न देना।।

पूज्य स्वामी जी ने बताया कि इस मानुष जन्म में ही हम उस प्रभु परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। जिस प्रकार किसी भी स्थान पर पहुंचने के लिये हमें साधन की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार ये मानुष जन्म भी एक साधन है। जिससे

हम प्रभु नाम का सुमरन कर सकते हैं। चौरासी लाख योनियों के चक्कर लगाने के बाद ये मानुष जन्म में मिलता है और हम इस मानुष जन्म मैं विषय भोग की निद्रा में मस्त हो रहे हैं। मानव चोले में हरि का भजन कर सकते हैं।

दोहा– चौरासी लख योनि का, मानुष है सिरताज।
कहे टेऊं हरि भजन का, कर इस तन में काज।।

सद्‌गुरु महाराज जी ने कहा ये हमारा शरीर क्षण भंगुर है और इस शरीर को रात दिन रूपी दो चूहे हमारे जीवन को धीरे–धीरे समाप्त कर रहे हैं। भगवान का नाम सुमरन करने में त्रिगुणी माया बीच में अड़चन डालती है। भगवान श्री कृष्ण चन्द्र गीता के सातवें अध्याय में अर्जुन को बताते हैं।

श्लोकः दैवी ह्रेषा गुणमयी, मम माया दुरत्यया।(सातवां अध्याय)
मामेव ये प्रपद्यन्ते, माया मेतां तरन्ति ते।।

क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्‌भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है, परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं। वे इस माया को पार कर जाते हैं। अर्थात् संसार सागर से तर जाते हैं।

भजनः प्रबल है यह हरि की माया, जिसने सब जग जीव भुलाया।
अन्तराः कहे टेऊं इन सब को लुटा, कोई इससे विरला छुटा
जिसने हरि का चरण ध्याया..........

आगे फरमाया कि हमें इस संसार से जागना है ना कि भागना है। तभी हम इस विषय भोग की निद्रा से जाग सकते हैं।

दोहाः श्वास श्वास सुमरन करो वृथा श्वास न कोय।
न जाने के अन्त का यही श्वास मत होय।।

अगर मन को हमने संसार के भोग विषयों में फंसा दिया तो हमारी इस संसार से मुक्ति हो सकती है। इतना बताकर स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की।

बरगढ़ में सत्संग वर्खा (22 से 23 जनवरी)

दिनांक 21–1–02 को पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपनी मण्डली सहित बरगढ के लिये प्रस्थान किया। दिनांक 21–1–02 रात्रि को 11:15 बजे बरगढ़ पहुचे। बरगढ़ के कई प्रेमियों ने जयघोष और माल्यार्पण कर सद्‌गुरु महाराज जी ओर उनके साथ आये संतों का हार्दिक स्वागत किया।

ठहरने की व्यवस्था श्री टीकमदास आसुदानी उनके सुपुत्र श्री हरीराम के निवास स्थान पर रखी गयी।

दिनांक 22 जनवरी 2002 को प्रातः स्वामी जी व संत एवं कई प्रेमी बरगढ़ घूमने के लिये निकले। वहाँ पर शंकर भगवान का मन्दिर सिद्धेश्वर देखा व श्री साईं बाबा के मन्दिर का दर्शन किया ये दोनों मन्दिर बरगढ़ (उड़ीसा) के प्रसिद्ध मन्दिर हैं। तत्पश्चात् बरगढ़ स्थित कई पवित्र स्थानों के दर्शन किये।

22 जनवरी 2002 शाम को निर्धारित कार्यक्रमानुसार सत्संग का आयोजन सिन्धु भवन धर्मशाला में रखा गया। सत्संग का समय 5 से 8 बजे तक रखा गया। इसमें सर्वप्रथम महिला मण्डली ने भजन सुनाये। उसके बाद सन्तों ने प्रभु परमात्मा के आदर्श एवं सुन्दर लीलाओं का वर्णन किया।

तदोपरान्त पूज्य सद्‌गुरु महाराज जी ने अपने प्रवचनों में बताया कि–

दोहाः दलपत एके स्वास को तीन लोक नहीं मोल
वृथा काहे गंवायो ऐसो स्वास अमोल

भजनः सफल करले श्वास, रे तुम हरी भजन से ।।टेक।।
अन्तराः मोक्ष द्वारे मानुष तन में, ज्ञान करो प्रकाश ।।1।।

स्वामी जी ने बताया कि एक दिन इस मानुष रूपी चोले के प्राण पखेरू उड़ जायेंगे इस शरीर के साथ माया–काया कुछ भी चलने वाली नहीं है। ये काया माया तो कपूर की तरह उड़ जायेंगे। नारायण स्वामी ने बताया

दोहाः धन यौवन उड़ जायेंगे–जेसे उड़त कपूर।
नारायण गोविन्द भज–क्यों जग चाटे धूल।।

हमारे शरीर के साथ हमारा धर्म ही साथ जाता है। और धर्म के लिये ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है जब तक ज्ञान नहीं हुआ तो हमें धर्म के विषय में भी पता नहीं चलेगा। ज्ञान के लिये उस भगवान का नाम सुमरन करना पड़ेगा। हजारों लाखों जन्म हो जाते हैं। लेकिन ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। यह हमारा शरीर पंच भौतिक तत्व से बना हुआ है।

रामायण की चौपाई : क्षिति जल पावक गगन समीरा।
पंच रचित यह अधम शरीरा।।

अपने मानुष चोले को सफल बनाना है संसारी वस्तुओं से किनारा करना होगा।

दोहाः न जग छोड़ो न हरि भूलो, कर्म करो जिन्दगानी।
इस दुनिया में ऐसे रहो, जैसे कमल रहता है पानी में।।

सबसे बड़े दुश्मन हमारे बाहर के दुश्मन नहीं हैं। अन्दर के विचार अर्थात अन्तर्मन में छुपे हुए शत्रु अच्छे बुरे विषयों की तरफ इन्द्रियाँ जब भागती हैं। तो वही हमारी सबसे बड़ी शत्रु है। इन्द्रियों की दिशा बदलनी चाहिये।

इन्द्रियों को वश में करने के लिये हमें अपने मन पर संतुलन बनाना होगा। अगर हमने अपने मन पर विजय प्राप्त कर ली तो हमारा जीवन सफल हो जावेगा।

उसके लिये 1. सुमरन 2. प्रार्थना 3. पुरुषाथ की आवश्यकता है।

चौपाईः साधन धाम मोक्ष कर द्वारा, पाय न जिंह परलोक सुधारा।

अर्थात जो ऐसा सुन्दर मनुष्य तन प्राप्त करके परमात्मा

की भक्ति नहीं करता। वह जीव जन्म–मरण के दुखों को प्राप्त होता है। और उस प्रभु परमात्मा के सामने सांसारिक मनुष्य की चतुरता नहीं चलती है। गुरु महाराज जी ने एक दृष्टान्त के माध्यम से समझाया।

दृष्टान्तः एक अफलातून नामक मूर्तिकार था। वह इतनी सुन्दर मूर्ति बनाता था कि कोई अगर उसकी मूर्ति देखता था तो लगता था कि सचमुच में कोई व्यक्ति बैठा हुआ हो। उस मूर्तिकार की मित्रता काल देवता से थी। एक दिन उस अफलातून ने अपने मित्र से कहा कि तुम मुझे मारना नहीं। इस पर काल देवता ने कहा कि मेरी जो नौकरी है वह तो मैं पूरी करूंगा चाहे वह मेरा दुश्मन हो या फिर मित्र काल देवता ने कहा कि मैं इतना कर सकता हूँ कि जब तुम्हारी मृत्यु आने वाली होगी उसके सात दिन पहले मैं तुम्हें बता दूंगा कि तुम्हारी मृत्यु एक हफ्ते बाद आयेगी। जब अफलातून की मृत्यु के सात दिन रह गये तो काल देवता ने आकर उसे कह दिया कि बाकी एक सप्ताह बचा है। तब अफलातून ने अपनी होशियारी से पचास मूर्तियाँ अपने रंग रूप जैसी बना दीं जब काल उसको लेने आया तो देखा की पचास अफलातून खड़े हैं। तो काल देवता असमंजस में पड़ गया तब काल देवता ने भगवान को जाकर सारी घटना सुना दी। तब भगवान अफलातून के घर पर एक सेठ का रूप बनाकर गया। भगवान ने सारी मूर्तियों का निरीक्षण किया अब उस सेठ रूपी भगवान ने कहा कि जिसने भी मूर्तियाँ बनाई हैं इन मूर्तियों में एक कमी छोड़ दी है इस पर उन मूर्तियों के बीच में खड़ा अफलातून अपनी बुराई सुन नहीं सका और वह एकदम उन मूर्तियों के झुण्ड में से बाहर निकल आया और बोला सेठजी कौन सी कमी छूट गयी है। इस पर भगवान बोले कि बस यही कमी रह गयी है इतने में काल देवता आ गया और अब चलो तुम्हारा सफर पूरा हो चला।

इसलिये कहा है कि भगवान के सामने कभी भी चतुरता नहीं दिखानी चाहिये। इतना बताकर पूज्य स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की।

दिनांक 23–1–02 को भी सायंकालीन सत्संग का समय 5 से 8 बजे तक रखा गया। सर्वप्रथम महिला मण्डली ने भजन सुनाये। सायंकालीन सन्तों ने प्रवचन में बताया कि

दोहाः **मानुष देह अमोल है, मिले न बारम्बार।**
ज्यों फल पाके भूमि गिरे, बहुरि न लागहि डार।।

संतों ने दृष्टांत देकर समझाया कि जैसे वृक्ष से फल पककर नीचे गिरता है और गिरने के पश्चात फिर वृक्ष में नहीं लग सकता उसी प्रकार यह जो मानुष देह है एक बार हाथ से निकल जाने के पश्चात परमात्मा से मिलने के सब दरवाजे बन्द हो जाते हैं।

तदुपरान्त स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में सभी प्रेमियों को संबोधित करते हुए बताया

दोहाः **पूरब पुण्य ते पाईया मानुष का अवतार।**
कहे टेऊं तिंह सफल कर सुमरे सिरजणहार।।

भजनः **मिली दुर्लभ मानुष देही थई। जहिंमें मैं साज सुखनि जा सभेई थई।**

अन्तराः **हिन देहीअ खातिर देव सिकनि छदे स्वर्ग अची इंसान बणनि।**
तोखे पापी कीअं था पाप वणनि जूणि म जेहड़ी तेहड़ी अथई।

परमात्मा ने हमको ये सुन्दर जीवन व देह दी है। जिसके लिये स्वयं देवता भी तरसते हैं। आज उसे पाकर भी हम आनन्द की अनुभूति नहीं कर पा रहे हैं तो इसमे दोष किसी अन्य का नहीं हमारा है।

• परमात्मा ने हमको विचार करने की शक्ति दी है ना कि भोग पदार्थों के लिये और जिसमें विचार करने की शक्ति नहीं है तो फिर पशु और मनुष्य में क्या अन्तर हुआ। निद्रा, भोजन, भोग विलास और भय ये बातें मनुष्य और पशुओं में बराबर होती हैं। केवल मनुष्य में विचार करने की शक्ति होती है। और वह पशु में नहीं होती।

श्लोकः **निद्रा भोजन भोग भय, ये पशु पुरुष समान।**
नर न ज्ञान निज अधिकता, ज्ञान बिना पशु जान।।

आगे बतलाया कि जब तक हमारे मन में 'परमात्मा' मिलन की प्यास नहीं जागृत होती या अपने निज स्वरूप का ज्ञान नहीं होता। तब तक यह मनुष्य होते हुए भी पशु के समान है। बल्कि पशु तो जीते जी तो क्या मरने के पश्चात भी काम आता है। आपने सुना होगा कि पशुओं की हड्डियाँ एवं खाल से कई तरह की चीजें बनती हैं। अगर मनुष्य बिना निज स्वरूप के ज्ञान के इस संसार से अपनी यात्रा पूरी करता है तो वह पशु से भी गया बीता है। और इसके लिये हमें उस प्रभु परमात्मा का सुमरन करना होगा । जिससे हमारा ये मानुष रूपी चोला सफल हो सकता है और तभी हमें ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। इतना बताकर स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत्संग समारोह की समाप्ति की।

झूलेलाल धर्मशाला राजिम में सत्संग

दिनांक 24–1–2002 को प्रातः 7 बजे बरगढ़ से राजिम के लिये प्रस्थान किया। दोपहर बाद 3 बजे राजिम पहुंचे। राजिम में अशोक कुमार गांधी के यहाँ रहने की व्यवस्था की गयी थी। सत्संग का आयोजन झूलेलाल धर्मशाला में रखा गया। सत्संग का समय सांय 5 से 7 बजे तक रखा गया था।

सभी संतों ने अपनी अमृत वाणी द्वारा गुरु महार[illegible] की महिमा का गुणगान किया। पूज्य स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में बताया–

दोहा : **पशु से मानुष किया, मानुष से कियो देव।**
कहे टेऊँ गुरुदेव से, कीना अलख अभेव।।

भजनः सत्गुरु पर जाऊँ कुर्बान, अनुभव की जिंह खिड़की खोली।
अंतराःजिस अमृत लिए देव उपासी, राज छोड़ भये भूप उदासी।
सो अमृत गुरु कराया पान, तांते गुरु चरणों की गोली।।

इस भजन का भावार्थ बतलाया कि हमारे "आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज" "गुरु की महिमा" का वर्णन करते हुए बताते हैं कि ऐसे सत्गुरु पर मैं बार–बार कुर्बान जाऊँ जिन्होंने मेरी सोई हुई अन्तरात्मा को जगा दिया।

आगे बतलाया कि जो भी महापुरुषों की शरण ग्रहण करते हैं। वे इस परमात्मा की बलवान माया का उल्लंघन कर जाते हैं। और उनको हर जीव में परमात्मा के दर्शन होते हैं। लेकिन यह सब तभी संभव है जब पूर्ण तत्ववेता गुरु के साथ हम अपनी जीवन डोर बांध दें।

दोहाः तुलसी लोहा काट संग, चलत फिरत जलमांहि।
बड़े न डूबन देते हैं, जांकी पकड़ी बांहि।।

इस दोहे में गोस्वामी तुलसीदास जी बतला रहे हैं कि जिन्होंने गुरु का आधार लिया है वे संसार सागर से पार हो गये। जैसे हम लोहे को पानी में डालेंगे तो वह डूब जायेगा। लेकिन वही लोहा जब लकड़ी का आधार लेता है। और लकड़ी और लोहे को मिलाकर जब नाव बनाई जाती है तो वह नाव पानी में तैरती रहती है, तो कहने का तात्पर्य लोहा स्वयं तैर नहीं सकता, लेकिन उसने लकड़ी का आधार ले लिया तो वह भी तैरने लगा।

तो उसी प्रकार यह जीव इतना अल्पज्ञ है कि वह स्वयं इस संसार सागर से तर नहीं पाता इसके विपरीत जब यह जीव महापुरुषों का आधार लेकर परमात्मा के नाम का सिमरन करता है तो सहज में ही इस संसार सागर को पार कर लेता है।

श्लोकः रखयो जहिं नातो, सामी सत्पुरुष सां
तहिं लघें माया मोहखा, पूर्ण पद पातो
चींटी एं कुंचर में, हिक साहिब सुञातो

तत्पश्चात पल्लव पाकर स्वामी जी ने सत्संग की समाप्ति की।

भानुप्रतापपुर में सत्संग की मौज

दिनांक 25 जनवरी 2002 राजिम से पूज्य सत्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज अपनी मण्डली सहित भानुप्रतापपुर पहुंचे। जहाँ पर गुरु महाराज जी व संत मण्डली का प्रेमी श्री अनन्तराम लखानी द्वारा सुस्वागत किया गया। तत्पश्चात निवास स्थान पर ही सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम प्रेमियों ने भजन सुनाये और बाद में सभी सन्त–महात्माओं ने प्रवचन में प्रभु–परमात्मा की महिमा का व्याख्यान किया। पूज्य स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में बताया कि

दोहाः महापुरुष इस दुनिया में, बड़े काम को आते हैं।
मिटाते खौफ मरने का, अमर आत्म लखाते हैं।।

भजनः सचो सन्त स्वामी, टेऊँराम प्यारो
करे व्यो, करे व्यो, करे व्यो भजनु

1. शहर खण्डूअ में देहि धरियाई, कृष्णा जे घरि जनमु लधाईं।
विरिह में वैरागी–तुरत बणियो त्यागी।।
2. स्वामी आसूराम जी महर मया सां
लाल बण्यो सन्तनि जी दया सां
ज्ञानिनि में हो ज्ञानी ध्याननि में हो ध्यानी
3. गुरु नानक ज्यां ज्ञान सुणाए–मोहन वांगे मुरली वजाए।
करे व्यो सची भक्ति, जाहिर आहे शक्ति।।
4. देश–देश में नाम जपाए–सत्नाम साखी मंत्र बुधाए।
करे व्यो उजालो–अमर पहिंजो नालो।।
5. अघिजी वियो जहिंजो ढोढो चटणी
जीअं अघी करिमां जी खिचिणी।
आयो थे जेको स्वाली वयो न कदहीं खाली।
6. परमानन्द जो साजन सुहिणों–प्रेम प्रकाश मंडल जो गहिणो।
गाए व्यो मिठी बाणी, देई व्यो समझाणी।।

दोहाः सत्पुरुषों का आगमन–जीवो का कल्याण।
सन्त संग जब ही मिले–भाग्योदय पहचान।।

गीता में भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी ने भी कहा है कि–
श्लोक–जन्म कर्म च मे दिव्यं एवं यो वेति तत्वतः

परमात्मा अनन्त रूप धारण कर संसार में अवतार लेकर आते हैं। भूले हुए जीवों को सत्मार्ग पर लगाने एवं धर्म की रक्षा हेतु उनका अवतार होता है। सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज का अवतार भी जीवों के कल्याण के लिये हुआ।

"गुरु–महिमा" पर प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामी जी ने कहा : सत्गुरु के बिना आत्मज्ञान नहीं होगा।

चोपाईः गुरु बिन होय न आत्मज्ञाना, गुरु बिन मिटे न तन अभिमाना।
गुरु बिन संशय भ्रम न जावे, गुरु बिन कबहूं शान्ति न पावे।।

अर्थात–गुरु के बिना आत्मज्ञान नहीं होगा। बिना आत्मज्ञान के अनात्म देह का अभिमान संशय और भ्रम दूर नहीं होंगे। बिना भ्रम संशयों के दूर हुए शान्ति और सुख की प्राप्ति नहीं होगी। सद्गुरु महाराज जी ने अपने प्रवचनों में कहा, पूर्ण देहधारी सद्गुरु के बिना आत्मा का ज्ञान नहीं होगा। आत्मज्ञान के बिना मोक्ष नहीं होगा। गुरु के द्वारा ही हम अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं। सद्गुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर सत्संग का समापन किया।

दल्लीराजहरा में सत्संगानन्द

दिनांक 26–1–2002 को गुरु महाराज जी अपनी मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा भानुप्रतापपुर से दल्लीराजहरा की ओर

प्रस्थान किया। लगभग 8:30 बजे दल्लीराजहरा में पहुचे जहां पर गुरुमहाराज जी का स्वागत बैण्ड बाजों के साथ और पुष्पवर्षा करके किया गया। प्रेमी आवतराम शाहनी के यहाँ ठहरने की व्यवस्था की गयी। सब प्रेमी गुरु महाराज जी के दर्शन पाकर बड़े प्रसन्न हुए। फिर जलपान करने के बाद सब सन्त विश्रामी हुए।

सत्संग का कार्यक्रम "सिन्धु सांस्कृतिक भवन" में रखा गया सत्सग का समय 5 से 7 बजे तक सायंकालीन को रखा गया। जहाँ पर सत्संग सुनने के लिये कई नगरवासी बड़ी संख्या में इकट्ठे हो गये थे। सर्वप्रथम अमरापुर स्थान के विद्यार्थियों ने भजन सुनाये। बाद में सब सन्तोने प्रवचन किये। इसके पश्चात गुरु महाराज जी ने सत्संग आरम्भ किया। सन्तो के विषय पर बोलते हुए स्वामी जी कहने लगे कि

दोहा: **अति कृपालु निद्रोह चित्त–सहनशीलता सार।**
समदम आदि अकाम मति–मृदुल सर्व उपकार।।

सन्त महात्मा अत्यंत कृपालुता, वैरभाव की सर्वथाहीनता, सहिष्णुता, सारग्रहिता, समता, दमनशीलता, निष्कामता, मृदुलता, उपकार आदि गुणों की उपाधियों द्वारा वे संत सदा शोभित होते हैं और लोगों द्वारा किये गये दुर्व्यवहार पर भी वे कभी ध्यान नहीं दिया करते। अपकार और अपमान करने वाले लोगों को भी कभी नहीं कोसते। धिक्कारने के बदले उन्हें अपना लेते हैं पूज्य स्वामीजी ने बताया कि ये सारे गुण हमारे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में थे।

सन्तों की सहनशीलता व सारग्राहिता को बतलाते हुए गुरुमहाराज जी ने भजन बताया।

भजन: देखा जग में सन्त उदारी–सार ग्राही सत् विचारी (टेक)

1. **सच ही देवे सच ही लेवे, सच ही देखे सच ही सेवे।**
सम दम आदिक षटगुण धारी।।1।।
2. **अपने सिर पर दुख सहारहिं, सब जीवों के कष्ट निवारहिं।**
स्वार्थ बिन से पर उपकारी।।2।।
3. **अति कृपालु कृपा करहैं, जन्म मरण दुख को वे हरहैं।**
मात पिता ते अति हितकारी।। 3।।
4. **कहे टेऊँ से ब्रह्मज्ञानी, रहते आत्म अन्तर ध्यानी।**
जाऊँ तिन पर मैं बलिहारी।। 4।।

भजन की व्याख्या करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि सन्त महात्मा लोग नाना प्रकार के कष्टों को झेलते हुए सत्य का संचय करते हैं। स्वयं भी सत्य पथ पर चलते हैं तो औरों को भी सत्य पथ पर चलना सिखाते हैं। वे सत्य वक्ता स्व [illegible] स्थित सम्यक् ब्रह्मज्ञानी माता–पिता से भी बढ़कर स्वार्थ से रहित अपनी शरण में आये हुए जीवों का तुरन्त उद्धार कर देते हैं। इस विषय को अच्छी तरह से समझाकर व पल्लव पाकर सत्संग समारोह का समापन किया।

धमतरी प्रेम प्रकाश आश्रम के लिये भूमिपूजन

दिनांक 27–1–2002 को प्रातः 7 बजे पूज्य गुरु महाराज जी दल्लीराजहरा से धमतरी के लिये प्रस्थान किया प्रातः 9 बजे धमतरी पहुंचे जहाँ पर समाज के अनेक लोगों एवं अशोक कुमार व सिन्धी पंचायत द्वारा उनका स्वागत किया गया।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार 12 बजे भूमि पूजन का कार्यक्रम रखा गया। प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा स्थानीय सुन्दरगंज में प्रेम प्रकाश आश्रम चेरिटेबल ट्रस्ट के निर्माणाधीन भवन का भूमिपूजन किया गया। इस भूमिपूजन में रायपुर से भी अनेक प्रेमी सम्मिलित हुए।

उसके बाद अशोक कुमार रोहिड़ा के यहाँ आम भण्डारा रखा गया सर्वप्रथम सन्त–महात्माओं ने भोजन पाया बाद में सारी संगत ने भोजन किया।

सत्संग का कार्यक्रम संध्या 5 बजे से 7 बजे तक सिंधी धर्मशाला में रखा गया। पूज्य स्वामी जी के साथ आई संत मण्डली द्वारा सत्संग भजन कीर्तन का आनन्द कराया गया। सन्तों के बाद गुरु महाराज जी ने अपने प्रवचन में कहा–

दोहा: **प्रेम बिना पहुंचे नहीं को जन हरि के धाम।**
कहे टेऊँ तांते जपो प्रेम सहित हरि नाम।।

एक मार्ग तो ध्यानियों का है और दूसरा मार्ग प्रेम का है और जब तक हमारे जीवन में प्रेम का पागलपन न आया प्रेम की मस्ती न आई, तब तक तुम्हारा अहंकार मिटेगा कैसे और प्रेम की आग में ही अहंकार जलता है। प्रेम के लिये हमें उस गुरुदेव का सहारा लेना पड़ेगा। उस गुरुदेव के द्वारा ही प्रेम का पता चल सकता है। प्रेमी अपने को मिटाकर दूसरे को बचा लेता है। प्रेम के मार्ग में कितनी बाधाऐं आती हैं। जैसे कि मीरा ने प्रभु से प्रेम किया तो लोग उन्हें भला–बुरा कहने लगे। ताने देने लगे उसका जीना मुश्किल कर दिया। पर फिर भी मीरा ने उस प्रभु परमात्मा का सुमरन नहीं छोड़ा। मीरा के मन में सच्चा प्रेम था। इसलिये परमात्मा की प्राप्ति की।

देखा जाये तो परमात्मा तो परमात्मा है परन्तु प्रेम के बिना संसार भी सूना–सूना है। सारा संसार प्रेम की डोरी से बंधा हुआ है समस्त कार्य प्रेम के द्वारा ही संपन्न होते हैं। अगर हम गुरुदेव भगवान से भी प्रेम करेंगे तो वह भी हमारा इस संसार सागर से बेड़ा अवश्य पार लगायेंगे।

भजन: **संभारे थो जो सत्गुरु खे–गुरु बि तहिंखे सम्भारिन्दो।**
अटलु विश्वासु आ जहिंजो–न सत्गुरु तहिं विसा[illegible]।।

1. **दुनिया भली धिकारे–ताननि सां मारे।**
जीअणुँ करे मुश्किल–अन्दरू भली साढ़े।।
पर न सद्गुरु विसारे थो–प्रेम सां जो पुकारीन्दो।

2. बाबल आ दयालू–कामिल कृपालू।
शरन आयलनि जो–राखो आ रखिपालू
हुजनि दुश्मन भली केदा–दुखियो ना दीन्हुं देखारीन्दो

3. जमानो भलि सताए–उहो न दुख पाए
जहिंजो ओ सचा सांई–तुहिंजो छद्व आहे
तरी संसार सागर मां–बियनि खे भी सो तारीन्दो

गुरु महाराज जी ने भजन के माध्यम द्वारा बताया। गुरुदेव भगवान में अटलु प्रेम होगा तो हमें सांसारिक बातों से कोई फर्क पड़ने वाला नहीं।

भगवान श्री रामचन्द्र जी ने भक्तिमती शबरी को भी यही बात बताई।

चौपाईः कह रघुपति सुनु भामिनि बाता, मानहुं एक भगति कर नाता।

एक बार प्रेम लगाकर जो भगवान का बन जाता है, उसे लोक परलोक में यश की प्राप्ति होती है, लेकिन वह प्रेम कैसा होना चाहिये–चौदहवीं के चांद की तरह या दूज के चन्द्रमा की तरह–

दोहाः प्रेम उत्तम सो जानिए–दूज चन्द्र सा होय।
कहे टेऊँ कब ना घटे–दिन–दिन बाढ़े जोय।।

इतना कहने के पश्चात् जय–जय टेऊँराम स्वामी प्रार्थना कर, सद्गुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया।

दिनांक 28–1–2002 को शाम को सत्संग का समय 5 से 7 बजे तक रखा गया। सर्वप्रथम बाहर से आये प्रेमियों ने अपनी मधुर आवाज में भजन सुनाए। फिर संतों ने अपनी वाणी द्वारा सबका मन मोह लिया। तदोपरांत स्वामी जी ने अपने वचनों में बताया–

दोहाः कहे टेऊँ संसार में बात यही है सार।
भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार।।

भजनः वञई थी, हथनि मां, वञई हली।
हयाती हथनि मां, वञई थी हली।

1. हुआ साणु तोसां हली से विया,
अञां तो न दिलिआ दुनिया खां पली।

2. कुठा काल जोधा सवें सूरिमा,
अहिड़ो कालु तोखे सुझे ना बली।।

3. परे कुटम्बु तोखां भजी प्यो भजे,
अञां तूं न तिनिजी छदी थो गली।

4. कहे टेऊँ गुरजी वठी ओट तूं,
भजन सां ध्याती करे वठु भली।

परमादरणीय श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी अमृतवाणी के द्वारा हमें शिक्षा दे रहे हैं, कि हमें यह दुर्लभ मनुष्य शरीर बड़े भाग्यों से प्राप्त हुआ है, जिसका भी कोई भरोसा नहीं कि कब तक हमारे पास रहेगा ? कब हमारे हाथ से चला जाए, कुछ विश्वास नहीं, अतः हमें शीघ्रातिशीघ्र प्रभू–परमात्मा के भजन में लग जाना चाहिए। जैसे किसी घड़े में पानी तो भरा हो परन्तु उसके पेन्दे में छेद हो तो उस छेद से धीरे–धीरे पानी रिसते रहने के कारण वह घड़ा एक समय बिल्कुल खाली हो जाऐगा उसी प्रकार हमारी आयु भी धीरे–धीरे क्षीण होती जा रही है।

दोहाः रैन गई पुनि दिन भया, दिवस गया फिर रात।
कहे टेऊँ मन चेतले, आयू ऐसे जात।।

हमारे साथ जो संगी–साथी थे एक–एक कर वे हमें अकेला करके हमारा साथ छोड़ते जा रहे हैं, लेकिन हमें इस बात का अहसास ही नहीं है। इस बात के लिये हमें गुरु महाराज जी का आशीर्वाद चाहिये, उसके लिये हमें प्रार्थना करनी होगी।

जय–जय–जय टेऊँराम स्वामी। कृपा करो हरि अंतर्यामी।।

दुर्ग में सत्संग सरिता

दिनांक 29–1–2002 को प्रातः 7 बजे स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज अपनी मण्डली सहित धमतरी से दुर्ग के लिये प्रस्थान किया। जहां पर प्रेमी भागचन्द जी द्वारा प्रेमियों सहित पूज्य स्वामी जी व सन्तों का हार्दिक स्वागत किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रमानुसार सत्संग का आयोजन जय बाबा धाम में किया गया। इसमें सर्वप्रथम सन्तों ने अपनी मधुर वाणी से सबका मन मोह लिया। गुरु नाम के विषय पर बोलते हुए पूज्य स्वामी जी कहने लगे कि गुरु के नाम से ही प्रभु पाया जाता है।

दोहाः सत्गुरु अपने दास का लेखा देत निवार।
कहे टेऊँ परलोक तिस कोई न पूछनहार।।

भजनः अहिड़ो सत्गुरु आहे, थो सभिनि जा दुख लाहे।
जेको शरणि वठे थो तंहिजी, तंहिखे राह रसाए।।

अन्तराः सत्गुरु दीन दयालूआ, प्रेमिनि जो रखिपालू आ।
कदहि कीन विसारे थो, भोला भरम निवारे थो।
ज्ञान ध्यान जी दई युक्ती, निज आतम जी दई शक्ति
बोध संदे बेड़े ते चाढ़े, पल में पारि पुजाए।।1।।

गुरु की शरण में जाकर तन–मन की भेंट रखकर सच्चे नाम गुरु मंत्र की दीक्षा लेनी चाहिए। जीव को सदैव संसार के विषयों से हटकर सच का सौदा करना चाहिये। परमात्मा ने मनुष्य को श्वासों रूपी अमूल्यधन का भण्डार प्रदान किया है। एक–एक श्वास की कीमत समझकर उसका सदुपयोग करना चाहिये। ऐसा न हो मूर्ख किसान की तरह लालों की हाण्डी प्राप्त करके भी अमूल्य लालों से पक्षियों को उड़ाकर खत्म कर दिये। इस प्रकार से यह जीव भी विषय विकारों में अपने अमूल्य श्वासों

को खत्म कर देता है। शुभ कर्मों का फल सदैव अच्छा होता है और उससे जीव को सुख प्राप्त होता है। पाप कर्मों का फल दुख मिलता है ऐसा वेद नियम समझकर सदैव सत्संग करते रहना चाहिये ओर अपने स्वभाव में श्रेष्ठ गुणों का समावेश करते रहना चाहिए। इसलिए नाम की दीक्षा लेकर गुरु ज्ञान रूपी तलवार लेकर संसार के जन्म मरण रूपी बन्धन को काटकर मुक्ति को प्राप्त करें।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी की माता कृष्णा भी सच का सौदा करने के लिये कह रही हैं जो कि कभी भी खत्म न होने वाला हो। ओर सच का सौदा इकट्ठा करने के लिये गुरु के द्वारा दिये गये 'नाम' का अभ्यास करना पड़ेगा। इन श्वासों का मूल्य तभी है जब हम 'नाम' का सुमरन करेंगे।

भजनः मनड़ा तोखे आउ समझायां।

अंतराः हिक हिक दम जो मूल्य लख लख थई।
नाम बिना मूल तंहिंजो कखु थई।
गाल्हि सची मां गाल्हायां

इतना बताकर सत्संग समाप्त किया।

बेमेतरा में सत्संग वर्खा

दिनांक 30–1–2002 को प्रातः 7 बजे पूज्य सत्गुरु महाराज जी अपनी मण्डली सहित बेमेतरा के लिये रवाना हुए। लगभग 9 बजे बेमेतरा पहुंचे जहाँ पर गुरु महाराज जी के शिष्य जमनादास द्वारा नगर निवासियों सहित स्वामी जी व अन्य संतों का स्वागत किया गया।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार सत्संग का आयोजन जमनादास के निवास स्थान पर ही रखा गया। सत्संग का समय प्रातः 10 बजे से 11:30 बजे तक रखा गया। इसमें सर्वप्रथम अमरापुर के विद्यार्थियों ने भजन सुनाये व संत महात्माओं ने प्रवचन किया।

तत्पश्चात सत्गुरु महाराज जी ने अपने अमृतमय वचनों में बताया–

दोहाः धर्मशील गुण दान तप, विद्या बिन जे जंत।
मृत्युलोक भुविभार ते, नखपु मृग विचरंत।।

भजनः किये करतूत पशुओं के, मनुष होया तो क्या होया।
पदार्थ और सब पाये, हरि न पाया तो क्या होया(टेक)

1. वृक्ष देखन में सुन्दरे, नहीं छाया नहीं गन्धरे।
नहीं फल फूल नहिं पत्रे, वृक्ष होया तो क्या होया।
2. सरोवर जल बिना जैसे, धनी हैं पुण्य बिना तैसे।
बिना दीपक मन्दिर कैसे, सुन्दर होया तो क्या होया।।
3. कुंचर ज्यों नीर में नावे, निकस बाहर मिट्टी पावे।
अन्तर की मैल ना जावे, गंगा नाया तो क्या होया।।
4. कहे टेऊं बहुत पढ़के, दुनिया के लोभ में लटके।
बिना गुरु ज्ञान के भटके, पढ़ा होया तो क्या होया।।

जिस मनुष्य में धर्मशील गुण, दान, तप और सदाचार नहीं है वह संसार में पृथ्वी के लिये भारभूत है। वास्तव में वे मनुष्य नहीं बल्कि मनुष्य के रूप में पशु ही विचरते हैं। गुरु महाराज जी ने बताया कि हमने संसार के सारे पदार्थ प्राप्त कर लिये हैं ये सारे संसार के पदार्थ काम आने वाले नहीं बस एक हरि का नाम ही हमारे साथ चलेगा।

ऐसा वृक्ष किस काम का जिसमें ना छाया हो ना फल, न फूल और पत्ते भी ना हो तो ऐसा वृक्ष किसी भी काम का नहीं है। इसी प्रकार अगर हमने मानुष चोले में उस प्रभु–परमात्मा का भजन नहीं किया तो हमारा जीवन पशुओं के समान है। चौरासी लाख योनियों की अपेक्षा यह मनुष्य शरीर अत्युत्तम बतलाया गया है। इसके द्वारा ही भगवान का दर्शन किया जा सकता हैं यही एक सुन्दर सीधा और सरल मार्ग है। अन्य योनियों रूपी रास्ते बहुत टेढ़े मेढ़े व संकरे हैं, जिन पर चलना बहुत ही मुश्किल हो जायेगा। यह शरीर गया तो फिर इसका पाना बहुत ही कठिन हो जायेगा। इस नर तन से श्रेष्ठ और कोई भी योनि नहीं हैं भगवान ने अपना ही स्वरूप मनुष्य को दे दिया है। अगर इस तन में मोक्ष को प्राप्त नहीं किया गया तो फिर चौरासी लाख योनियों रूपी गडढे में गिरना पड़ेगा। फिर वहां से ऊपर मनुष्य तन में आना बहुत ही कठिन हो जायेगा।

भई प्राप्त मानुष देहरिया, गोविन्द मिलन की ये तेरी बरिया।
और काज तेरे कितइ न काम, मिल साध संगति भज केवल नाम

पूज्य स्वामी जी ने बताया कि परलोक के लिये सामान अभी से ही लेना चाहिये। सामान वह खरीदना चाहिये जो कभी भी पुराना न हो न बेचने पर घाटा पड़े। ऐसा सामान खरीद लेने पर तुम्हें परलोक में काम आयेगा। वहां तुम्हें बहुत सुख मिलेगा।

श्लोकः वखरू सो विहाइ, जो पए पुराणो न थिए,
वेचींदे विलायत में, ज़रो थिए ना जाइ।
सा का हड़ हलाइ, आगहिं जहिंजी उबहीं।।

इस विषय पर व्याख्या कर गुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया।

उसके बाद पूज्य स्वामी जी व अन्य सन्तों ने भोजन करके पुनः दुर्ग के लिये प्रस्थान किया।

दुर्ग में सत्संग मौज

निर्धारित कार्यक्रमानुसार सत्संग का समय सांय 5 बजे से 7 बजे तक रखा गया। सत्संग की शुरूआत में महिला मंडली द्वारा भजन गाये गये तत्पश्चात सन्तों ने भी सत्संग कीर्तन, प्रवचन किये। तदोपरान्त पूज्य सद्गुरु महाराज जी ने अपनी अमृतमयीवाणी में बताया–

दोहाः मैं मेरा गुरु चरण में जो जन भेंट चढ़ाय।
कह टेऊँ तिस दास के काल निकट नहीं आये।।

भजनः मन गाल्हि त बुध तू ध्यान धरे।
जो जायो आहि सो अवसि मरे ।।टेक।।
1. भलि पीरू हुजे या फकीर हुजे एं मुलिक सजे जो मीरू हुजे
रणधीर हुजे या गम्भीर हुजे पर कालि न कहिते क्यासु करे।।
2. एं सुरिहियु को त सदाए खणी भली भारी कोट अदाए खणी
एं केदो पाणु पदाए खणी तबी आगे अजल जे नेठि जरे
3. हितां कोई खावंद खान लदे विया माड़ियू बंगुला बाग़ छदे।
छदिया मौत सभेइ खाकि गदे थो कालु कहितां कीनटरे।।
4. जो जीअरे मन खे मारे थो एं ज्ञानु गुरुअ जो धारे थो।
सो पाण तरी जगु तारे थो, थे टेऊं तहिंखां कालु परे।।
दोहाः तीर्थ व्रत अरू दान कर, मन में धरे गुमान।
नानक नहि फल जाते हैं ज्यों कुंचर स्नान।।

पूज्य स्वामी जी ने बताया कि कभी भी हमें अभिमान नहीं करना चाहिये। यह संसार एक स्वप्न है, उसमें अभिमान करना व्यर्थ है। ये काया माया भी कभी थिर रहने वाली नहीं। अगर हमारे मन में अभिमान होगा कि मैंने इतने तीर्थ कर लिये हैं और इतनी तपस्या, दान किया तो वह सब उस हाथी की तरह है जिस प्रकार कुंचर स्नान करके बाहर आता है तो वापिस अपनी सूंड में मिट्टी भरकर अपने शरीर पर डालता है और वह वैसे हो जाता है जैसे नहाने से पहले था उसी प्रकार हमें अभिमान करने पर सारे तीर्थ दान व्रत जप तप बेकार हो जाते हैं।

दोहाः दो दिन जग में जीवणां मत कर तू अभिमान।
मेरा मेरा करत है, तेरा घर श्मशान।।

दो दिन के रहने के खातिर हम कितना अभिमान करते हैं गुरु महाराज जी ने कहा कि "मैं मेरा गुरुदेव" के चरणों में भेंट चढ़ा देना चाहिये। कोई कितना भी अमीर या फकीर हो या पूरे देश का राजा ही क्यों न हो पर काल भगवान किसी पर भी दया नहीं करता है परन्तु जो "मैं मेरा गुरु के चरणों" में देता है उस पर काल का कहर भी कुछ नहीं करेगा।

कर्म धर्म जप ध्यान तप योग यज्ञ व्रत दान।
कहे टेऊँ हरि हेत कर, छोड़ ममत अभिमान।।

एक साधु था जिसने कई वर्ष तक पहाड़ पर बैठ कर तपस्या की, समय आने पर जब उसका शरीर छूटा तो उसने अपने आप को धर्मराज के कक्ष में अन्य प्राणियों के साथ पंक्ति में खड़ा हुआ देखा। उसे अपनी तपस्या का अभिमान था। इस वजह से वह भरे दरवार में अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करने के स्थान पर शोर मचाते हुए बार बार चिल्लाने लगा कि जल्दी मुझे मेरा हिसाब दो मैंने इतनी तपस्या की है उसका मुझे हिसाब मिलना चाहिये। इस बीच एक देवता ने धर्मराज से निवेदन किया कि महाराज इस सन्त को इसकी तपस्या का फल देने से पहले मुझे इससे अपना कर्ज वसूल करने की आज्ञा दें। धर्मराज ने पूछा तुम कौन हो तुम्हारा इस सन्त पर कौन सा कर्ज है। देवता ने कहा मैं वही पर्वत हूं जिस पर इस सन्त ने सैकड़ों वर्ष बैठकर तपस्या की, अतः इस सन्त को पर्वत बनाया जाये ताकि मैं सन्त बनकर इस पर बैठकर तपस्या करके अपना हिसाब चुकता करूं। वह पर्वत बोल ही रहा था कि इस बीच एक और देवता वहां प्रकट हुआ तथा वह भी अपना कर्ज उस सन्त से वसूल करने के लिये निवेदन करने लगा यह देख और सुनकर वह सन्त अपने मन में घबराने लगा इस पर धर्मराज ने उस देव से पूछा तुम कौन हो और तुम्हें क्या चाहिये। तब देवता ने कहा मैं वही वृक्ष हूं जिसके नीचे बैठकर तथा जिसकी टहनियों पर उल्टे लटक कर इस सन्त ने सैकड़ों वर्ष तपस्या की मेरे मीठे मीठे फल खाये और मेरी छाया में आराम किया। धर्मराज ने कहा तुम्हें इस सन्त से क्या चाहिये। वृक्ष ने निवेदन किया कि मेरी जगह इसे वृक्ष बना दीजिये और इसकी जगह मुझे सन्त बना दीजिये, ताकि सैकड़ों वर्ष तक मैं भी तपस्वी बनकर इसकी छाया का सेवन कर सकूं और इसके फल खा सकूं, तपस्या के लिये इस पर लटक सकूं। इसी बीच एक देवता और प्रकट हो गया, कहने लगा कि मुझे भी न्याय दो उसकी बात काटते हुए एक और देवता आकर कहने लगा कि महाराज दुहाई हो पहले मुझे न्याय दिलाइये। उन दोनों देवताओं को अपने प्रति आपस में झगड़ते हुए देखकर वह सन्त घबराकर रोने लगा त्राहि मामः त्राहि मामः धर्मराज ने कहा, पहले उनसे पूछ तो लेने दो। आप तो अपनी तपस्या का हिसाब मांग रहे थे। इतने में ही डर गए। वह सन्त रोते हुए कहने लगा। बस, अब मुझसे नही सुना जाता, मैं समझ चुका हूं कि मेरी तपस्या का अभिमान मुझे व्यर्थ था। अब आप मुझे क्षमा करें, अव मैं अभिमान नहीं करूंगा, क्योंकि यदि हिसाब होगा तो न जाने कितने देवताओं का मुझ पर कर्जा हो जाएगा, जिसे मैं हजारों वर्ष की तपस्या के बाद भी चुका नहीं पाउंगा। उपरोक्त दृष्टांत का तात्पर्य यह है कि इस जीव को कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिये, भगवान न जाने कौन से कर्म का कौन सा फल दे बैठे। इसलिये ये सदैव उसके सामने नम्र भाव धारण करना ही उचित है।

"जिस साहेबसु नांहि चारा तांको कीजिये सद नमस्कारा।

इतना बताकर सद्गुरु महाराज ने पल्लव (प्रार्थना) पाकर सत्संग समाप्त किया।

राजनांदगांव में सत्संग वर्खा

दिनांक 1–2–2002 को प्रातः 7 बजे पूज्य स्वामी जी अपनी मंडली सहित दुर्ग से राजनांदगांव के लिये प्रस्थान किया लगभग प्रातः 8 बजे राजनांदगांव पहुंचे, जहां प्रेमी किशनचन्द

द्वारा पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली का माल्यार्पण कर स्वागत किया। पूज्य स्वामी जी व सन्तों के रहने की व्यवस्था किशनचन्द के निवास स्थान पर रखी गयी।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार सतसंग का आयोजन सत्राम धाम में रखा गया। सत्संग का समय सांय 5 से 7 बजे तक रखा गया। पहले-पहल सभी सन्तो ने मिलकर एक डेढ़ घंटा सत्संग किया। तत्पश्चात सत्गुरु महाराज जी ने अपने प्रवचनों में फरमाया–

दोहाः **प्रेम जगत में बहुत है, प्रेम बिना नहिं कोई।**
'टेऊँ' साचा प्रेम सो, लगा हरि से होई।।

भजनः **इक ही प्रेम प्रभु को भाया।**
जाति वर्ण कुल कर्म न देखा, प्रेम के हाथ बिकाया(टेक)

1. **प्रेम अटल जब केवट कीना, राम देख मुस्काया।**
जिन चरणों को योगी, चाहत, से निज चरण धुलाया।।
2. **प्रेम भीलनी का जब देखा, रघुवर तब घर आया।**
प्रेम जटायू का लख हरि ने, अपने धाम पठाया।।
3. **प्रेम देख सुग्रीव का, हरि ने अपना मित्र बनाया।**
प्रेम पवन सुत ऐसा कीना, रघुपति कण्ठ लगाया।।
4. **प्रेम विभीषण का जब देखा, तब हरि राज दिलाया।**
'कहे टेऊँ' यह प्रेम हरि का, भाग बड़े किस पाया।।

प्रेम के विषय पर प्रवचन करते हुए स्वामी जी कहने लगे परमात्मा के प्रेम बिना मनुष्य पशु के समान है। पशु को भी अपने मालिक से मिलने की इच्छा रहती है, किन्तु मनुष्य होकर भी हृदय में परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा जागृत हो तो वह पशु से भी हीन है। सभी प्राणियों के हृदय में प्रेम है, किन्तु वास्तविक प्रेम उसे कहते हैं जो कि परमात्मा के चरणों में लगा रहे। सांसारिक प्राणियों का संसार के पदार्थों के साथ प्रेम होता है। किसी का धन से, किसी का शरीर से, परिवार आदि से। शारीरिक सुख के साथ प्रेम लगा हुआ है। किन्तु यह संसार का प्रेम झूठा व दुखदाई है सत्पुरुषों व भगवान के साथ जो प्रेम किया जाता है वही सच्चा प्रेम है। और इस प्रेम के द्वारा ही परमात्मा की प्राप्ति होगी। सांसारिक प्रेम छोड़कर एक परमात्मा के साथ प्रेम लगाना चाहिये।

दोहाः **जां घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसाण।**
जैसे खाल लुहार की, स्वास लेत बिन प्राण।।

गुरु महाराज जी कहने लगे कि भगवान के प्रेम बिना इस जीव का हृदय सूना है। जिस जीव के हृदय में भगवान के प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं हो पाया है वह हृदय मरघट की तरह बताया गया हैं। जिस मनुष्य में परमात्मा का प्रेम नहीं, वह शव के समान है और उसका शरीर लुहार की धोंकनी के समान है। जैसे लुहार की धौंकनी का कार्य वायु लेना व छोड़ना है केवल आग को भड़काने के लिये ही होता हे, वैसे ही प्रभु प्रेम शून्य मनुष्य का श्वांस लेना व छोड़ना केवल विकारों को उत्तेजित करने के लिये ही होता है अथवा मनुष्य द्वारा उठाए व छोड़े गये श्वास भगवान के भजन बिना व्यर्थ ही हैं।

इतना समझाकर गुरुमहाराज जी ने सत्संग समाप्त किया।

–सन्त लक्ष्मण, प्रेम प्रकाशी, (जयपुर) यात्रा से

वेदांत केसरी पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज का जन्मशती समारोह अहमदाबाद में धूमधाम से प्रारम्भ

अहमदाबाद 26 जनवरी–श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज के परम प्रिय शिष्य वेदान्त केसरी पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह 22 जनवरी से 26 जनवरी तक अहमदाबाद में बड़े हर्षोल्लास के साथ प्रारम्भ हुआ। ज्ञात हो यह वर्ष पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज के जन्मशती के रूप में मनाया जा रहा है। जिसका विभिन्न स्थलों पर आयोजन किया जा रहा है।

प्रेम प्रकाश आश्रम कुबेर नगर में बहिन पुष्पा देवी के संयोजकत्व में आयोजित इस पंचदिवसीय समारोह में प्रेम प्रकाश मण्डल के वयोवृद्ध संत स्वामी स्वयं प्रकाश जी, स्वामी ब्रह्मानंद जी, स्वामी अशोक प्रकाश जी, संत राजूराम जी, संत स्वरूपप्रकाश जी, संत शंकरानंद जी, संत राजू जी (अजमेर), संत मोहनलाल, दिलीप कुमार इत्यादि एवं बड़ी संख्या में अन्य संत भी उपस्थित थे।

रोजाना सुबह–शाम हजारों की संख्या में प्रेमियों ने संतों के दर्शन व सत्संग का लाभ लिया। इस अवसर पर अन्य शहरों से भी बड़ी संख्या में प्रेमी आये हुये थे जिनके आवास–भोजन की व्यवस्था कुबेरनगर आश्रम पर रखी गयी थी।

26–1–02 को एक विशेष समारोह में पूज्य संत मण्डल ने मिलकर स्वामी बसंतराम जी महाराज के जन्मोत्सव के उपलक्ष में 100 दीप प्रज्जवलित कर एवं केक काटकर उपस्थिति प्रेमियों को करतल ध्वनि से बधाईयां दीं। इस दिन प्रातः हवन, ध्वजावन्दन व आम भण्डारे का भी आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 7000 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। रात्रि को सभी संतों ने मिलकर इस भव्य समारोह का पल्लव पाकर समापन किया। इस शुभअवसर पर पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज ने बताया कि यह शताब्दी समारोह देश के विभिन्न स्थलों जैसे–सूरत, ठासरा (जि. खेड़ा) नाड़ियाद, धुलिया, जलगांव, आदि अन्य शहरों में धूमधाम से मनाया जावेगा। इस समारोह का मुख्य आयोजन जुलाई 2002 को अजमेर में स्वामी टेऊराम जन्मोत्सव मे साथ आयोजित किया जायेगा। इसका स्वामी जी ने सभी को हार्दिक निमंत्रण दिया।

पूज्य स्वामी श्री अशोक प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में दिव्य कृष्ण लीला एवं सत्संग विचरण संपन्न

बड़ौदा 2–2–2002–प्रेम प्रकाश मण्डल के संत शिरोमणि ज्ञान विभूति पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज विगत माह विभिन्न स्थलों पर ज्ञान भक्ति की गंगा बहा कर अनेक प्रेमियों को अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा कृतार्थ किया। प्रस्तुत है आंखों देखा विवरण।

बड़ौदा आश्रम पर दिव्य रासलीला संपन्न

दिनांक 4–1–2002 से 15–1–2002 तक, आश्रम के भव्य प्रांगण में पूज्य स्वामी जी की पावन छत्रछाया में दिव्य श्री कृष्ण लीला का आयोजन किया गया। जिसे वृन्दावन के मशहूर लीलाकार पं. श्रीराम शर्मा जी ने प्रस्तुत किया। प्रतिदिन सांय 5:30 बजे से 8:30 बजे तक भगवान श्रीकृष्ण की मधुर लीलाओं का सजीव चित्रण किया गया, जिसका हजारों की संख्याँ में प्रेमियों ने रस लूटा। इस अवसर पर बाहर से भी अनेक प्रेमियों ने आकर आनन्द लिया। कुल 9 लीलाऐं प्रस्तुत की गयीं, प्रथम लीला माखन चोर, द्वितीय चैतन्य महाप्रभु बाल्यावस्था, तृतीय राजा हरिश्चन्द्र चतुर्थ–गीता उपदेश पंचम महाभारत्त विजय इत्यादि मुख्य रूप से प्रस्तुत की गयीं। 10 दिन मानों पूरा आश्रम श्री वृन्दावन धाम बन गया। भगवान की आनन्दमय लीलाओं का अवलोकन करके प्रेमियों की दशा भी वैसी ही हो जाती थी। जैसे वृन्दावन की गोपियाँ। अतः उसका वर्णन शब्दातीत है।

स्वामी ऊधवदास वर्सी उत्सव

प्रेम प्रकाश मण्डल के संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ऊध वदास जी ब्रह्मचारी जी का वर्सी उत्सव स्थानीय डाँडिया बाजार में पूज्य स्वामी जी की उपस्थिति में बड़े धूमधाम से संपन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज ने पूज्य संत ऊधवदास जी को पुष्पांजलि प्रदान करते हुए कहा–कि महापुरुष इस जगत में अपनी मर्जी से आते हैं और अपनी मर्जी से ही जाते हैं। वे प्रभु परमात्मा का संदेश सुनाने व सोये हुये जीवों को जगाने के लिये आते हैं। ऐसे हमारे स्वामी ऊधवदास जी थे जिन्होंने गीता के मार्मिक उपदेशों द्वारा असंख्य जीवों को जगाया। आज हम ऐसे महापुरुष का 7 वाँ वार्षिक उत्सव मना रहे हैं। गुरु महाराज जी से प्रार्थना है कि उनकी कृपा दृष्टि हम सभी पर सदैव बनी रहे सदैव नाम सुमरन, सत्संग आदि करते रहें।

अहमदाबाद में स्वामी बसंतराम जी का जन्मशती समारोह

दिनांक 22 जनवरी से 26 जनवरी तक अहमदाबाद में शांत केसरी पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज के जन्म शताब्दी समारोह में पूज्य स्वामी जी अपनी संत मण्डली सहित पधारे। ज्ञात हो कि यह वर्ष पूज्य स्वामी बसंतराम जी के जन्मशती के रूप में मनाया जा रहा है इस समारोह की शुरूआत अहमदाबाद के प्रेम प्रकाश आश्रम कुबेरनगर में की गयी। बहिन पुष्पा कुमारी के संयोजकत्व में आयोजित इस समारोह में पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज ने कहा कि आज बड़ी प्रसन्नता की बात है जो आज हमारे सत्गुरु टेऊँराम महाराज़ जी का शुभ शनिवार का दिन यानि जन्म का दिन है और साथ–साथ हमारे स्वामी बसंतराम जी महाराज जी के जन्म का भी दिन आज ही है। यह भी एक महायोग है। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से असंख्य प्रेमी आये हुये थे। प्रतिदिन सुबह शाम सतसंग की गंगा बहती रही जिसमें असंख्य प्रेमियों ने अपने को कृतार्थ किया।

मणि नगर में सत्संग वर्खा

मणिनगर के प्रेमियों के सविनय निवेदन पर संतमण्डली ने 27–1–02 को प्रातः मणिनगर में सत्संग वर्खा की, इस अवसर पर असंख्य प्रेमियों ने सन्त दर्शन व सत्संग का लाभ लिया। बाद में पूज्य संत मण्डली प्रेमियों के घर चरण पधारवनी कर सभी को सत् का उपदेश देकर पुनः बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया।

डभोई में सत्संग–दर्शन

डबोई नगर के प्रेमियों के सप्रेम निमंत्रण पर पूज्य स्वामी जी संत मण्डली समेत दिनांक 30–1–02 को प्रातः डबोई पधारे। संतों के आगमन का समाचार पाकर सारी संगत दादा आयलदास "नाना" जी के मकान की और जुड़ने लगी। यहां पर संक्षेप यात्रा के दौरान एक विशेष सत्संग समारोह का आयोजन रखा गया। सर्वप्रथम संत मोहनलाल, दिलीप कुमार एवं संत राजूराम जी ने सतसंग–भजन की मौज करवाई तत्पश्चात पूज्य स्वामी जी ने श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ से एक पद लेकर सुंदर व ओजस्वी शैली में सद्गृहस्थ के नियमों पर प्रकाश डाला। प्रेमियों ने संतों के सत्संग व दर्शन का खूब लाभ लिया। अंत में पल्लव पाकर कार्यक्रम की समाप्ति हुई। सबके लिये प्रसाद व सत्संग की सुंदर व्यवस्था रखी गयी। जिसका सभी प्रेमियों ने लाभ लिया। यहां पुनः स्वामी जी संत मण्डली समेत बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया।

आगामी कार्यक्रम

पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज 31 जनवरी तक बड़ौदा में रहेंगे तत्पश्चात ठासरा, पुनः अहमदाबाद, जलगांव, मद्रास, मदुरई, कन्याकुमारी, रामेश्वरम् आदि दक्षिण भारत की यात्रा पर सत्गुरु टेऊंराम जी महाराज के उपदेशों का प्रचार प्रसार करेंगे। इसके बाद पूज्य स्वामी जी छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थलों पर आयोजित सत्संग समारोह में भाग लेंगे। अधिक विवरण के लिये–(0265) 560676– 572424 नम्बर पर फोन किया जा सकता है।

–प्रेम प्रकाश आश्रम,
बड़ौदा–6

सूरत में कार्तिक मेला एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का जन्मोत्सव मनाया गया

भारत देश के सिल्क सिटी माने जाने वाले सूरत शहर में स्वामी टेऊंराम आश्रम रामनगर में स्वामी टेऊंराम आश्रम ट्रस्ट की और से कार्तिक महीना हर साल की तरह इस वर्ष भी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ धूमधाम से मनाया गया जिस में हजारों प्रेमियों ने सत्संग का लाभ लिया।

प्रतिदिन प्रातः काल 5.30 से 6.30 तक प्रभात फेरी रामधुनी का आयोजन तत्पश्चात सत्संग होता था।

कार्तिक मास के बीच में ही दो दिन तक सत्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव भी मनाया गया जिस में हजारों प्रेमियों ने आकर लाभ लिया। सत्गुरू के जन्म उपलक्ष में एक संध्या को एक विशेष प्रोग्राम रखा गया था जिस में गुरुमहाराज के दो भगतों ने पैरों में घुघंरू बान्धकर भगती की थी वह थे दास रमेश राजपाल (भगत अमरापुरी के वेश में) एवं श्री प्रतापभाई तनवाणी (भगत प्रेमप्रकाशी के वेश में) दोनों ने सभी प्रेमियों को खूब नचाया था और खुद भी नाचे थे एवं सत्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की जय जयकार मनाई थी। उन दोनों के भक्ति से अति प्रसन्न हुए स्वामी राजूरामजी महाराज ने आशीर्वाद दिया। बाद में संत मोहनलाल एवं संत दिलीपभाई, राजूराम जी महाराज ने सत्संग करके पल्लव पाकर जन्मोत्सव की समाप्ति की इस विशेष प्रोग्राम से पूर्व उसी दिन प्रातः काल 5.30 बजे प्रभात फेरी में स्वामी राजूराम जी महाराज प्रभात फेरी में इतने तो मगन हो गये थे कि वह स्वामी टेऊंराम महाराज की जय जयकार करके खुद भी सड़कों पर नाचने लगे। वृन्दावन बन गया था रामनगर का यह पावन क्षेत्र। सभी प्रेमी स्वामी राजूराम महाराज को नाचते देखकर खुद भी नाचने में मगन हो गये थे जिस दृश्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती कि उस विषय में क्या लिखें। वह दृश्य खंडू गांव के गलियों में स्वामी टेऊंराम महाराज की लीला जैसा था जैसा पढ़ा एवं सुना गया है।

कार्तिक महीने में अंतिम तीन दिन में अजमेर के संत शिरोमणी स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज ने भी पधारकर कार्तिक मास की शोभा बढ़ाई थी। स्वामी जी के उपस्थिति में गुरूनानक जयन्ती पर एक बेन्ड बाजों के साथ प्रभात फेरी निकाली गई और स्वामी जी को एक सुन्दर रथ में बिठाया गया। उस प्रभात फेरी ने सूरत के कार्तिक मेले को चार चांद लगा दिये। उस प्रभात फेरी में रथ में से नीचे उतरकर स्वामी जी ने सभी को नचाया था सड़कों पर एवं खुद भी गुरू महाराज जी मस्ती में झूमने लगे तत्पश्चात आश्रम पहुंचने पर सत्संगोपरान्त पल्लव पाकर कार्तिक मास की समाप्ति हुई एक महान मेला संपूर्ण हो गया।

–रमेश राजपाल प्रेम प्रकाशी सूरत

पूज्य सन्त दादा आयलदास जी ब्रह्मलीन

ग्वालियर। नगर के हृदय स्थल महाराज बाड़े पर स्थापित धर्मपुरी मन्दिर के महन्त पूज्य दादा आयलदास जी महाराज लगभग 86 वर्ष की अवस्था में 5 फरवरी 2002 को रात्रि 10 बजकर 10 मिनट पर अपनी वृति योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज के श्रीचरणों में स्थित रखते हुए गोलोक गमन कर गये। पूज्य दादाजी ने अपनी अमृतमयी वाणी से हजारों हजारों लोगों को भगवत्नाम का अमृत पिलाया। पूज्य दादाजी की अन्तिम महायात्रा 6 फरवरी को दोपहर निकाली गयीं, दोपहर बाद सांय 4 बजे दादाजी की अन्त्येष्टि मुक्तिधाम लक्ष्मीगंज में हजारों नगरवासियों की अश्रुपूरित विदाई के साथ की गयी। इस अवसर पर प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर के सन्त हरिओमप्रकाश जी भी उपस्थित थे।

पुस्तक चर्चा

स्वास्थ्य का ख़जाना
विशेष आकर्षक रूप में प्रकाशित

अहमदाबाद 26 जनवरी--पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज द्वारा लिखित पुस्तक 'स्वास्थ्य का ख़जाना' को पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने विशेष रूप से प्रकाशित करवा कर इसे समस्त जनता के लाभ के लिये प्रत्येक बुक स्टॉल पर उपलब्ध कराया है। इससे पूर्व यह पुस्तक सिंधी भाषा में थी, अब यह हिन्दी में भी उपलब्ध हो गई है। बहुरंगी रूप में प्रकाशित इस पुस्तक में जीवन के अच्छे स्वास्थ्य की समस्त जानकारी शास्त्र सम्मत रूप में उपलब्ध है। इस पुस्तक के अंदर सत्गुरु महाराज जी के नये रूप में बहुरंगी चित्र भी प्रकाशित किये गये हैं। इसका विमोचन पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज के 100 वें जन्मशती के शुभअवसर पर किया गया। पुस्तक का मूल्य मात्र 10 रू. है। इसे प्रेम प्रकाश आश्रम अजमेर, बड़ौदा, अहमदाबाद, सूरत आदि से प्राप्त किया जा सकता है।

श्री अमरापुर विजय पंचांग
२००२-२००३ छपकर तैयार

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री अमरापुर विजय पंचांग पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद जी द्वारा प्रकाशित कराया गया हैं। जिसमें सम्पूर्ण वर्ष की सिंधी, हिन्दी, अंग्रेजी तारीखों के आधार पर तीज़ त्यौहार आदि का ब्यौरा दिया गया है। यह पंचांग 10. रू. का है। जो समस्त आश्रमों पर उपलब्ध है।

मुख्य प्राप्ति स्थल : प्रेम प्रकाश आश्रम, दिल्लीगेट, अजमेर--305001

प्रेम प्रकाश संदेश सदस्यता शुल्क

भारतवर्ष में :-		विदेश के लिये :-	
एक वर्ष के लिये रूपये	50/-	एक वर्ष के लिये रूपये	350/-
तीन वर्ष के लिये रूपये	140/-	तीन वर्ष के लिये रूपये	1000/-
दस वर्ष के लिये रूपये	450/-		

प्रेम प्रकाश संदेश मंगाने के लिये आप अपना सदस्यता शुल्क श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित प्रमुख आश्रमों, प्रतिनिधियों के पास, जमा कर सकते हैं अथवा कार्यालय को मनीआर्डर द्वारा भेजकर सदस्यता प्राप्त कर सकते हैं।
मनीआर्डर भेजने का पताः--व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर--474001

पद स्मरण प्रतियोगिता

अब अन्तिम तिथि 15 अप्रैल 2002

(ब्रह्म--दर्शनी पुस्तक)

आचार्य गुरुवर सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित ब्रह्म--दर्शनी पुस्तक के 250 पद याद करके 15 अप्रैल 2002 तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर में सुनावें।

सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार "चैत्र मेले" में दिये जायेंगे। इन पदों को आप आस--पास के क्षेत्र एवं विद्यालयों में बच्चों को याद करवायें। याद करवाने वाले पुरुषार्थी भक्तजनों को भी "विशेष पुरस्कार" से सम्मानित किया जायेगा।

आप सभी इस प्रतियोगिता में भाग लेकर पुण्य के भागी बनें एवं दूसरों को भी पद याद करवाने के लिये प्रेरित करें। इस प्रतियोगिता की विस्तृत जानकारी हेतु आप जुलाई--अगस्त--सितम्बर 'प्रेम प्रकाश संदेश' के अंक देखें।

पुस्तक एवं कैसेट प्राप्ति स्थल--श्री अमरापुर स्थान एम.आई.रोड, जयपुर, 372423, 372424 इसके अलावा दिल्ली, हरिद्वार, अजमेर, बड़ौदा, उल्हासनगर, बम्बई, कोटा, इन्दौर, खैरथल, आगरा, ग्वालियर आदि सभी प्रेम प्रकाश आश्रमों पर उपलब्ध है।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

15 फरवरी	2002 तक	नागपुर से ट्रेन	☎	
16 फरवरी से 17 फरवरी	2002 तक	बड़ौदा	☎	0265-571479, 565094
19 फरवरी से 21 फरवरी	2002 तक	धुलिया	☎	02562-20480
22 फरवरी से 23 फरवरी	2002 तक	जलगांव	☎	0257-234616
24 फरवरी	2002 तक	रांवेर	☎	
25 फरवरी से 26 फरवरी	2002 तक	बुरहानपुर	☎	07325-53461, 54477
27 फरवरी	2002 तक	भुसावल	☎	02582-24197
28 फरवरी से 03 मार्च	2002 तक	नागपुर	☎	0712-522058, 527116
04 मार्च	2002 तक	यात्रा	☎	
05 मार्च से 09 मार्च	2002 तक	जयपुर, अजमेर	☎	
10 मार्च से 13 मार्च	2002 तक	ग्वालियर	☎	0751-426111
14 मार्च	2002 तक	दतिया	☎	
15 मार्च से 16 मार्च	2002 तक	डबरा	☎	07524-23245
17 मार्च से 19 मार्च	2002 तक	आगरा	☎	0562-211499
20 मार्च से 22 मार्च	2002 तक	मुरैना	☎	07532-20280
23 मार्च से 24 मार्च	2002 तक	अलीगढ़	☎	0571-407909
25 मार्च से 29 मार्च	2002 तक	हरिद्वार	☎	0133-460144, 460815
31 मार्च से 01 अप्रेल	2002 तक	खंडवा	☎	0733-28666
02 अप्रेल से 03 अप्रेल	2002 तक	जबलपुर	☎	0761-349793
04 अप्रेल से 05 अप्रेल	2002 तक	कटनी	☎	07622-52034
06 अप्रेल	2002 तक	महियर	☎	
07 अप्रेल	2002 तक	रीवा	☎	
08 अप्रेल	2002 तक	सीधी	☎	
09 अप्रेल	2002 तक	सतना	☎	
10 अप्रेल से 12 अप्रेल	2002 तक	भोपाल, बैरागढ़	☎	
14 अप्रेल से	2002	जयपुर	☎	0141-372424-372423

तीज-त्यौहार

17	फरवरी	2002	रविवार	बसन्त पंचमी, स्वामी चंदनराम जन्मोत्सव (पूना)
23	फरवरी	2002	शनिवार	जया एकादशी व्रत
27	फरवरी	2002	बुधवार	श्री सत्यनारायण व्रत
02	मार्च	2002	शनिवार	श्री गणेश चौथ व्रत
09	मार्च	2002	शनिवार	विजय एकादशी व्रत
12	मार्च	2002	मंगलवार	श्री महाशिवरात्रि, स्वामी गणेशानन्द जयन्ती (ग्वालियर में)
13	मार्च	2002	बुधवार	अमावस्या
15	मार्च	2002	शुक्रवार	चन्द्र दर्शन
21	मार्च	2002	गुरुवार	होलाष्टक शुरू
25	मार्च	2002	सोमवार	आमलकी एकादशी
28	मार्च	2002	गुरुवार	श्री सत्यनारायण व्रत, होलिकादहन

नमः टेऊँरामाय ॐ श्री सत्नाम साक्षी नमः सर्वानन्दाय

जयपुर में

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का

81 वाँ चैत्र मेला

26 अप्रैल से 30 अप्रैल 2002 तक

देखो प्रेमी आयके, अमरापुर स्थान ।
सन्त समागम पायके, अपना करो कल्यान ॥

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग ।
कह टेऊँ जिसके किए, होवे भव दुख भंग ॥

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित चैत्र मेला श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में सिन्धी तारीख 12 से 16 चैत्र सम्वत् 2059 तद्नुसार शुक्रवार दिनांक 26 अप्रैल से मंगलवार, 30 अप्रैल, 2002 तक भव्य हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। इस महाब्रह्मयज्ञ में प्रेम प्रकाश मण्डल के सब सन्त एवं सारे भारत वर्ष के सन्त महात्मा, विद्वान, कवि, भगत, सद्गुरु महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालेंगे। आप सबसे नम्र निवेदन है कि इस महोत्सव में सपरिवार आकर अपने मानव जीवन को कृतार्थ करें।

कार्यक्रम

गुरूवार, 25 अप्रेल 2002	स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज की 37वीं पुण्य तिथि
शुक्रवार, 26 अप्रेल 2002	प्रातः 6 से 8 बजे तक सत्संग, 8 से 10 बजे तक हवन एवं ध्वजावन्दन सायं 3 बजे शोभायात्रा, रात्रि 8 से 9 बजे तक सत्संग
शनिवार 27 अप्रेल से सोमवार 29 अप्रेल 2002	प्रातः 6 से 11 बजे तक सत्संग, सायं 3 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग
मंगलवार 30 अप्रेल 2002	प्रातः 4 बजे सत्संग शुरू होगा एवं प्रातः 7 बजे पल्लव पाकर उत्सव का समापन।

शोभा यात्रा का मार्ग

श्री अमरापुर स्थान से पोलोविक्ट्री, पुलिस लाईन चांदपोल बाजार, छोटी चौपड़, बड़ी चौपड़, जौहरी बाजार, सांगानेरी गेट, न्यू गेट, नेहरू बाजार, इन्दिरा बाजार, पांच बत्ती, एम.आई. रोड से पुनः अमरापुर स्थान पर समापन।

नोट :
1. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टार्च, गिलास जरूर लावें।
2. सोना गहना व कीमती सामान साथ न लावें।
3. कोई भी माता बहिन अपने पिता, भाई या पुरूष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें।

:: सेवा में ::
प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
अमरापुर स्थान, जयपुर--302001,
फोन : 0141–372423, 24 फैक्स : 362424

:: पता ::
सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान,
एम.आई. रोड, जयपुर – 302001

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161 (R.M.S. Posting date 15th) भा.शा.रजि.–29/18/81

विजय का त्याग

वह दिग्विजय का युग था। राजाओं के लिये तो दिग्विजय का युग समाप्त हो गया था, किन्तु विद्वानों के लिये दिग्विजय का युग था। संस्कृत के प्रतिभाशाली विद्वान् बड़ी से बड़ी जो कामना कर सकते थे वह दिग्विजय की कामना होती थी। यह दिग्विजय शस्त्रों से नहीं, पाण्डित्य से शास्त्रार्थ करके प्राप्त की जाती थी।

ब्रज में एक विद्वान दिग्विजय करते हुए पहुँचे। ब्रज के विद्वानों ने उनकी शास्त्रार्थ की चुनौती के उत्तर में कहा–'ब्रज में तो सनातन गोस्वामी और उनके भतीजे जीव गोस्वामी ही श्रेष्ठ विद्वान् हैं। वे आपको विजय पत्र लिख दें तो हम सभी उस पर हस्ताक्षर कर देंगे।

दिग्विजयी पहुँचे सनातन गोस्वामी के यहाँ। 'शास्त्रार्थ कीजिये या विजय–पत्र लिख दीजिये।' 'उनकी सर्वत्र जो माँग थी, वहीं माँग वहाँ भी थी।

हम तो विद्वानों के सेवक हैं। शास्त्रार्थ करना हम क्या जानें ? शास्त्र का मर्म कहाँ समझा है हमने।' श्री सनातन गोस्वामी की नम्रता उनके ही उपयुक्त थी। उन्होंने दिग्विजयी को विजय–पत्र लिख दिया।

दिग्विजयी आनन्द और गर्व से झूमते लौटे। मार्ग में ही जीव गोस्वामी मिल गये। दिग्विजयी ने कहा– 'आपके ताऊ सनातनजी ने विजयपत्र लिख दिया है। आप उसी पर हस्ताक्षर करेंगे या शास्त्रार्थ करेंगे ?

जीव गोस्वामी युवक थे और थे प्रकाण्ड पण्डित। नवीन रक्त, अपने श्रद्धेय श्री सनातन गोस्वामी के प्रति दिग्विजयी का तिरस्कार–भाव उनसे सहा नहीं गया। वे बोले–'मैं शास्त्रार्थ करने को प्रस्तुत हूँ।

बेचारा दिग्विजयी क्या शास्त्रार्थ करता ? वह विद्वान था, किंतु केवल विद्वान ही तो था। महामेधावी जीव गोस्वामी – और फिर जिस पर ब्रज के उस नवयुवराज का वरदहस्त हो, उसकी पराजय कैसी ?दो–चार प्रश्नोत्तर में ही दिग्विजयी निरूत्तर हो गया। विजय–पत्र उसने फाड़ फेंका। गर्व चूर हो गया। कितना दुखित होकर लौटा वह–कोई कल्पना कर सकता है ?

जीव गोस्वामी पहुँचे श्री सनातनजी के पास। दिग्विजयी की पराजय सुना दी उन्होंने। सुनकर सनातनजी के नेत्र कठोर हो गये। उन्होंने जीव गोस्वामी को झिड़कते हुए कहा–'जीव ! तुम तुरंत यहाँ से चले जाओ। मैं तुम्हारा मुख नहीं देखना चाहता। एक ब्राह्मण का अपमान किया तुमने। तुमसे भजन क्या होगा, जब कि तुममें इतना अहंकार है। किसी को विजयी स्वीकार कर लेने में बिगड़ता क्या है।''

सम्पादक शंकरलाल सबनानी, फोन : 327427
श्रीचंद पंजवानी, फोन : 454183, फैक्स : 481269

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजबानी द्वारा ओमनी कम्प्यूटर लाला का बाजार, फोन : 427502 से सज्जा करवाकर चन्देल ऑफसेट दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ, लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया।

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्य को करा लेना चाहिए।

★ व्यवस्थापक

श्रीमान,

...–7/2...

...द बूटानी

इ-... ...धुवन कॉलोनी,

अजमेर, राजस्थान